

श्री सद्गुरुवे नमः

# चिंता तो सतनाम की और न चितवे दास

एक पुरुष है सबसे न्यारा । सब घट व्यापक अगम अपारा ॥  
ताकी भक्ति महा निरतारा । भक्ति करे सो उतरे पारा ॥  
डांकिनी शाकिनी बहु किलकारें, जम किंकर धर्मदूत हंकारे ।  
सत्या नाम सुन भागें सारे, जब सतगुरु नाम उचारा है ।  
फिर के नाहीं जन्मे जग माहीं ।  
काल-अकाल ताहि दुख नाहीं ॥

— सद्गुरु मधु परमहंस जी

साहिब



बन्दगी

सन्त आश्रम रांजड़ी, पोस्ट राया, ज़िला साम्बा ( जे. एण्ड के . )

# चिंता तो सतनाम की और न चितवे दास — सतगुरु मधुपरमहंस जी

© SANT ASHRAM RANJRI (J & K)  
ALL RIGHTS RESERVED

First Edition	—	April, 2014
Copies	—	5000

## Website Address.

[www.sahibbandgi.org](http://www.sahibbandgi.org)

[www.sahib-bandgi.org](http://www.sahib-bandgi.org)

## E-Mail Address.

\*satgurusahib@sahibbandgi.org

प्रचार अधिकारी

— राम रतन, जम्मू

## Editor

Sahib Bandgi Sant Ashram Ranjri  
Post -Raya, Distt.-Samba (J & K)  
Ph. (01923) 242695, 242602

# विषय सूची

# पृष्ठ संख्या

1. कस्तूरी कुंडल बसे	5
2. जगत बना है मन से	15
3. चिंता तो सतनाम की और न चितवे दास	26
4. तन मन जब एकै रहे हंस कबीर कहाय	42
5. मैं हंस चेतावन आया	54
6. एक सखी के प्रेम में बह गये कोटि कबीर	77
7. जा घट नाम न संचरे	84
8. गुरु कुम्हार शिष्य कुंभ है	88
9. जीवन की कला	89
10. अमर लोक का भेद केवल साहिब ने दिया	91
11. एक सिस्टम फिट कर देता हूँ	95
12. उचित-अनुचित	111
13. साहिब शब्दावली	120



## दो शब्द

आपके पास शुद्ध आत्मज्ञान पहुँचाना चाहता हूँ। आज शुद्ध आत्मज्ञान की बात कहीं मिल नहीं रही है। जगह-जगह भटकाव हैं। बाहर में भी भटकाव है और अन्दर में भी। सच्चे आत्मज्ञान की बात नहीं मिल पा रही है।

इस संसार में सगुण-निर्गुण से संबंधित प्रचलित भक्तियाँ काल की हैं। उनमें पूर्ण आत्मज्ञान नहीं है। जब तक पूर्ण आत्मज्ञान नहीं हो जाता तब तक जीव सदा के लिए भवसागर से नहीं छूट सकता है। इस जीव को सत्य-भक्ति की राह दिखाने वाला भी कोई नहीं मिलता। अमर-लोक का संदेश देने वाला भी कोई नहीं मिलता।

**वा घर की सुधि कोई न बतावे, जहँवा से हंसा आया है ॥**

यदि मिलता भी है तो वो खुद वहाँ नहीं पहुँचा होता है, केवल साहिब की वाणियों की नक़ल होती है। इसी कारण जीव फिर आ-जाकर निरंजन में ही उलझा दिया जाता है। इस तरह सत्य-भक्ति से रहित जीव आत्मज्ञान से बहुत दूर हो गया है। जब तक जीव अमर-लोक में नहीं पहुँच जाता, जब तक जीव सच्चे साहिब को नहीं पा लेता, तब तक सदा के लिए मुक्त नहीं हो सकता है। अमर-लोक में पहुँचकर ही पूर्ण आत्मज्ञान होता है और उस लोक में पहुँचने के लिए सच्चे सद्गुरु के सच्चे नाम की ज़रूरत है। लेकिन दुनिया इस रहस्य को नहीं समझ पाती है और बाहर भटक जाती है। वो प्रभु तो अन्दर में बैठा हुआ है, पर दुनिया उसे बाहर खोज रही है, क्योंकि उलझा दिया गया है। मनुष्य भटक रहा है, उसे पाने के लिए कमाई, योग, जप, तप, ध्यान आदि कर रहा है, पर इन चीज़ों से वो नहीं मिलने वाला। वो प्रभु तो सहज में ही मिलने वाला है। वो तो अन्दर में ही बैठा है। ज़रूरत है तो केवल सद्गुरु के द्वारा उसे प्रकट कर देने की। अन्यथा वो प्रभु आपसे कहीं दूर नहीं है।

**पानी में मीन पियासी। मोहि सुनि सुनि आवत हाँसी ॥**

**घर में पड़ी वस्तु नहिं सूझो, बाहर खोजन जासी ॥**

**मृग की नाभि माहिं कस्तूरी, बन बन फिरत उदासी ॥**

**आत्म ज्ञान बिना सब सूना, का मथुरा का कासी ॥**

**कहत कबीर सुनो भाई साधो, सहज मिले अविनासी ॥**



# कस्तूरी कुंडल बसे

---

जबसे दुनिया बनी है, तीन चीजों पर जमकर विवाद रहा है। परमात्मा के स्वरूप के बारे में, उसके ठिकाने के बारे में और उस तक जाने के रास्ते के बारे में। तीनों लड़ाइयाँ फिज़ूल हैं। मनुष्य अपने हितों के लिए और अधिक परमात्माओं का सृजन कर देगा। यह मनुष्य की अपनी रचना है।

भाई रे दो जगदीश कहाँ से आए॥

साहिब की विचारधारा साकार निराकार से परे है।

कोई सगुण में रीझ रहा, कोई निर्गुण ठहराय।  
अटपट चाल कबीर की, मौसे कही न जाय॥

साहिब कह रहे हैं—

साकार कहूँ तो माया माहिं, निराकार कहूँ आया नाहिं।  
है जैसा तैसा रहे, कहें कबीर विचार॥

जितने भी पदार्थ दृश्यमान हैं, नाशवान हैं। हम उनको नित्य नहीं कह सकते। परमात्मा का जैसा वर्णन वाणियों में है, बड़ा दिव्य है। हम पंच भौतिक तत्वों को देखते हैं। इनका सम्मान करते हैं, पर ये समाप्त हो जायेंगे। इनसे परमात्मा भिन्न है। जैसा शास्त्रों में वर्णन आ रहा है, ये उनसे मेल नहीं खा रहे हैं। दूसरा, परमात्मा के रहने के ठिकाने पर मतभेद है। शास्त्र कह रहे हैं कि वो पास में है।

तू मौको कहाँ ढूँढ़े रे बंदे, मैं तो तेरे पास में॥

परमात्मा का वास आत्मा के अन्दर है। यही बात वासुदेव ने कही। साहिब ने सहज भाषा में कही।

कस्तूरी कुंडल बसे, मृग खोजे बन माहिं।  
ऐसे घट घट साईया, मूर्ख जानत नाहिं॥

कई परमात्मा को अन्दर बोल रहे हैं। यह बोलने की शैलियाँ भी विविध बन गयीं। ये अपने-अपने वर्चस्व को स्थापित करने के लिए बनीं। अमीर घरानों में कई भाग हो जाते हैं। ऐसे कई धाराएँ निकल जाती हैं। जितने भी आन्तरिक जगत में बात करने वाले हैं, विविध हैं। इसके पीछे कारण है। हरेक यही भरोसा दिला रहा है कि हम सच्चे हैं। फिर कहा जा रहा है कि एक ही बात है। अपने अन्दर में परमात्मा को ढूँढ़ने का तरीका क्या है? मूल रूप से पाँच तरीके से अन्दर में ढूँढ़ते हैं। हम नकार नहीं रहे हैं। कम-से-कम कुछ तो कर रहा है। हम सगुण भक्ति के अस्तित्व को नकार नहीं रहे हैं। पर उसकी एक सीमा है। इसी तरह निर्गुण वाले पंच मुद्राओं के दायरे में हैं। जो भूचरी से ध्यान कर रहा है, वो कह रहा है कि यही मुद्रा अच्छी है। जो अगोचरी मुद्रा कर रहा है, वो उसी को सर्वोत्तम बोल रहा है। कुछ पाँचों कर रहे हैं। आन्तरिक जगत की खोज भी बड़ी है। जब आगे पूछो तो वाणी अटक जाती है। पंच मुद्राओं के लिए साहिब ने कहा और उसे सीमित बोलकर आगे के लिए कह रहे हैं। लोग साहिब की वाणी लेकर चल रहे हैं। अपने हितों के लिए वाणी ले रहे हैं। जैसे एक भिखारी भीख माँग रहा था तो कह रहा था—  
दान दिये धन न घटे, कह गये दास कबीर॥

मैंने चुपके से कहा कि तुमने यह नहीं सुना क्या!

माँगन मरन समान है, मत माँगो कोई भीख।  
माँगन ते मरना भला, सतगुरु देते सीख॥

वो भिखारी यह दोहा नहीं बोल रहा है। इस तरह जो योग कर रहे हैं, वो भी साहिब की वाणी लेकर बोल रहे हैं। कुछ कह रहे हैं कि धुनें ही परमात्मा हैं और वही वाणी ले रहे हैं।

रस गगन गुफा में अजर झरे ॥  
बिन बाझा झंकार उठे तहाँ, समझ परे जब ध्यान धरे ॥

मैं कहता हूँ कि तुम उनकी वाणी को लेकर धुनों को स्थापित कर रहे हो। तुमने यह वाणी नहीं सुनी क्या!

जाप मरे अजपा मरे, अनहद भी मर जाय।  
सुरति समानी शब्द में, वाको काल न खाय ॥

यानि उन्हीं शब्दों को लिया जा रहा है, जिनसे उनका काम चल सके। उनका दोष नहीं है। उन्हें वहीं तक का पता है। सब जगह तो मिलावट है। अध्यात्म में भी आ गयी है। पंच मुद्राओं में क्या है? हम यह नहीं कह रहे हैं कि ग़लत हैं। आज लड़ाई यह नहीं है कि परमात्मा है या नहीं है। हम परमात्मा को अलग-अलग तरीके से मान रहे हैं। उस तक जाने के रास्ते के बारे में मतभेद है। वो है या नहीं, यह विवाद खत्म हो चुका है। सबने परमात्मा के अस्तित्व को स्वीकार कर लिया है। वो है या नहीं, इस पर बहुत कम लोग लड़ रहे हैं। एक पॉवर है, जो सारे विश्व का संचालन कर रहा है, यह सब मानते हैं। अपने-अपने वर्चस्व को स्थापित करने के लिए मतभेद स्थापित किया गया। नया इंसान ऐसी चीज़ों के जाल में फँस जाता है। वो सोचता है कि अन्दर में परमात्मा बोल रहे हैं। हमें चिंतन करना होगा कि कहीं धोखा तो नहीं है।

इस विविधता में झगड़ा भी है। सब आपस में लड़ भी रहे हैं। क्योंकि प्रतिस्पर्धा आ गयी। भूचरी वाले कह रहे हैं कि यही सच्चा रास्ता है।  
नाना पंथ जगत में, निज निज गुण गावें ॥

हरेक यही बताता है कि हम ही सही हैं। अब आम आदमी का स्वभाव ऐसा है कि उसने जैसा सुना, वही करता है। जिसने घर में संगलें रखे हैं, वो उन्हीं को पूज रहा है। जो सयाने ने कहा, वही कर रहा है। भूत-प्रेत की पूजा में लगा है। बुजुर्ग माताएँ श्रद्धालु हैं। वो स्कूल नहीं पढ़ीं। वो झांसे में आ जाती हैं। अपने बच्चों को भी यही तालीम दी है।

हिटलर एक कॉफ्रेंस कर रहे थे। वहाँ अचानक बिल्ली आ गयी और वो झंप गये। किसी ने पूछा कि आप शेर से भी नहीं डरने वाले, बिल्ली देखकर क्यों डर गये? हिटलर ने कहा कि मेरी माँ ने मुझे बचपन में बिल्ली का भय दिया था। जब हम शरारत करते थे तो माँ कहती थी कि चुप हो जाओ, नहीं तो बिल्ली आकर खा जाएगी। वो ही डर अभी तक बना हुआ है।

बचपन में सेट की हुई चीज़ें नहीं निकलती हैं। जादू-टोना आदि तामस भक्ति है। काले इल्म से आम आदमी नहीं निकल पा रहा है। हमारे दादे परदादे भोले थे। उनके ज़हन में यह सब समाया था। आपको भी यही समझाया है। अभी जो बच्चे हैं, वो पढ़े लिखे हैं। वो समझ रहे हैं। लेकिन धीरे-धीरे नास्तिकवाद भी बढ़ रहा है। किसी भी चीज़ के अच्छे पहलू भी होते हैं और बुरे भी। तो सभी स्वपक्ष का मंडन करके परपक्ष का खंडन कर रहे हैं। अपने हितों वाले दोहे बोल रहे हैं, बाकी नहीं। दोहों को चुना जा रहा है। सगुण वाले भी साहिब की वाणी ले रहे हैं और निर्गुण वाले भी। तोड़-मरोड़कर काम चलाया जा रहा है। अब उनका भी दोष नहीं है। उनकी भी मजबूरी है, क्योंकि ज्ञानी भले ही हैं, पर पूर्ण ज्ञान नहीं है। अब कुछ तो बताना ही है न। पर समस्या यह है कि सिद्ध किया जा रहा है कि कबीर साहिब भी यही कह रहे हैं। ऐसा नहीं करना चाहिए। इससे इंसान सत्य से दूर हो जाएगा और भ्रमित रहेगा। आदमी सोचता है कि हमने भी पढ़ा है कबीर को।

**बुरा जो खोजन मैं चला, बुरा न मिलया कोय।  
जो दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय॥**

वो सोचता है कि वही कबीर न, जिसकी एक बीबी थी, एक बेटा था, एक बेटी थी। हम जानते हैं। उसने कबीर साहिब को अनपढ़ बनाया हुआ है, उसने साहिब को सीमित करके रखा हुआ है। सच्चाई कुछ अलग है। वो वास्तव में कुछ नहीं जानता है साहिब के बारे में। उसे बचपन से ही यही सिखाया गया है।



तो अन्दर में परमात्मा को ढूँढ़ने में भी असमंजस है। वो भी साहिब की वाणी ले रहे हैं। जो उनके हितों के खिलाफ है, उनको साइड कर देते हैं। समस्या यह हुई कि आम आदमी समझ नहीं पाया कि साहिब ने क्या कहा। साहिब पंच मुद्राओं के बारे में कह रहे हैं कि कहाँ पर हैं।  
**प्रथम पूरण पुरुष पुरातन, पाँच शब्द उच्चार।**  
**सोहं सत् ज्योति निरंजन, ररंकार ओंकारा॥**

नैनों के बीच निरंजन है, ओंकार भृकुटी में है। भँवर गुफा में सोहं है। ररंकार दसवें द्वार में है। पाँच शब्द काया के अन्दर हैं। पाँच तत्व की काया है। वहीं से संचालित हो रहे हैं। गुदा स्थान पर पृथ्वी तत्व है, शिशन पर जल तत्व, मुख में अग्नि तत्व, नाभि में वायु तत्व, सुषुम्ना में आकाश तत्व है। पाँच शब्द काया में हैं।

**शब्दै सर्गुण शब्दै निर्गुण, शब्दै वेद बखाना।**  
**शब्दै पुनि काया के भीतर, कर बैठा अस्थाना॥**  
**जो जाकी उपासना कीना, उसका कहूँ ठिकाना॥**

पहला 'ज्योति निरंजन' शब्द का जाप करने वाले चाचरी मुद्रा से ध्यान करते हैं। योगी चक्र शोधन करता है। शरीर में 7 चक्र हैं। योगी 6 चक्रों का बेधन करता है। योगी 2 दिन भूखा रहता है। अन्दर में अन्न का दाना होगा तो शरीर के सभी अंग क्रियाशील रहेंगे। उन्हें रोकता है। फिर टब में पानी डालकर बैठता है और मलद्वार से पानी खींचकर निकालता है। वो चक्र शुद्ध करता है। फिर शिशन द्वार से दूध खींचकर छोड़ता है, पतला धागा लेकर डालता है, सारा पेशाब साफ करता है। 7-8 अंगुल चौड़ी धोती निगलकर बाहर निकालता है ताकि सारा दाना निकल जाए। 3 बार यह क्रिया करता है। इसे धोती क्रिया कहते हैं। फिर सवा हाथ लंबी दातुन लेकर हृदय चक्र को साफ करता है। इड़ा या पिंगला एक समय चलती हैं। जो चल रही हो, उसमें से पानी खींचकर ऊपर चढ़ाता है। फिर निकालता है। वहाँ कफ जमी हुई है। उसे साफ करता है। फिर

तालु में जिह्वा फँसाता है ताकि लार को निगलने के लिए बार-बार क्रिया न करनी पड़े और ध्यान भंग न हो। ये 6 चक्र शोधन किये। अब यह काम बाल बच्चों वाला नहीं कर पाएगा, गृहस्थ आश्रम वाला नहीं कर पाएगा। फिर क्या करता है! कुंभक, रेचक क्रियाएँ करता है। दसों वायुओं को उठाता है। यह है-चाचरी मुद्रा। नाना पंथ चाचरी मुद्रा को बोल रहे हैं। यह तो कोई योगी ही कर सकता है। गृहस्थ कैसे करेगा! दूसरी है-भूचरी मुद्रा। इसमें भी पहले वही क्रिया होगी, पर ध्यान एकाग्र करने का केंद्र अलग है और शब्द अलग है। नाना लोक-लोकान्तर इस तरह ध्यान लगाने वाला योगी अपने अन्दर देख लेता है। इसमें उसे महाकारण शरीर मिलता है। तीसरी है-अगोचरी मुद्रा।

**सोहं शब्द अगोचरी मुद्रा, भँवर गुफा अस्थाना।  
शुकदेव ताको पहिचाना, सुन अनहद की ताना।।**

शुकदेव जी बंकनाल में चले जाते थे। वहाँ धुनें हैं। वहीं ध्यान रखते थे। अगोचरी मुद्रा मीन मार्ग कहलाता है। मीन मछली को कहते हैं। जैसे मछली पानी की धारा पर चलती है, मीन वाले शब्द पर चलते हैं।

इस तरह पाँचों मुद्राओं में अलग-अलग जगह ध्यान एकाग्र किया जाता है। राजा जनक सहस्रसार में ध्यान एकाग्र करते थे। वो रंकार शब्द का जाप करते हुए खेचरी मुद्रा करते थे। खेचरी मुद्रा पंच मुद्राओं में सर्वोपरि है। पर साहिब कह रहे हैं-

**सिद्ध साध त्रिदेवादि ले, पाँच शब्द में अटके।  
मुद्रा साध रहे घट भीतर, फिर औंधे मुँह लटके।।**

साहिब कह रहे हैं कि यहाँ भी छूट नहीं पाओगे। कुछ बोल रहे हैं कि इन्हीं से छूट जायेंगे। उनका भी कसूर नहीं है। उन्हें जितना पता है, बोल रहे हैं। पर नहीं, समझने का प्रयास करें कि ऐसा नहीं होगा। कोई चाचरी मुद्रा से चलता है, कोई अगोचरी मुद्रा से चलता है। पर किसी को भी पता नहीं है। बस, पार हो जायेंगे। कमाई करते चलें। साहिब कह रहे हैं-

सिद्ध साध त्रिदेवादि ले, पाँच शब्द में अटके ।  
मुद्रा साध रहे घट भीतर, फिर औंधे मुँह लटके ॥

छुट्टी नहीं होगी । माँ के पेट में आओगे । इतनी क्रियाएँ करने के बाद फिर आयेंगे । ब्रह्म में भी समा गये तो प्रलय, महाप्रलय के बाद जन्म लेना पड़ेगा । छुट्टी नहीं हुई ।

परम पुरुष दर अगमतार है, अगमतार के आगे ।  
उसके आगे कौन बखाने, सभी शब्द में पागे ॥

बहुत जोरदार बात बोलकर जा रहे हैं । योगेश्वर इतना योग करने के बाद इस मन से छुटकारा नहीं पा सके । प्रमाण मिलते हैं । मन की पूरी सेना ने सबको अपने पथ से विचलित कर दिया ।

पाँच शब्द औ पाँचो मुद्रा, वह निश्चय कर माना ।  
उसके आगे पुरुष पुरातन, उसकी खबर न जाना ॥

वो नहीं जान सके । ये बीच में ही अटक गये । उसके आगे कोई नहीं जानता है । सभी इसमें उलझ गये ।

उसके आगे भेद हमारा, जानेगा कोई जाननहारा ।  
कहैं कबीर जानेगा वोही, जापर कृपा सतगुरु की होई ॥

यहाँ सतगुरु आ गया । भाई, जो इंजीनियरिंग कर रहा है, उसे इंजीनियर कहते हैं । जो अध्यापक है, उसे अध्यापक कहते हैं, जो प्रोफेसर है, उसे प्रोफेसर कहते हैं । पढ़ा वो भी रहा है । इस तरह सद्गुरु शब्द आया, गुरु नहीं । साहिब ने सद्गुरु को स्थापित किया ।

परम पुरुष को जानसी, तिसका सतगुरु नाम ॥

वो उसमें समाहित है । हम सुरति शब्द अभ्यास नहीं बोल रहे हैं, इसमें नहीं उलझ रहे हैं । क्योंकि—

जाप मरे अजपा मरे, अनहद भी मर जाय ।  
सुरति समानी शब्द में, वाको काल न खाय ॥

हम नहीं उलझा रहे हैं । कह रहे हैं—

सुरति का खेल सारा है , सुरति में रच्यो संसारा है ॥

हम कह रहे हैं कि जो कुछ है, वो सुरति है। इस सुरति पर कोई बोल नहीं रहा। इसमें बड़ी ताकत है। हम केवल सुरति योग बोल रहे हैं। सुरति संभाले काज है, तू मत भरम भुलाय। मन सय्याद मनसा लहर में, बहत कतहूँ न जाय ॥

हम नहीं कह रहे हैं कि धुनों में ध्यान एकाग्र करो। सुरति कहाँ रखें? गुरु के ध्यान में। जिसका भी हम ध्यान करते हैं, उसी का रूप हो जाते हैं। जो कुछ भी है, वो सुरति ही है। सुरति कहते हैं—ध्यान को। मूल ध्यान में मन का समावेशन है। जब ध्यान से मन निकल जाए तो वो सुरति है। सब काम ध्यान से हो रहे हैं। हम सुन, देख, समझ सब ध्यान से ही रहे हैं। उनमुनि मुद्रा में जाकर सुरति को फ्री नहीं कर पायेंगे। उलझी रहेगी। आत्मा सब अंगों को संचालित कर रही है। कहीं वजूद है न! इतना बुद्धिजीवी जीव नहीं समझ पाया कि किस तरह से संचालित कर रही है। गाड़ी चल रही है तो एक एनर्जी है। ध्यान शरीर को चलाने की एनर्जी है।

जो कुछ है सो सुरति है, कहीं कबीर विचार ॥

अगर ध्यान कहीं चला जाए तो सच में सुन नहीं पायेंगे। कान खुले रहेंगे, पर आपको पता नहीं चल पायेगा कि क्या कहा। दरअसल ध्यान में कान भी हैं, पैर भी हैं। सब अद्भुत हैं। वासुदेव ने कहा कि आत्मा की ऐसी स्थूल आँखें नहीं हैं, पर फिर भी सभी दिशाओं से देख सकती है। ऐसे पैर नहीं हैं, पर फिर भी सभी दिशाओं से चल सकती है। जहाँ आपका ध्यान जा रहा है, आप वहीं हो। रामायण भी कह रही है—बिनु पद चले सुने बिनु काना। कर बिनु कर्म करे विधि नाना ॥ तन बिनु परस नैन बिन देखे। गहे घ्राण सब शेख विशेखे ॥ आनन रहति सकल रस भोगी। बिन वाणी वक्ता बढ़ योगी ॥ ऐसे सबै अलौकिक करनी। महिमा जाय कवन विधि वरणी ॥

अर्थात् सुरति से आन्तरिक संसार देख सकते हैं। सीधी बात यह आई कि हमारी सुरति में आन्तरिक संसार देखने की ताकत है। सभी ध्यान एकाग्र करने को बोल रहे हैं। आपके ध्यान में बहुत ताकत है। सभी ध्यान बोल रहे हैं, पर कोई जानता नहीं है। ध्यान में परमात्मा को अनुभव करने की शक्ति है, उस तक बढ़ने की ताकत है। कहाँ है यह आत्मा? आत्मा का बल नहीं दिख रहा है। उलझी है आत्मा।

**श्रुति पुराण कहैं समुझाई। सुलझे न अधिक अधिक अरुझाई॥**

कहाँ है ध्यान? एक बात सिद्ध हो गयी कि बहुत बड़ी ताकत है। सुरति बड़ी ताकत है। साहिब कह रहे हैं—

**सुरति फँसी संसार में, ताते पड़ गयो धूल।**

**सुरति बाँध अस्थिर करो, आठों पहर हुजूर॥**

निरंजन ने पकड़ रखा है। कितना भी जोर लगा लो, छूट नहीं सकते हो।

**कितने तपसी तप कर डारे, काया डारी गारा।**

**गृह छोड़ भये सन्यासी, तऊ न पावत पारा॥**

मन कितना विशाल है, बताता हूँ। जो सोच रहे हैं, मन है, जो याद है, मन है, जो क्रिया कर रहे हो, मन है।

**मन लेवे मन देवे, मन जागे मन सोवे।**

**मन का है यह सकल पसारा॥**

दुनिया ही मन है।

**तीन लोक में मनहिं विराजी। ताहि न चीह्नत पंडित काजी॥**

साहिब ने मन पर बोला और मैं बोल रहा हूँ। और कोई बोला नहीं। बाकी नकल कर रहे हैं। मुझे देखकर अब सब बोलने लगे हैं।

मन की वृत्तियाँ हैं—काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार। मन इसी में घूम रहा है।

**संतो तन खोजे मन पाया॥**

साहिब कह रहे हैं—

**तन ही मन है॥**

मन ही स्वरूपी देव निरंजन, तोहि राख भरमाई।  
हे हंसा तू अमर लोक का, पड़ा काल बस आई॥

मन के कहने पर पूरी दुनिया चल रही है।

इक दुई होवे उन्हें समझाऊँ, सबहि भुलाना पेट के धंधा॥

सबको उलझाया हुआ है।

गण गंधर्व ऋषि मुनि अरु देवा। सब मिलि लाग निरंजन सेवा॥

बड़े-बड़े तपस्वियों ने घोर तप किया, पर निकल नहीं पाए।  
जीव के हृदय में अंधकार है। कहाँ से आया? जो यह कह रहे हैं कि फलाना हूँ, मन है। इसी की बीबी है, बच्चे हैं। इससे बाहर निकलना कितना मुश्किल है! इसे भूलना है। जिस दिन गुरु नाम देता है, बदल देता है। हंस की चोंच में सिस्टम है। वो दूध और पानी को अलग कर देता है। दूध उठा लेता है और पानी छोड़ देता है। गुरु मन और आत्मा को अलग कर देता है। बड़े-बड़े तपस्वी इससे बचने के लिए जंगल गये, पर मन ने वहाँ भी पटक दी मारी। अपनी ताकत से इससे नहीं बच सकते हैं। ये प्रबल शत्रु हैं। गुरु के नाम की ताकत आएगी, तभी बच पाओगे, अन्यथा नहीं। आपके लिए माहौल तैयार कर दिया है, बस सुरति दुनिया में न घुमाना। मन चाहे तो भी आपका कुछ बिगाड़ नहीं सकता है। एक आदमी ने मुझसे कहा कि शुगर की बीमारी है। मैंने कहा कि दवा देता हूँ। उसने कहा कि नहीं, शुगर ने अब मेरा क्या बिगाड़ना है! जितना बिगाड़ना था, बिगाड़ लिया। यानि वो निश्चित था। मैं कहना चाहता हूँ कि मन आपका बिगाड़ेगा क्या! अब वो पिंजरे वाले शेर की तरह है, दहाड़ सकता है, पर मार नहीं पायेगा। सद्गुरु मन पर नकेल डाल देता है। जहाँ चाहो, ले जाओ।

नाम होय तो माथ नमावे। ना तो यह मन बाँध नचावे॥



# जगत बना है मन से

---

कभी कभी आदमी एक बात जानने का बड़ा प्रयास करता है कि 'मैं' कौन हूँ। जब हम विचार करते हैं कि 'मैं' कौन हूँ, उस हालत में हम अपने में क्या पाते हैं, अपने को कैसा महसूस करते हैं कि हम क्या हैं! क्या इसका कोई इशारा हमें अपने अन्दर मिल रहा है? यह बड़ा जटिल सवाल है। आदमी अपनी खुदी को नहीं जान पा रहा है। अपने आप को समझने में सक्षम नहीं है। हमें अपने वजूद तक पहुँचने में किन चीज़ों की रुकावटें हैं? आखिर हम अपने आप को क्यों नहीं समझ पा रहे हैं? आत्म ज्ञान या परमात्म तत्व को जानने में कौन सी चीज़ें बाधक हैं? ऐसे तो हम कह रहे हैं कि मन और माया की रुकावट के कारण हम अपने आपको नहीं जान पा रहे। क्या हम सब मन और माया की रुकावट को भी ठीक से समझ सकते हैं क्या? ऐसी कौन सी चीज़ें हैं, जो हमें स्वरूप ज्ञान में बाधा डाल रही हैं? किस कारण से हमें ये सब चीज़ें सच्ची लग रही हैं? क्या सच में सपना है? योगावशिष्ट महारामायण में संवाद है। जब राम जी ने कहा—हे गुरुवर! यह संसार अत्यंत पीड़ादायक और दुखों का सागर है तो वशिष्ट जी ने कहा—हे राम! तुम किस संसार की बात कर रहे हो! संसार हुआ ही नहीं है। यह न पहले था, न आखिरी में होगा। जो पहले भी नहीं था, आगे भी नहीं होगा, उसका वर्तमान भी भ्रमित है। राम जी ने कहा—हे गुरुवर! ये माता, ये पिता, ये बंधु, ये सखा, ये सूर्य, ये चाँद, ये आप, मैं आदि जो भास कर रहे हैं यह क्या है? बोला—

हे राम! यह केवल तुम्हारे चित्त की कल्पना है। यह तुम्हारे चित्त की स्फुरना है। इसलिए तुम चित्त का निरोध करो। जैसे तुम चित्त का निरोध करोगे तो संसार का अस्तित्व भी मिट जाएगा। इसलिए ये केवल तुम्हारे चित्त की कल्पना है। हमें इन सब चीजों को यथार्थ रूप में देखना होगा कि संसार वास्तव में मिथ्या है या केवल मान लें। अगर संसार मिथ्या है तो प्रमाण क्या है? अगर वैज्ञानिक तथ्यों से देखते हैं तो सभी चीजों का हल सामने आता है। आप देखते होंगे, मैं प्रमाणित बातें कर रहा हूँ, अप्रमाणित नहीं। किसी भी बात के लिए आपको विवश नहीं कर रहा हूँ कि आप मानें। साहिब ने हरेक दोहे के बाद एक शब्द कहा—

**कहत कबीर सुनो भाई साधो ॥**

आखिर यह क्या है 'कहत कबीर सुनो भाई साधो'? लोगों ने सोचा कि कबीर साहिब कह रहे हैं—ओ साधुओ, ओ महात्माओ! सुनो। नहीं, ऐसा नहीं है। वो कह रहे हैं—'कहत कबीर' यानि साहिब कह रहे हैं कि मैं कह रहा हूँ। 'सुनो' यानि मेरी बात को सुनो। 'साधो' यानि मेरी बात पर चिंतन करो। यह 'कहत कबीर सुनो भाई साधो' एक बात को इंगित कर रहा है कि वो कह रहे हैं कि मैं जो कह रहा हूँ, तुम सुनो और सुनकर उस पर चिंतन करो। तो आइए, हम देखते हैं कि क्या यह जगत सच में स्वप्न है। साहिब ने भी इसे स्वप्नवत् कहा, मिथ्या कहा।

**जगत है रैन का सपना। समझ न कोई यहाँ अपना ॥**

गुरु नानक देव जी भी कह रहे हैं—

**यों सपना पेखना, जग रचना तिम जान।  
इसमें कछु सांचो नहीं, नानक सांची मान ॥**

हम बाकी महापुरुषों का और धर्मशास्त्रों का चिंतन करते हैं तो पता चलता है कि जगत स्वप्नमय है। आखिर हम संसार को स्वप्नवत् किस आधार पर कह रहे हैं? क्या यह सच में है? हम केवल सुन रहे हैं।



पर हमारी मान्यताएँ जगत के प्रति कुछ अलग हैं। हम संसार में कुछ भी स्वप्नवत् नहीं मान रहे हैं। हम सब संसार की सभी चीजों को नित्य मान रहे हैं। आइए देखें, कैसे स्वप्नवत् है। सबसे पहले देखते हैं कि इस संसार का आभास हम कैसे कर रहे हैं! यह जगत हमें कैसे लग रहा है! इसकी अनुभूति हमें कैसे हो रही है! इसका सूत्र क्या है! भाई, हम खुशबू का आभास करते हैं तो उसका माध्यम है—नाक। हम शब्दों का आभास करते हैं तो उसका माध्यम हैं—हमारे कान। हम स्वाद का आभास करते हैं तो उसका माध्यम है—जीभ। आइए, हम देखते हैं कि जगत की अनुभूति हमें कैसे हो रही है। हम सब जानते हैं कि यह मेरा पिता है, यह मेरा भाई है, यह मेरा घर है, मैं यहाँ का रहने वाला हूँ। मोटे तौर पर हमारा परिचय तो यही है न! हमारा इतना ही तो परिचय है न! आइए देखें। भाइयो, यह हमारी कर्मज्ञानेन्द्रियों का खेल है। इसका आभास हमारी कर्मज्ञान इंद्रियों द्वारा हो रहा है। हमारी कर्म ज्ञान इंद्रियाँ हमें इसकी अनुभूति दे रही हैं। हमने अपनी माता को देखा। आइए देखें, कैसे। इस जगत की अनुभूति हमें कर्म ज्ञान इंद्रियों और सूक्ष्म इंद्रियों द्वारा हो रही है। यह क्या चीज़ है? हम इन्हीं के माध्यम से ही तो जगत का अस्तित्व अनुभव कर रहे हैं। हमने अपनी माता को देखा तो कह रहे हैं कि यह हमारी माता है। यह कौन कह रहा है कि हमारी माता है? यह हमारी माता है, इस अनुभूति के पीछे, इस मान्यता के पीछे क्या कारण है? हमारी आँखों ने देखा। ये ज्ञानेन्द्रियाँ हैं। इन्होंने एक तस्वीर हमारे चित्त के पास पहुँचाई। चित्त ने माइक्रो सेकेंड में कहा कि यह मम्मी है। देखो, इसमें चित्त का समावेशन था। इसमें हमारी ज्ञान इंद्रि का समावेशन था। इसका मतलब है कि जगत की अनुभूति हम कर्मज्ञान इंद्रियों द्वारा और सूक्ष्म इंद्रियों द्वारा कर रहे हैं। हमारी आत्मा का कोई भी रिश्ता नहीं है। हम यह प्रत्यक्ष भी देख सकते हैं कि ये रिश्ते—नाते कर्मज्ञान इंद्रियों तक हैं। इसके आगे ऐसी अनुभूति नहीं है। हमारी कर्मज्ञान इंद्रियाँ यह अनुभूति कर रही हैं। भाइयो, क्या हैं

ये कर्म इंद्रियाँ? क्या हैं ये ज्ञान इंद्रियाँ? क्या हैं सूक्ष्म इंद्रियाँ? क्या है हमारा जिस्म? जितनी भी अनुभूतियाँ हम भौतिक जगत की कर रहे हैं, इसके पीछे हमारी 14 इंद्रियों— 5 कर्म इंद्रियाँ, 5 ज्ञान इंद्रियाँ और 4 हमारे अन्तःकरण की सूक्ष्म इंद्रियों का समावेशन है। हम जितने भी जगत के पदार्थों का बोध प्राप्त करते हैं, उसमें यह है। क्या हैं हमारी आँखें? ये केवल मिथ्या देख सकती हैं। यह केवल भौतिक हैं। आज चिकित्सा विज्ञान आँखों पर काफी रिसर्च कर रहा है। यह कोशिकाओं का एक समावेशन है। इनके द्वारा एक तस्वीर सीधे हमारे ब्रेन तक पहुँचती है। और हमारी कोशिकाओं में 2 खरब बातों को फीड करने की ताकत है। आप अपने कम्प्यूटर और मोबाइल में देखते हैं कि बड़ी मीमोरी है। उदाहरण के लिए अगर आपके मोबाइल में 200 मीमोरीस हैं या 500 मीमोरीस हैं तो उसके बाद कोई चीज़ फीड करना चाहते हैं तो स्क्रीन पर फौरन आ जाता है—नो स्पेस। लेकिन इंसान की चित्त की कोशिकाओं में 2 खरब बातों को याद रखने की ताकत है। हमारे चित्त की कोशिकाएँ बहुत लंबी चीज़ों को अनुभव करती हैं। इसका मतलब है कि दुनिया के जितने भी रिश्ते—नाते हैं, उनका संबंध हमारी कर्म ज्ञान इंद्रियों से है। यह क्या है? यह पंच भौतिक तत्वों से बनी हुई हैं। इन्हीं के द्वारा भाई, माता, पिता, जगत आदि है। देखा, यह पूरा इंद्रियों का खेल है। हमारे शरीर में 5 कर्म इंद्रियाँ हैं, 5 ज्ञान इंद्रियाँ हैं और 4 अन्तःकरण की सूक्ष्म इंद्रियाँ हैं। पहली कर्म इंद्रि है—पैर। ये चल रहे हैं। ये कैसे चल रहे हैं? इनको संचालित कर रहा है—हमारा ब्रेन। पैरों में देखने की ताकत नहीं है। चलने के समय ब्रेन कैसे कर रहा है? आँखें इस हमारे सारे अन्तःकरण मन की सहायक इंद्रियाँ हैं। आँखें देख रही हैं कि खड्डा है या क्या। फौरन वो ब्रेन को माइक्रो सेकेंड में संदेश दे रही हैं कि वहाँ खड्डा है, इधर कांटा है, इधर गंदगी है। ब्रेन यहाँ से कोशिकाओं द्वारा अपना संदेश पैरों तक पहुँचाता है—ओ पैर! उधर मत जाना, वहाँ गंदगी है। यह सब काम बड़ी

स्पीड में हो रहा है। इसलिए हमारा शरीर मायावी है। पंच भौतिक शरीर ही माया है।

**क्षिति जल पावक गगन समीरा। पंच तत्व का अधम शरीरा॥**

हमारे शरीर की संरचना पंच भौतिक तत्वों से है। वो पाँचों तत्व शरीर में दिख रहे हैं।

**यह पिंजड़ा नहीं तेरा हंसा, यह पिंजरा नहीं तेरा॥**

इसलिए जिस शरीर में आप बैठे हैं, मिथ्या है। महापुरुषों ने इसे मिथ्या और नाशवान ठहराया। जब यह खुद नाशवान है तो इससे संबंध रखने वाली चीज़ें नित्य कैसे हो सकती हैं! ठीक है। देखें, इस तरह हमारे पैर काम कर रहे हैं। पैरों के पीछे एक ताकत लगी हुई है। पैरों को इल्म नहीं है। हमारे पैर बदस्तूर चलते जा रहे हैं। हम सोच रहे हैं कि हमारे पैर ठीक जगह पर पड़ रहे हैं। नहीं, पैरों में ठीक और ग़लत जगह की अनुभूति नहीं है। पैरों को ब्रेन द्वारा संदेश मिल रहे हैं। पैर कोशिकाओं से संबंधित हैं। इसलिए वो उन्हें माइक्रो सेकेंड के अन्दर संदेश दे रहा है कि इधर नहीं घूमना, यहाँ न जाना। और वो ऐसा ही कर रहे हैं। कभी-कभी इनमें ठोकर लग जाती है। यह देखना नहीं जानते हैं। क्यों ठोकर लगी? जब हमारा दिमाग, जब हमारा ध्यान किसी दूसरी दिशा में हो जाता है तो हमारे पैर ठोकर खा बैठते हैं। दूसरी कर्म इंद्रि है—मूलदार चक्र, जो मल को त्याग कर रही है। वो निरंतर मल का त्याग कर रही है। इसके लिए भी संदेश ब्रेन से मिलते हैं। ब्रेन ही बताता है पूरा। तीसरी शिशन इंद्रि, जिसके माध्यम से सृजन चल रहा है। यह भी मस्तिष्क के हाथ में है। चौथा—हाथ। ये हमारे हाथ अँधे हैं। इनमें किसी भी स्पन्दन की ताकत नहीं है। किसी भी ज्ञान को अनुभव करने की ताकत नहीं है। सिस्टम ही नहीं है। उदाहरण के लिए लहरसिंह आया तो मस्तिष्क ने कहा कि साहिब-बंदगी बोलो, नमस्कार करो। ये हाथ आज्ञा का अनुकरण कर रहे हैं, पालन कर रहे हैं। ये मिल जाते हैं। इनको यह ज्ञान नहीं है कि यह मिलना क्या है और मारना क्या है। जब इनको हमारा मस्तिष्क संदेश

देता है कि लहरसिंह ने गाली बकी है, तमाचा मारो, तो ये धड़ाक से तमाचे के लिए उठ पड़ते हैं और दे मारते हैं मुँह पर तमाचा। सच यह है कि इनके पास तमाचा मारने या हाथ जोड़ने का इल्म नहीं है। ये तो अनुकरण कर रहे हैं। किसका? मस्तिष्क का। क्या है हमारा मस्तिष्क? इस तरफ भी चलते हैं। हमारा दिमाग, जो इनको संदेश दिया, वो ही किया। पाँचवा है—मुख। यह क्या करता है? खाने की क्रिया भी करता है, बोलने का काम भी करता है। इसे कर्म इंद्रि भी कहते हैं और ज्ञान इंद्रि भी कहते हैं। क्या इसे पता है कि कम खाना है या ज्यादा खाना है? कतई नहीं। ब्रेन इसको कंट्रोल कर रहा है। दो फुलके खाना; तीसरा खाया तो पेट में गड़बड़ होगी, गैस बनेगी, हजम नहीं होगा। यह तो खाए जाना चाहता है। इसका मतलब है कि हमारी इन सभी इंद्रियों को नियंत्रित हमारा ब्रेन कर रहा है। इसी तरह हमारी ज्ञान इंद्रियाँ हैं। ये संचालित हो रही हैं। ज्ञानेन्द्रियाँ इनको क्यों कहते हैं कि इनके माध्यम से हम ज्ञान की अनुभूति करते हैं। पर क्या इन इंद्रियों में ज्ञान है? नहीं। इनका संचालक हमारा मस्तिष्क है। आँखें देखने का काम करती हैं। वो बता रही हैं कि यह कौन-सी तस्वीर है। कैसे? वैज्ञानिक लोग कह रहे हैं कि हम जिस भी चीज़ को देखते हैं, पहले उल्टा देखते हैं। हमने माई को देखा तो उल्टा देखा। हमारे ब्रेन और चित्त की कोशिकाओं ने फिर उसे सीधा किया। जैसे हम शीशे में कुछ लिखा हुआ देखते हैं तो उल्टा नज़र आता है। हमारे चित्त ने, हमारे मस्तिष्क ने, हमारे अन्दर के ज्ञान ने उसे ठीक किया। तो हमारी आँखें देख रही हैं। ये ज्ञान इंद्रि हैं। इन्हें ज्ञान इंद्रि क्यों कहा? ये हमें ज्ञान दे रही हैं। ये हमें बता रही हैं कि माँ है, बाप है। पर यथार्थ में क्या ये ज्ञान इंद्रियाँ हैं? नहीं। पर ये ज्ञान का माध्यम हैं, एक जरिया हैं। इनके द्वारा ही हम अनुभव कर रहे हैं कि यह माता है, यह पिता है, यह भाई है, यह बंधु है। इनकी खुराक क्या है? सुंदरता। कभी-कभी सुंदर चीज़ को देखने लग जाती हैं। कभी-कभी आदमी इनको कंट्रोल करता है, कहता है कि नहीं, यह माँ है, यह बेटा है, यह बहन है। इन आँखों में

अपना इल्म नहीं था। इनका भी संचालन, इसका मतलब है कि हमारा ब्रेन कर रहा है। यह क्या है हमारा दिमाग? आगे आइए, देखें—खुशबू। हमारी नाक एक माध्यम है। पर यह खुशबू और बदबू का इल्म करता है। कैसे किया? सच यह है कि इसका इल्म हमारे मस्तिष्क की कोशिकाओं ने किया। यह एक ज़रिया था केवल। मुँह कर्म इंद्रि भी है ज्ञान इंद्रि भी है। आप कोई चीज़ खाकर कहते हैं कि वाह, मज़ा आ गया। यह मज़ा किसको आया? जीभ को। कैसे आया मज़ा? जीभ के पास तो मज़ा अनुभव करने के लिए कोई मीमोरी नहीं है। जीभ के पास तो कोई तंत्र नहीं है। दरअसल जीभ एक माध्यम थी। मज़ा तो हमारे दिमाग ने अनुभव किया। वाह भाई वाह। साहिब ठीक तो कह रहे हैं। हम प्रमाणित कर रहे हैं—**कहत कबीर सुनो भाई साधो, जगत बना है मन से।।**

पूरे जगत का अस्तित्व ही हमारे मन के द्वारा है। हम जो भी चीज़ें कर रहे हैं, इसकी अनुभूति हमारा मन कर रहा है। हम जो भी चीज़ें अनुभव कर रहे हैं, यह हमारा ब्रेन कर रहा है। हमारे कान सुन रहे हैं। ये तो सुनने का एक उपक्रम है। इनसे हमें पता चल रहा है। ये शब्दों का ज्ञान दे रहे हैं। कैसे? किसी ने कहा कि भाई, यहाँ आओ। आप वहाँ आ जाते हैं। कभी कोई कहता है कि चले जाओ। आप चले जाते हैं। कोई आपसे प्रश्न करता है। आप उसका उत्तर देते हैं। शब्द कानों तक गये। यह कितनी तेज़ी से काम हुआ? माइक्रो सेकेंड के अन्दर। शब्दों का बोध कैसे हुआ? उसने कहा कि यहाँ आओ। आप उधर बढ़ चले। क्यों बढ़ चले? वो आवाज़ आपके कानों के पर्दे से टकराने के साथ चित्त के पास पहुँची। चित्त ने डीकोड किया। उसने उसी समय मीनिंग बताया कि इधर आओ का मतलब होता है कि आगे बढ़ो। आप आगे बढ़कर आ गये। दरअसल हमारी कर्म ज्ञान इंद्रियों का संचालन भी हमारे मन के द्वारा हो रहा है। दिख रहा है। बिलकुल प्रत्यक्ष दिख रहा है कि हमारी कर्म ज्ञान इंद्रियों का संचालन हमारा मन कर रहा है। इसी तरह नासिका है। यह खुशबू और बदबू का इल्म करती है। किसी गंदे नाले के पास से गुज़रते

हो, तो बदबू आई। फौरन मस्तिष्क हुकुम देता है कि नहीं, यह फेफड़ों के लिए अच्छी नहीं है। आप अपना हाथ नाक पर रख देते हैं। इस हाथ को नाक ने नहीं बुलाया। इस हाथ को नाक ने अपने पास नहीं बुलाया। इसको ब्रेन ने आज्ञा दी। इसका मतलब है कि हमारी इंद्रियाँ एक उपक्रम हैं, एक माध्यम हैं। यथार्थ में इनका पूरा-पूरा कंट्रोल हमारा ब्रेन कर रहा है। बड़ी चालाकी से शरीर की सृजना है। हम इन कर्मज्ञान इंद्रियों को अनुभव करते हैं। आइए, हम देखें। भाइयो, कभी-कभी हम देखते हैं। कुछ लोग शांतिर हैं, कुछ लोग भोले हैं, कुछ लोग गंभीर हैं, कुछ लोग शांत हैं। यह भी आत्मा नहीं है। यह भी कोशिकाओं का खेल है। अभी तो वैज्ञानिकों ने बड़ी-बड़ी खोजें की हैं। आदमी अवसाद का मरीज़ क्यों हो जाता है? शर्मीला क्यों हो जाता है? वो बोल रहे हैं कि कुछ कोशिकाएँ होती हैं, जो कमज़ोर होने के कारण से आदमी शर्मीला होता है। अब वो इंजेक्शन निकाल रहे हैं। वो लगायेंगे तो उसका ज्यादा शर्मीलापन खत्म हो जाएगा। यानी यह हमारा स्वभाव भी हमारी आत्मा नहीं है। सीधी-सी तो बात हुई कि हमारा क्रूर होना, हमारा शांत होना, जितना भी है, हमारा मन है। यह हमारा ब्रेन है। आइए, हम देखते हैं कि आखिर यह मस्तिष्क क्या है? हमारे दिमाग के चार अंग हैं। मन के चार अंग हैं, चार रूप हैं—मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार। जब यह मन इच्छा करता है तो इसे मन कहते हैं। जब यह फैसला करता है, इसे बुद्धि कहते हैं। जब यह याद करता है, इसे चित्त कहते हैं। ये चारों मन के रूप हैं। अब यह सवाल उठा कि हमें क्यों नहीं पता चल रहा है कि यह मन है? इसकी क्या वजह है? अध्यात्म क्या है? हमारा शरीर कैसे काम कर रहा है, यह जानें। हमारा मन कैसे काम कर रहा है, यह जानें। हमारी आत्मा शरीर में कैसे स्थित है, यह जानें। यह है—अध्यात्म। आज जो कथा कर रहे हैं, वो भी कह रहे हैं—आध्यात्मिक सत्संग, रूहानी सत्संग। नहीं, वो तो कथा है। अध्यात्मवाद एक अलग चीज़ है। अध्यात्म एक अलग वस्तु है। हम अपने को क्यों कह रहे हैं कि मैं मनमोहन हूँ, मैं लहरसिंह हूँ। यह हम

अपने को क्यों अनुभव कर रहे हैं? जहाँ तक हमारी अनुभूति अपने आप के लिए है, हम यहीं तक ही हैं। और जब आप पलट कर अपने को अनुभव करने लगते हो कि मैं मधु हूँ, मैं अच्छा हूँ, मैं बुरा हूँ, विल पाँवर है, यह क्या चीज़ है? भाइयो, आप मेरी इस बात पर ध्यान देना। हरेक आदमी अपने-अपने अंतःकरण में अलग-अलग फीलिंग कर रहा है। प्रश्न है। जब आप इस बात को जानने का प्रयास करते हैं कि मैं क्या हूँ, काफी चिंतन करने के बाद आपके सामने रिज़ल्ट क्या आता है? जब भी इंसान यह जानने का प्रयास करता है कि मैं क्या हूँ, वो कहाँ तक पहुँचता है, पता है। वो किस बिंदु तक पहुँचता है यह सोच-सोच कर? ज़रूर जीवन के पहलू में इंसान अपने वजूद को सोचने का प्रयास करता है। वो सोचने की कोशिश करता है कि मैं क्या हूँ। जब भी हम अपने बारे में, अपनी खुदी के बारे में, अपने व्यक्तित्व के बारे में सोचने का गहराई में प्रयास करते हैं कि मैं क्या हूँ, हम कहाँ पहुँचते हैं? मेरा यह प्रश्न है। इस खोज में उसे क्या उत्तर मिलता है? किस निष्कर्ष पर पहुँचता है इस सवाल के जवाब में? सुनो। जब भी हम यह सोचने का प्रयास करते हैं कि हम क्या हैं, हम कहाँ पहुँचते हैं? हम अपने ब्रेन तक पहुँचते हैं। ठीक है। हम कहाँ पहुँचते हैं? हम अपनी याददाश्त तक पहुँचते हैं। हम अपने क्रिया-क्लापों तक पहुँचते हैं। हम यह सोचने लगते हैं कि मैं खेरू राम हूँ। ठीक है। मैं लहरसिंह हूँ। मैं यहाँ का रहने वाला हूँ। फिर हम एक और बिंदु पर पहुँचते हैं कि मैं अच्छा हूँ या बुरा हूँ। इस पर क्यों पहुँचते हैं? हमने अपने पूरे कर्म किये हैं। हम अपने सभी कर्मों के साक्षी हैं। तो हम डुबकी लगाते हैं चित्त के अन्दर। तो चित्त हमारे पूरे क्रिया-क्लापों को पल-भर में दिखाता है। इसलिए जब हम अपने आप को खोजने निकलते हैं तो यहीं टकराते हैं। फिर हम अपनी इच्छाओं के कारण से अपने को जान रहे हैं। ठीक है। मैंने यह-यह इच्छा की है, यह-यह याद है, मेरा एक घर भी है, मेरे बाल-बच्चे भी हैं। आप यह अनुभव करने लगते हैं। 'मैं' हूँ, इस सोच तक आप टकराते हैं। इसके आगे आप नहीं झाँक पा रहे हैं। ये

चारों क्या हैं? यह मन है। यानी हम जब भी अपने को जानने की कोशिश करते हैं तो सामने यह दीवार आ जाती है हमारे। इसी तरह जब भी हम परमात्मा तक जाने का प्रयास करते हैं, तब भी यह दीवार सामने आती है। यह बहुत तगड़ी दीवार है। अगर मैं आपको कहूँ कि भूल जाओ कि तुम लहरसिंह हो तो नहीं भूल पायेगा। इस पूरे व्यक्तित्व को अहम् कहा। मैं, आपा, खुदी, वजूद। हम यहीं अटक जाते हैं वजूद के अन्दर। वजूद हमारा भौतिक है। अगर लहरसिंह को कहूँ कि भूल जाओ, तुम लहरसिंह हो तो क्यों नहीं भूलेगा। क्योंकि लहरसिंह को पता है कि मेरी स्त्री है, मेरे दो लड़के हैं, मेरी लड़कियाँ हैं। यह सब क्या है? क्यों पता है? याददाश्त के कारण पता है। यह याददाश्त मन का रूप है। ठीक है।

**कहत कबीर सुनो भाई साधो, जगत बना है मन से॥**

साहिब ने इतना बेहतरीन कहा, इतना सरल कहा कि पूछो मत। भाइयो, देखा कि कितना जटिल है मन! इससे बाहर निकलना बड़ा मुश्किल है। इन संकल्पों से बाहर निकलना, इस याददाश्त से बाहर निकलना, इस बुद्धि से बाहर निकलना, इस क्रिया से बाहर निकलना बहुत मुश्किल है। यह है—मन। देखा, कितना ताकतवर है! तभी साहिब वाणी में कह रहे हैं—

**कहत कबीर सुनो भाई साधो, जगत बना है मन से॥**

**मनहिं स्वरूपी देव निरंजन, तोहि राख भरमाई।**

**हे हंसा तू अमर लोक का, पड़ा काल बस आई॥**

आखिर हमें मन से बाहर क्यों निकलना है? हमें मुक्ति क्यों पानी है, सुनें। जब तक हम कर्मज्ञान इंद्रियों के बीच में हैं तो हमें सुख-दुख मिलेगा। क्यों मिलेगा? इनके माध्यम से किये हुए कर्मों का अभीष्ट सत्य है। चाहे हमने कितना भी धन एकत्रित किया, एक दिन शरीर छूट जाता है। तो वो चीजें जब हमारे पास से चली जाती हैं तो हमें दुख मिलता है। सुख-दुख क्या है? भाइयो, मन की इच्छाओं की पूर्ति सुख है। इच्छाओं का पूर्ण न होना ही दुख है। इसलिए हमारी आत्मा सुख-दुख से परे है।



हरेक बात वैज्ञानिक तथ्यों से जानी जा सकती है। ठीक है। आत्मा में ये चीजें ही नहीं हैं। इस शरीर के रहते रहते जब हमारी इच्छाओं की पूर्ति नहीं होती है तो 'स्व इच्छा निर्मित तन'। उन इच्छाओं की पूर्ति के लिए हमें पुनर्जन्म मिलता है। ठीक है। हम फिर पुनर्जन्म में जाते हैं। इस पर साहिब एक शब्द बोल रहे हैं—

**चाह मिटी चिंता मिटी, मनवा बेपरवाह।  
वो ही शाहनशाह है, जिसको नाहिं चाह॥**

पर चाह मिटाना कितना मुश्किल है! पल-पल हम चाह करते हैं। पल-पल हम इच्छा करते हैं। हम इच्छा करते हैं कि अभी रोटी खाऊँगा। हम इच्छा करते हैं कि अभी पानी पीऊँगा। हम इच्छा करते हैं कि अभी यह काम करूँगा। हमारी इच्छा पल-पल हो रही है। देखा न, मन ने कैसे जकड़ रखा है! क्यों हमें इससे बाहर निकलना है? जब भी हम इसके द्वारा जो भी क्रिया कर रहे हैं, उसके परिणाम स्वरूप मिलने वाला सारा सुख और दुख हमारा ब्रेन अनुभव करता है। वो कैसे अनुभव करता है? जब किसी भी कार्य में असिद्धि हो जाती है तो हम दुखी हो जाते हैं। दुखी कौन हुआ? हमारा ब्रेन हुआ। जब किसी कार्य में सिद्धि मिली तो हम खुश हो जाते हैं। इसलिए एक ज्ञानी सुख-दुख से ऊपर उठ जाता है। वो मन से परे हो जाता है, ये किताबी बातें नहीं हैं। ये तो बिलकुल प्रेक्टिकल हैं। इस मन का उलझाव बहुत तगड़ा है। माता, पिता, भाई, बंधु, सखा आदि इनकी अनुभूति मन से है। एक कटु और पूर्ण सत्य है कि एक दिन इसने मिट्टी में मिल जाना है। इसकी संरचना ही ऐसी है। यह मिथ्या हुआ कि नहीं! पर वो नित्य है आत्मा।

**यों सपना पेखना, जग रचना तिम जान।  
इसमें कछु साँचो नहीं, यह नानक साँची मान॥**



# चिंता तो सत्यनाम की और न चितवे दास

---

कर्म फाँस फँसा संसारा॥

गोस्वामी जी रामायण में कह रहे हैं—

कर्म प्रधान विश्व रचि राखा। जो जस किया सो तस फल चाखा॥

बहुत लोग कर्मयोग की बात कर रहे हैं। कुछ ज्ञान मार्ग की बात कर रहे हैं। क्या संतत्व में कर्म की धारा को नकारा है। नहीं। पर सवाल उठा कि क्या कर्म द्वारा परमात्मा की प्राप्ति कर सकते हैं? पहले देखते हैं कि कर्म के प्रति साहिब का दृष्टिकोण कैसा है? कर्म को साहिब स्थापित कर रहे हैं।

कर्म गति टारे नाहिं टरी॥

गुरु वशिष्ठ से पंडित ज्ञानी, शोध के लग्न धरी॥

सीता हरण मरण दशरथ को, बन में विपत परी॥

पहले सतर्क कर रहे हैं कि कर्म का फल भोगना पड़ता है।

नीच हाथ हरिचंद्र बिकाने, बलि पाताल धरी॥

यह कर्म था कि महा सत्यवादी हरिश्चंद्र चांडाल के हाथ बिक गया। कल्लू चंडाल ने खरीदकर मुर्दे फूँकने का काम दे दिया॥

कोटि गऊ नृप दान करत, गिरगिट योनि परी॥

कहत कबीर सुनो भाई साधो, होनी होके रही॥

कर्म क्षेत्र के प्रति साहिब का ऐसा दृष्टिकोण है। संसार की ऐसी

व्यवस्था है कि कर्म का फल भोगना पड़ता है। इसका मतलब है कि फिर कभी भी छुट्टी नहीं है। कर्म का फल भोगने के लिए संसार में आना ही पड़ेगा। गोस्वामी भी रामायण में कह रहे हैं—

**कर्म प्रधान विश्व रचि राखा।**

**जो जस करे सो तस फल चाखा॥**

साहिब भी कह रहे हैं—

**कर्म फाँस में जगत फँदाना॥**

काल पुरुष के इस संसार में कर्म का ही खेल है। लेकिन उसके विधान में एक बड़ी खूबी है।

तो कुछ कह रहे हैं कि कर्म के द्वारा परमात्मा की प्राप्ति कर सकते हैं। पर साहिब कह रहे हैं—

**क्रिया कर्म में मैं नहीं रहता, नहीं योग उपवास में॥**

तो क्या कर्म योग को बिलकुल नकार रहे हैं? नहीं, ऐसा नहीं है। हम कह रहे हैं कि तीन लोक तक कर्म का बर्चस्व है। रामायण में प्रसंग है कि राम जी ने बालि का वध किया तो वो ज़मीन पर गिर गया। जब राम जी उसके पास पहुँचे तो उसने कहा—

**मैं बैरी सुग्रीव प्यारा। कारण कौन राम मोहि मारा॥**

कहा कि आपके लिए तो हम दोनों बराबर थे, फिर सुग्रीव के कहने से मुझे क्यों मारा? तब राम जी ने कहा—

**अनुज वधू भगिनी सुत नारी। सुनु सठ कन्या सम ए चारी॥**

**इन्हि कुदृष्टि बिलोकइ जोई। ताहि बधें कछु पाप न होई॥**

कहा कि छोटे भाई की पत्नी, बहू आदि कन्या के समान होती हैं। इन पर कुदृष्टि रखने वाले का वध करने से कोई पाप नहीं लगता है। फिर कहा कि तुम इसका बदला ले लेना। द्वापर में कृष्णावतार होगा तो बदला लेना। वही बालि पराधि बनकर बाण मारा था। राम जी को भी कर्म का फल भोगना पड़ा। तो बाकी की क्या बात है! साहिब की वाणी में वज़न है।

## चारों खानि कर्म अधिकाई ॥

कर्म के अनुसार ही सब चीजें हैं।

सात वार पंद्रह तिथि साजा। नौ ग्रह ऊपर कर्म विराजा ॥

इस तरह कर्म विशेष है। पर क्या कर्म के द्वारा ही परमात्मा को प्राप्त कर सकते हैं? योगी कर्म को प्रधान मानता है। गीता में भी कर्मयोग को महत्व दिया है, लेकिन साहिब यहाँ कह रहे हैं—

कर्म                      फाँस                      जगत                      फँ दाना ॥

पाप पुण्य ये दोनों बेड़ी, इक लोहा इक कंचन केरी ॥

पाप और पुण्य दोनों बेड़ियों की तरह हैं।

जब तक शरीर में हैं तो कर्म करना पड़ता है। पहले देखते हैं कि योग से, साधना से परमात्मा की प्राप्ति कर सकते हैं या नहीं? संतत्व की धारा कह रही है कि नहीं कर सकते हैं। योगी कर्म को महत्व देता है। वो कह रहा है कि योग साधना करो। काफी लोग कह रहे हैं कि कर्म ही धर्म है। मैं कर्म के अस्तित्व को नकार नहीं रहा हूँ। लेकिन ये किन-किन भक्ति के सूत्रों में स्थापित है। पंच मुद्राएँ भी कर्म हैं। चाचरी, उनमुनी आदि क्रियाएँ भी कर्म हैं। क्या कर्म से मुक्ति पा सकते हैं? नहीं। चार मुक्तियाँ मिल जायेंगी, पर परम तत्व की प्राप्ति नहीं कर सकते हैं। काल पुरुष के देश से नहीं निकल सकते हैं। साहिब कह रहे हैं—

अदाकर खुद खजाने से, छुड़ा ले अपने बंदे को ॥

सुरति करो मम साईया, मैं हूँ भवजल माहिं ॥

थोड़ा देखते हैं।

कितने तपसी तप कर डारे, काया डारी गारा ॥

गृह छोड़ भये सन्यासी, तऊ न पावत पारा ॥

बड़े-बड़े तपस्वियों ने घोर साधनाएँ की, पार नहीं हो पाए। इसकी वजह है। जो शत्रु अन्दर में बैठे हैं, कर्म से उनसे फाइट नहीं कर पाएगा। वो बहुत तगड़े हैं। आखिर पराशर 1 हजार साल तप करके लौटे थे।

## ज्ञान ध्यान कछु रहन न पाई ॥

1 हजार साल तप करने के बाद मच्छोदरी से संभोग कर बैठे थे। हजार साल की तपस्या एक पल में नष्ट कर दी। श्रृंगी ऋषि ने घोर तप किया, पर कर्म से कुछ प्राप्त नहीं कर सके। आखिर वेश्या से शादी कर ली। मैं कर्म को नकार नहीं रहा। पर देखें, पूरे शरीर को जर्जर कर दिया था, लेकिन काम को जीत नहीं सका। और भी कई प्रमाण मिलते हैं। घोर तप से, किसी क्रिया से, किसी उपासना से अन्दर के शत्रु काबू में नहीं आने वाले।

**ये सब साधन से न होई। तुम्हरी कृपा पाय कोई कोई ॥**

साहिब भी अक्षमता जता रहे हैं।

**न कुछ किया न कर सका, न करने योग शरीर।  
जो कुछ किया सो साहिब किया, भया कबीर कबीर ॥  
सुरति करो मम साईया, हम हैं भवजल माहिं।  
आपहि हम बह जाहिंगे, जो न गहो तुम बाहिं ॥**

योगियों को अहंकार रहा। इसलिए नहीं बच पाए। अपने को बड़ा और बाकी को छोटा माना। मतलब है कि किसी भी साधना से पार नहीं हो सकता है। किसी ने मुझे कहा कि आप भी तो कर्म करने के लिए कह रहे हैं। आप कह रहे हैं कि ध्यान भजन करो, सुमिरन करो। वो भी तो कुछ करना है न! मैंने कहा कि आत्मा का कर्म से कोई संबंध नहीं है। कर्म है—क्रियाएँ। इनका पंच भौतिक शरीर से संबंध है। कुछ क्रियाएँ मन से कर रहे हैं, कुछ शरीर से। फैसला एक क्रिया है, जो बुद्धि किये जा रही है। याद करना भी एक क्रिया है। वो चित्त से है। ऐसे याद नहीं आयेगी। आपको कोई घटना याद आई। उसका कुछ परिपेक्ष्य आपने देखा, तब याद आई। इस याद के पीछे भी कारण है। इसलिए सुमिरन करना भी एक क्रिया है। तो उसने कहा कि फिर समझ नहीं आ रहा है कि आप सुमिरन करना क्यों बोल रहे हैं! मैंने कहा—

## सुमिरन मन की रीति है, सो मन है तुझ माहिं ॥

यह क्रियाशीलता मन की वृत्ति है। मन शांत नहीं है। मन हमेशा कोई-न-कोई क्रिया करता है। जहाँ क्रिया है, वहाँ मन है। अब यहाँ यह कहा जा रहा है कि क्रियाओं से बाहर निकलने के लिए पहले हमें एक क्रिया करनी पड़ेगी। देखो, स्थूल क्रियाएँ हैं—चलना, बोलना आदि। चलना एक क्रिया है। बोलना एक क्रिया है। खाना एक क्रिया है। बैठना एक क्रिया है। लेटना भी एक क्रिया है। ये सब स्थूल क्रियाएँ हैं। क्रिया करना एक क्रिया है। फिर सूक्ष्म क्रियाएँ भी हैं। इच्छा करना एक क्रिया है। विचार करना भी एक क्रिया है। याद करना भी क्रिया है। क्रिया करना एक क्रिया है। ये मन के रूप हैं। हम स्थूल और सूक्ष्म क्रियाएँ कर रहे हैं। ये मन माया से हैं। इसलिए—

चिंता तो सत्यनाम की, और न चितवे दास।  
जो कुछ चितवे नाम बिन, सोई काल की फाँस ॥

सुमिरन एक ऐसी चीज़ आई कि उतनी देर तक हम एकाग्र होंगे। भले ही यह एक क्रिया है, पर वो क्रियाओं को बंद करने वाली क्रिया है। हमारा मन जो चिंतन कर रहा है, वो क्रिया हो जाती है। जब याद आया कि वहाँ धूमा था कल तो आप वहाँ पहुँच गये। यह क्रिया हो गयी। आपको चिंतन आया कि कमरा बनाना है। आप उलझ गये कि सीमेंट कहाँ से लेना है, कितना खर्चा आएगा। यह भी एक क्रिया है। अब सुमिरन मन के संकल्प-विकल्प पर निरोध है। सुमिरन क्रिया होते हुए भी क्रियाओं का निरोध करने वाला सूत्र है। इसलिए—

चिंता तो सत्यनाम की, और न चितवे दास ॥  
जो कुछ चितवे नाम बिन, सोई काल की फाँस ॥

कह रहे हैं कि नाम के अलावा जो भी चिंतन आपके अन्दर हो रहा है, वो सब क्रियाएँ मन की फाँस है। तो नाम भी क्रिया है। नाम एक सूक्ष्म क्रिया है। यह बाकी क्रियाओं को रोकने का साधन है, उन पर

चिन्ता तो सतनाम की और न चितवे दास

विराम लगाने वाली क्रिया है। जब भी एक सत्ता का ध्यान कर रहे हैं तो आपकी बाकी क्रियाएँ रुक गयीं। लेकिन इससे भी बाहर निकलना है, क्योंकि-

जाप मरे अजपा मरे, अनहद भी मर जाय।  
सुरति समानी शब्द में, वाको काल न खाय॥

सुमिरन द्वारा बाकी क्रियाओं का निरोध करने से हम मन से बचकर एक दायरे में आ जाते हैं। फिर इससे भी ऊपर उठना है। इसलिए कहा-

नाम न जपा तो क्या हुआ, जो अन्तर है हेत॥  
पहले तो कह रहे हैं-

स्वांस स्वांस प्रभु सुमिर ले, वृथा स्वांस न खोय।  
न जाने किस स्वांस में, आवन होय न होय॥  
फिर कह रहे हैं-

नाम न जपा तो क्या हुआ, जो अन्तर है हेत॥  
पतिव्रता पति को भजे, कबहुँ नाम न लेत॥

पतिव्रता का ध्यान वहीं है। यदि इस स्टेज पर पहुँच गया है तो फिर सुमिरन की ज़रूरत नहीं है। जैसे स्वर व्यंजन समझाने के लिए 'क' से 'कमल' है। पर जब सीख गया तो फिर इसकी ज़रूरत नहीं है। 'क' से और कई शब्द होते हैं। पर यह सूत्र था। साहिब कह रहे हैं-

तन थिर मन थिर, सुरति निरति थिर होय।  
कहैं कबीर वा पल को, कल्प न पावे कोय॥

इन सबका क्या मतलब है? समग्र एकाग्रता। जब क्रिया करते हैं तो आप उसी क्रिया का रूप हो जाते हैं। झगड़ा करते हैं तो झगड़े का रूप हो जाते हैं। यदि दुख का चिंतन करते हैं तो दुखमय हो जाते हैं। जब सुख की बात का चिंतन करते हैं तो सुखमय हो जाते हैं। इसका मतलब है कि क्रियाओं का, चिंतन का प्रभाव पड़ रहा है। मनुष्य उलझ रहा है। कुछ

लोग कर्म को स्थापित कर रहे हैं, कुछ ज्ञान को। कुछ भक्ति को स्थापित कर रहे हैं। एक साधारण मनुष्य निर्णय नहीं कर पा रहा है कि क्या पकड़ूँ। सोने को परखने की एक कसौटी है, सूत्र है। कसौटी पत्थर है। स्वर्णकार को पूछा कि एक लकीर खींचने पर कैसे पता चल जाता है कि कितना सोना है? उसने कहा कि वो ऐसा होता है कि जिस समय कसौटी पर एक लकीर खींचते हैं तो जितने भी डॉट हल्के आते हैं, समझो उतना खोट है। बिना गलाए पता चल जाता है कि कितनी मिलावट है। कसौटी से स्वर्ण की परीक्षा मिल जाती है। इस तरह तर्क ज्ञान को परखता है। तर्क ज्ञान को परखने की कसौटी है। पर तर्क कुतर्क न हो। कुतर्क बड़ा खराब है। तर्क अच्छा है। तर्क को नकार नहीं रहे हैं। आइए, मैं प्रमाण देता हूँ। क्या हम कर्म और योग से परमात्मा की प्राप्ति कर सकते हैं? हजारों साल से तप करके आ रहा था पराशर। मच्छोदरी से कुकर्म कर बैठा। यानी हजारों साल के कर्म को समाप्त कर दिया काम ने।

**काम प्रबल अति भयंकर, महादारुण काल हो।  
गण गंधर्व यक्ष किन्नर, सबहि कीन्ह बेहाल हो॥**

तो इतने घोर तपस्वी हार गये तो लग रहा है कि आम बंदा अपनी ताकत से किनारे लगने वाला नहीं है। साहिब कह रहे हैं—

**बहु बंधन से बाँधिया, एक विचारा जीव।  
जीव विचारा क्या करे, जो न छुड़ावे पीव॥**

आप बहुत तगड़ी रस्सियों से बँधे हैं। वो इतने धुरंधर हैं कि खुद उनसे नहीं लड़ सकते हैं। इसलिए कह रहे हैं—

**अदाकर खुद खजाने से, छुड़ा ले अपने बंदे को॥**

हम तो सुरति-योग की बात कर रहे हैं।

**ये सब साधन से न होई। तुम्हारी कृपा पाय कोई कोई॥**

साहिब कह रहे हैं—



ना कुछ किया न कर सका, ना करने योग शरीर।  
जो कुछ किया सो साहिब किया, भया कबीर कबीर॥

इसलिए आप देखना, मैंने कर्म के लिए नहीं कहा। पर कहा कि कुकर्म नहीं करना। सुमिरन नहीं करना है तो मत कर, एकाग्र रहो। पर पहले एकाग्र होने के लिए आयाम है—सुमिरन। ध्यान एकाग्र होने में बाधक से निपटने के लिए सुमिरन की क्रिया करनी है। सुमिरन मन की चोट से बचाव है।

चिंता तो सत्यनाम की, और न चितवे दास।  
जो कुछ चितवे नाम बिन, सोई काल की फाँस॥

योग क्रिया, जप, तप, किसी भी कर्म से पार नहीं होगा, क्योंकि—  
कितने तपसी तप कर डारे, काया डारी गारा।  
गृह छोड़ भये सन्यासी, तऊ न पावत पारा॥

कितने तपस्वियों ने घोर तपस्याएँ की, लेकिन पार नहीं हुए।  
बड़ी-बड़ी तपस्याएँ की। यानी अन्दर बैठी शक्तियाँ हमें अपने रूप तक नहीं पहुँचने दे रही हैं। मन माया के कारण आत्मा का बर्चस्व पता नहीं चल रहा है। तभी तो कह रहे हैं—

तन थिर मन थिर वचन थिर, सुरति निरति थिर होय॥

यानि चिंतन रहित होना है। उदाहरण देता हूँ। कुछ कहते हैं कि बहुत जल्दी अपने को सब दे दो। बालक पढ़ने जाता है तो मास्टर युक्ति से इल्म देता है। हम भी कह रहे हैं कि संयम रख, युक्ति से दे देंगे। परम तत्व पाने के लिए योग नहीं दे रहे हैं, संयम रख। मेरे पास बहुत लोग आते हैं, कहते हैं कि 1 मिनट में ज्ञान दे दो, जैसे राजा जनक को अष्टावक्र ने दिया था। मैं कहता हूँ कि तुम पात्र बनो। चंडीगढ़ में एक लेक्चरार था, कहा कि आत्मा का ज्ञान चाहता हूँ। जैसे रामकृष्ण परमहंस ने विवेकानन्द को दिया था, अष्टावक्र ने राजा जनक को दिया था, ऐसे दो। जैसे मैं बात करने लगता तो वो वहीं रोक देता था, कहता था कि बात

नहीं करनी है। कहा कि मैं बड़े महात्माओं के पास गया हूँ, संतुष्ट नहीं हूँ। मैंने कहा कि 1 मिनट में राजा जनक को अष्टावक्र ने ज्ञान दिया था तो मैं तुम्हें आधे मिनट में दे दूँगा। तू पात्र तो बन। वो बोला कि क्या मैं पात्र नहीं हूँ? मैंने कहा कि मैं सच बोलूँगा तो तू गुस्सा हो जाएगा। तू है—कुपात्र। पहली बार मुझसे मिला और मुझे बात भी नहीं करने दे रहा है। तू विकृत दिमाग का है। वो बोला कि मेरी पत्नी भी कहती है। मैंने कहा कि मैं दूँगा तो भी तू समझेगा नहीं। अष्टावक्र ने सिर्फ राजा जनक को ही यह ज्ञान दिया था, बाकी को नहीं। हर कलाकार अपनी कला बाहर रखना चाहता है। नाचने वाला संगीत की धुन पर खुद ही नाचने लगता है। जो भी कलाकार है, अपनी कला दिखाना चाहता है। सिर्फ राजा जनक ही क्यों, और भी 10-20 का नाम आना चाहिए था, जिन्हें अष्टावक्र ने 1 मिनट में आत्मा का ज्ञान दिया हो। मैंने पूछा कि ऐसा क्यों नहीं हुआ? कहा कि आप ही बताओ। मैंने कहा कि उन्हें अकेला जनक ही पात्र के रूप में मिला।

**हीरा रतन की पोटरी, बार बार मत खोल।  
जब आए रतन पारखी, तब हीरे का मोल॥**

मैंने कहा कि तो भी मैं देता हूँ, तू पकड़ नहीं पाएगा। पर तुम्हारी जिज्ञासा देखकर बताता हूँ कि राजा जनक को कैसे ज्ञान दिया था। राजा जनक ने ज्ञानियों की सभा में कहा कि पल भर में आत्मज्ञान कौन दे सकता है? अष्टावक्र ने कहा कि मैं दे सकता हूँ। जनक ने कहा कि दो। अष्टावक्र ने कहा कि हे जनक, आत्मज्ञान गुरु देता है। इसलिए पहले मुझे गुरु बनाओ। कहा—ठीक है। हर जगह कंडीशन है। सर्विस करते हैं, वहाँ भी कंडीशन है। घर में भी कंडीशन है, नहीं तो माता पिता फारगति दे देते हैं। तो कंडीशन दी कि गुरु बनाओ। कहा कि ठीक है। अष्टावक्र ने कहा कि अपना तन, मन, धन तीनों दो। कहा—दे दिया। अष्टावक्र ने कहा कि आँख बंद करके दो। ये ही आत्म ज्ञान में बाधक हैं। कहा कि

दिया। अष्टावक्र ने कहा कि यह तन अब मेरा है। तुम मुझे शरीर दे चुके हो। अब मत सोचना कि शरीर हूँ। कहा कि ठीक है। फिर कहा कि तुमने धन भी मुझे दिया। हे जनक, यह महल, यह वैभव, यह सेना अब मेरी हुई। तुम कुछ भी अपना मत समझना। संकल्प करके तुमने मुझे दे दिया। राजा जनक ने कहा कि दिया। फिर कहा कि मन भी मुझे दिया। मैं हुकुम देता हूँ कि इस मन से कुछ भी मत सोचना, कोई इच्छा नहीं करना, कोई क्रिया नहीं करना और न ही कुछ याद करना। आँख बंद कर। खामोश। देख। जनक ने आँख बंद की, कहा कि आत्मज्ञान हो गया। अष्टावक्र ने कहा कि मन, बुद्धि के संकल्प-विकल्प के बाद क्या बचा है, देख। पल के बाद कहा कि आँख खोल। राजा जनक ने कहा कि आत्मज्ञान हो गया। अष्टावक्र ने राजा जनक को कोई बाहर निकालकर नहीं दिखाई कि यह देख, तेरी आत्मा। फिर एक तो जनक हुआ, एक अष्टावक्र और एक आत्मा। फिर देखने वाला कौन था! आत्मा का कोई द्रष्टा नहीं है। मन, बुद्धि, चित्त आदि के बाद जो बचा, वो एक चेतना है, वो आत्मा है। वो कोई चमचमाती लाइट नहीं है। राजा जनक उत्तम पात्र था, समझ गया।

**पलट वजूद में अजब विश्राम है, होय मौजूद तो समझ आवै॥**

गुरु आत्मा को चेतन कर देता है। मणि में रौशनी है। पर कीचड़ पड़ गया तो रौशनी नहीं होगी। बाहर निकाला जाए, साफ किया जाए तो कैसा है! इस तरह गुरु अंतःकरण को रौशन कर देगा, आत्मतत्त्व को जगा देगा। बस—

**सुरति संभाले काज है, तू मत भरम भुलाय।  
मन सय्याद मनसा लहर में, बहत कतहूँ न जाय॥  
ध्यान ही वेद शास्त्र कहत हैं, ध्यान ही संत बखाना॥**

दुनिया के जितने भी मत मतान्तर हैं, सभी ध्यान कह रहे हैं। ध्यान एकाग्र करना कर्म रहित होना है। पर ध्यान को एकाग्र करने के

लिए एक क्रिया तो करनी पड़ी। मन के दमन के लिए मन ही का प्रयोग करना पड़ता है।

**मन के हारे हार है, मन के जीते जीत॥**

**मन                      मानिया                      हरि                      जानिया॥**

मैं उदाहरण देता हूँ। मैं मानता हूँ कि भारतवर्ष में बहुत मत-मतान्तर हैं, बहुत गुरुआ हैं। मेरे ख्याल से मेरे वेश का कोई महात्मा नहीं मिलेगा। कोई जटाजूट है, कोई कपड़ा रंगाए है। मेरा तर्क सुनना। मेरी दाढ़ी नहीं बढ़ सकती थी क्या! मेरे बाल नहीं बड़े हो सकते थे क्या! कई मालाएँ नहीं पहन सकता था क्या! कोई दिक्कत है क्या इसमें! सवाल एक उठा कि क्यों नहीं कर रहा हूँ। तर्क दूँगा इसका। हम जो भी मेकअप करते हैं, अपनी कमी को छुपाने के लिए करते हैं। मैं वैद्य भी हूँ। देखकर समझ जाता हूँ कि क्या बीमारी है। आपकी त्वचा बता देती है। हर चीज़ बता देती है। एक लड़की आई। मैंने उसे देखा तो लगा कि मासिक की प्रब्लम है। मैंने उससे कहा कि शहद खाना, तुम्हें प्रब्लम लग रही है। उसने कहा कि मैंने काजल लगाया हुआ है। उसने मुँह पर काजल लगा रखा था। एक जगह गया तो एक ने बालियां पहनीं थीं और जूड़ा किया था। मैंने सोचा कि लड़की है। ऐसा क्यों करता है इंसान? मुझे आपने कभी नहीं देखा होगा किसी भी स्टाइल में। हम यहाँ रोमांस दिखाने नहीं आए। मेकअप क्या है? मेक कहते हैं—बनाना। मैं व्यंग्य नहीं कर रहा हूँ। लोग बाल काले कर रहे हैं। क्या चाहते हैं? हम अपने शरीर की तरफ ध्यान क्यों ले जाना चाह रहे हैं? एक बॉलिवुड की विश्वसुंदरी चुनी गयी। मीडिया वाले आए, उससे कहा कि अपनी सुंदरता के बारे में कुछ बताओ। उस लड़की ने बड़ी दार्शनिक बातें की। उसने कहा कि क्या बताऊँ अपने बारे में! कोई भी दुनिया में सुंदर नहीं है। मैं अपनी कमियाँ बताती हूँ। मेरा सिर टेढ़ा है, इसलिए बाल इस स्टाइल से रखती हूँ कि पता न चले। फिर कहा कि मेरी बाईं लुक खराब है, इसलिए वो लुक

नहीं देनी चाहती। मेरी बाजू कोहनी से टेढ़ी है, इसलिए ऐसे कपड़े पहनती हूँ कि दिखे नहीं। उसने अपनी कई कमियाँ बता दी, कहा कि इन्होंने पकड़ा नहीं।

मैं कहना चाह रहा हूँ कि श्रृंगार तो अपनी कमियों को छुपाने का और दूसरे को आकर्षित करने का साधन है। हम किसी को आकर्षित नहीं करना चाह रहे हैं। बहुत कम लोगों की टाँगें सीधी होती हैं। सही डील-डौल बहुत कम का होता है। जो भी सँवर रहा है, अन्दर से खाली होता है। जिसके पास कुछ होता है, वो सँवाग नहीं करता। उन्होंने सोचा कि आम आदमी से अलग दिखें, कुछ ऐसा करें। हम न कोई नाटक करते हैं, न नौटंकी। मेरा वेश भी एक चैलेंज है।

एक बूढ़ा था। कश्मीर घूमने की इच्छा थी। वो पतली धोती पहने था। मैं तब फौज में था। सोचा कि बाबा को ठंड न लगे। चेला भी था। मैंने पाजामा दिया, कहा कि यह पहन लो। वो बोला कि यह नहीं पहनना है, नाड़ा है इसमें। मैंने अपनी पेंट काटकर दी, कहा कि जाँघ पर बाँध लो, ठंड नहीं लगेगी। उसने वो पहन ली। अब चल रहे थे तो वो नीचे गिर रही थी। वो बार-बार उसे संभाले। मैंने पाजामे से नाड़ा निकाला और उसे दिया, कहा कि इसे बाँध लो, नीचे नहीं गिरेगी। उसने जाँघ पर नाड़ा बाँध लिया। मैंने कहा कि एक गीठ ऊपर नहीं बाँध सकते थे क्या! तो क्या बिगड़ जाना था! मैंने कहा कि नाड़ा भी वही है।

यह नाटक नौटंकी क्यों करनी है!

**मन न रँगाए योगी कपड़ा रंगाय लिया।।**

मेरा वेश अवस्था पर ध्यान नहीं है। किसी भी महात्मा की पहचान उसके गुणों से ही होती है। न तो इसमें उम्र का कोई मतलब है, न कपड़ों का। गुण ही मान्य हैं। कोई भी गुणी होता है, वही माननीय है।

....तो हम कह रहे हैं कि परम सत्ता की प्राप्ति कर्म से नहीं हो पाएगी।

यह सब साधन से न होई। तुम्हरी कृपा पाय कोई कोई॥

हम कर्म को नकार नहीं रहे हैं। जब घोर तपस्वियों ने तप किया, अन्दर के शत्रुओं ने मलियामेट कर दिया तो मतलब है कि कर्म, ज्ञान से फाइट नहीं कर सकता है।

अदाकर खुद खजाने से, छुड़ा ले अपने बंदे को॥

तभी तो साहिब कह रहे हैं—

कितने तपसी तप कर डारे, काया डारी गारा।

गृह छोड़ भये सन्यासी, तऊ न पावत पारा॥

देवराज इंद्र कामातुर हुआ तो गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या का शील भंग करने पहुँच गया। यानि आत्मा को जकड़ने वाले दुश्मनों से मुकाबला नहीं कर सकता है। संतत्व कह रहा है कि उस समय सारा ज्ञान, ध्यान रफूचक्कर हो जाता है।

**काम से अधिक क्रोध प्रचंडा॥**

जिन शत्रुओं से पाला पड़ा है, वो आपकी कुछ चलने नहीं देंगे।

साहिब कह रहे हैं—

सुरति करो मम साईया, हम हैं भवजल माहिं।

आपहि हम बह जाहिंगे, जो न गहोगे बाहिं॥

यहाँ कृपा योग की बात होती है।

ना कुछ किया न कर सका, न करने योग शरीर।

जो कुछ किया सो साहिब किया, भया कबीर कबीर॥

जो मन की सेना है, इतनी ताकतवर है कि बड़ी-बड़ी तपस्या करने वालों को मार दिया। तो आम बंदा क्या कर सकता है!

बड़े बड़े हाथी बह जाहिं, कहो मूसा क्या लेखे माहिं॥

इससे बड़ा है—लोभ। इसके कारण से कई तिहाड़ जेल में बैठे हैं।

ये बड़े-बड़ों को नचा रहे हैं। गोस्वामी जी कह रहे हैं—

**प्रबल अविद्या का परिवारा॥**

हम कर्म को नकार नहीं रहे, पर किसी योग साधना से भी पार नहीं होगा। सद्गुरु की दया से होगा। संतत्व की विचारधारा गुरुकृपा के गिर्द घूम रही है।

**मेरा कर्त्ता मेरा साईया॥**

जिन शक्तियों ने बाँधा है, वो बहुत ही ताकतवर हैं। बिना गुरुकृपा के किसी भी तरह से बच नहीं सकता है। कर्म से 4 तरह की मुक्तियाँ तो प्राप्त कर सकता है, पर काल पुरुष के दायरे तक ही रहेगा। उसके देश से निकल नहीं पायेगा। हमले करने वाले दिख भी नहीं रहे हैं। ये छुपकर बैठे हैं।

**जो कोई कहे मैं मन को देखा, इसकी रूप न रेखा॥**

गोस्वामी जी बड़ा प्यारा कह रहे हैं—

**इंद्री द्वार झरोखा नाना। तहँ देवा कर बैठे थाना॥**

यहाँ देवताओं का निवास है।

**इंद्रिन सुरन न ज्ञान सुहाई। विषय भोग में प्रीत सदाई॥**

पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं, पाँच कर्मेन्द्रियाँ। वहाँ पर देवताओं का स्थान है। देखते हैं। पैर पर उपेन्द्र, मुँह में अग्नि, शिश्न पर प्रजापति ब्रह्मा, आँख में सूर्य और चंद्रमा। फिर अंतःकरण की इंद्रियों पर भी स्थान है। अहंकार के शिवजी, चित्त के वासुदेव आदि।

गोस्वामी जी कह रहे हैं—

**इंद्रिन सुरन न ज्ञान सुहाई॥**

इनको जकड़ने में उनकी भी भागीदारी है। हमेशा विषयों की तरफ दौड़ाते हैं। अपने सब्जेक्ट को देखकर एक्टिव हो जाती हैं। स्वादिष्ट खाना देखकर मुँह लार टपकाने लगता है, सुंदर स्त्री देखकर आँखें अटक जाती हैं। गोस्वामी जी आगे कह रहे हैं—

**श्रुति पुराण सद्ग्रंथ उपाई। छूटे न अधिक अधिक अरुझाई॥**

यदि सद्गुरु कृपा करे, तभी निकल सकता है, अन्यथा नहीं। आप विचार करें कि कितने बंधनों से बँधी है! गुरु पार कर देता है।

अनन्त जन्मों से भटकती आ रही है। एक तरफ हम मान रहे हैं कि आत्मा अमर है, शरीर नाशवान है, माया झूठी है, पर फिर भी इनमें उलझे हैं।  
**हरि माया अति दुस्तर, तर न सके कोई जीव॥**  
**मन माया तो एक है, माया मनहिं समाय॥**

जैसे जेलर और संतरी एक हैं, मजाल है कि कोई निकले।  
 आत्मदेव को दोनों ने बुरी तरह जकड़ा हुआ है। गुरु पार कर देता है।  
**गुरु बिन भव निधि तरहिं न कोई। हरि विरंच शंकर सम होई॥**

वो कैसे करेगा?

वो सुरति से जगा देगा। जब जगा दिया तो खेल समझ आयेगा।  
**नाम होय तो माथ नमावे। ना तो यह मन बाँध नचावे॥**

जब नाम की ताकत आएगी, तभी निकल पाएगा।

मेरे शब्द प्रमाणित हैं। आपको मन, माया के खेल समझ में आ रहे हैं। तभी इनकी ताकत कम हो गयी है। बैल को नकेल लग गयी। आप चेतन हो गये। आपके अंतःकरण को नाम से प्रकाशित कर दिया। महाकलिकाल में आप सच बोल रहे हैं। आप सब बुराइयों से लड़ रहे हैं। आप छल, कपट नहीं कर रहे हैं।

**पुरुष शक्ति जब आन समाई। तब नहीं रोके काल कसाई॥**

मन तो आपसे तंग होगा। पहले मन आपके ऊपर था और आप नीचे। अब आप इसके ऊपर हो गये हैं, आपका मन पर होल्ड हो गया है। आप होश में हो गये हैं। दुनिया के लोग मन के नशे में गुम हैं।

एक देहाती मेरे पास आया, कहा कि गाँव के एक पंडित जी को लाया हूँ, वेदों के ज्ञाता हैं, बड़े शिष्य हैं, 6-7 जिलों में मशहूर हैं। इनको थोड़ा समय दो बात करने का। अगर नाम ले लिया तो बहुतों को लायेंगे। मैंने कहा कि लाओ, बात करते हैं। वो आया। मैंने सोचा कि गोष्ठी करेगा। उन्होंने आकर सीधा साष्टांग प्रणाम किया। मेरी हमउम्र का था। मैंने कहा कि कैसे आना हुआ? कहा कि दर्शन की इच्छा हुई। मैंने कहा कि कोई प्रश्न आदि है तो कहो। कहा कि दीक्षा दो, प्रश्न क्या करना है।



मैंने कहा कि आप पहली बार मिले हो, भरोसा है क्या? कहा कि इस आदमी को आपने ब्रह्मस्वरूप बना रखा है। इसे देखकर प्रेरणा हुई कि हम भी ऐसे बनें। हम कभी झूठ भी बोल देते हैं, पर यह कभी झूठ नहीं बोलता है। हमारी वाणी से कभी अपशब्द भी निकल जाते हैं, पर इसका वाणी पर बड़ा ही कंट्रोल है। हमारी नजर कभी स्त्रियों की तरफ भी चली जाती है, पर यह बड़ा पक्का है। यह चरवाहा है। इसे आपने महात्मा बना दिया है। बस, यह विचार आया इसलिए दर्शन की इच्छा हुई। आप मुझे नाम दो। मैंने नाम दिया। वो कई लोगों को लाया। एक दिन 20-25 किताबें खरीद रहा था। मैंने कहा कि इतनी क्या करनी है? कहा कि मैं बाँटता हूँ। मैंने कहा कि मैं अपनी तरफ से 100 किताबें महीने में दूँगा। वो साहिब की भक्ति का बहुत प्रचार करने लगा। सबको साहिब बंदगी बोलने लगा। अब लोग कहने लगे कि पंडित जी पागल हो गया है। **जगत की नजर में भक्त गया। भक्त की नजर में जगत गया।।**

कोई कहता था-पंडित जी, राम-राम तो वो कहता था-साहिब बंदगी। तो लोगों ने कहा कि यह पागल हो गया है।

**सहज जनि जानो साई की प्रीत।।**

इस भक्ति में आना आसान नहीं है।

**कबीर का घर दूर है, जैसे लंबी खजूर।**

**चढ़े तो अमृत पावसी, गिरे तो चकनाचूर।।**

आपके साथ में अद्भुत शक्तियाँ काम कर रही हैं। तभी मन का जोर नहीं चल पा रहा है।

**जा घट नाम न संचरे, सो घट जान मशान।।**

नाम अंतःकरण को चेतन कर देता है। तो वो शत्रु दिखने लगते हैं। आपका संसार से आकर्षण कम हो जायेगा।

**जहां नाम तहां काम नहीं, जहाँ काम नहीं नाम।।**



# तन मन जब एकै रहे हंस कबीर कहाय

---

सुरति माहिं रच्यो संसारा। सुरति करे तब उतरे पारा॥

एक चीज़पूरी दुनिया में सर्वसम्मत है। जितने भी आचार्य, योगेश्वर, तपस्वी हुए, सबने ध्यान को महत्व दिया। आखिर यह ध्यान क्या है? साहिब वाणी में कह रहे हैं—

जो कुछ है सो सुरति है, कहैं कबीर समझाय॥

सुरति ध्यान को कहते हैं। ध्यान से ही तो सब कुछ है। भौतिक रूप से देखें तो ध्यान के बिना कोई काम नहीं हो रहा है। सुनना है तो भी ध्यान चाहिए, देखना है तो भी ध्यान चाहिए, लिखना है तो भी ध्यान चाहिए। इसका मतलब है कि ध्यान एक विशेष चीज़ है। देखते हैं कि यह ध्यान क्या है, यह सुरति क्या है। क्यों सभी ध्यान एकाग्र करना चाहते हैं?

जो हमारा ध्यान है, वो मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार से परे है। मैंने पीछे भी बताया कि राजा जनक ने ज्ञानियों की सभा में कहा कि पल भर में आत्मज्ञान कौन दे सकता है? अष्टावक्र ने कहा कि मैं दे सकता हूँ। जनक ने कहा कि दो। अष्टावक्र ने कहा कि हे जनक, आत्मज्ञान गुरु देता है। इसलिए पहले मुझे गुरु बनाओ। कहा—ठीक है। अष्टावक्र ने कहा कि अपना तन, मन, धन तीनों मुझे दो। कहा—दे दिया। अष्टावक्र ने कहा कि आज से तुम्हारा तन, मन, धन मेरा हुआ। जनक ने कहा—हाँ। अष्टावक्र ने कहा कि यह तन अब मेरा है, तुम मुझे शरीर दे चुके हो।

अब मत सोचना कि शरीर तुम्हारा है। मेरा हो चुका। कहा कि ठीक है। फिर कहा कि तुमने धन भी मुझे दिया। हे जनक, यह महल, यह वैभव, यह सेना अब मेरी हुई। तुम मत सोचना कि ये महल, धन तुम्हारा है। कुछ भी अपना मत समझना। संकल्प करके तुमने मुझे दे दिया। तुम्हारा नहीं है। राजा जनक ने कहा कि दिया। फिर कहा कि मन भी मुझे दिया। मन के चार रूप हैं—मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार। सुनो, सावधान। मैं हुकम देता हूँ कि इस मन से कुछ भी संकल्प मत करना, कोई इच्छा नहीं करना, इच्छा का निरोध कर। मन मेरा है। मैं आज्ञा देता हूँ कि कोई इच्छा नहीं करना। फिर कहा कि यह बुद्धि भी मेरी है। कोई फैसला भी नहीं करना इससे। चित्त भी मेरा है। कुछ याद नहीं करना। और अहंकार से क्रिया होती है, इसलिए कोई क्रिया भी नहीं करना। आँख बंद कर।

आप विचार करें कि इच्छा करना, याद करना, सोचना, क्रिया करना, कोई फैसला करना आदि इनमें हमारी उर्जा लगती है।

कहा, हे जनक, खामोश। देख। बाकी क्या बचा? जनक ने आँख बंद की, कहा कि आत्मज्ञान हो गया। अष्टावक्र ने कहा कि मन, बुद्धि के संकल्प विकल्प के बाद क्या बचा है, देख। पल के बाद कहा कि आँख खोल। राजा जनक ने कहा कि आत्मज्ञान हो गया।

आप थोड़ा विचार करें कि दिन भर दिमाग में संकल्प विकल्प उठते रहते हैं। फिर कभी पिछली बातों पर चिंतन होने लगता है। कभी प्रत्यक्ष की बातों पर चिंतन करने लगते हैं। इन चीजों में ध्यान खो गया। मनमय हो गया। या तो हम इच्छा करते हैं या फैसला करते हैं या याद करते हैं या कुछ क्रिया करते हैं। इन चारों में से एक-न-एक चीज़ होती रहती है। यहाँ पर साहिब ने बड़ा स्टीक शब्द कहा—

**तन थिर मन थिर वचन थिर, सुरति निरति थिर होय।  
कहैं कबीर वा पलक को, कल्प न पावे कोय॥**

इन चारों के रुक जाने के बाद एक शुद्ध चेतना रह जाती है,

जिसमें कोई क्रिया नहीं, कोई चिंतन नहीं, कोई इच्छा नहीं। इन चारों को स्टाप करने के बाद जो बचा, वो क्या है? वो चेतना है। कहा-हे जनक, तुम वो हो।

आत्मा मन, बुद्धि का विषय नहीं। वो अनुभूति का विषय है। जनक इस तथ्य को समझ गया। जो बाकी दिव्य चेतना बची, वो आत्मा है। यही बात है कि सभी एकाग्र होना चाह रहे हैं। यही तो वासुदेव ने कहा कि हे अर्जुन, जो बीत चुका, वो निरर्थक है, कोई महत्व नहीं है उसका। जो भविष्य है, वो अनिश्चित है, कोई पता नहीं है। तू वर्तमान में जी। वर्तमान में जीने का मतलब है कि आत्मा में हो जा। वहाँ आनन्द है। संकल्प-विकल्प से ही दुख-सुख की अनुभूति होती है। दुख-सुख क्या हैं? इच्छाओं की पूर्ति का नाम सुख है और अनपूर्ति का नाम दुख है।

लोग वर्तमान की परिभाषा नहीं जानते हैं। कहते हैं कि जो देख रहे हैं, क्रिया कर रहे हैं, वो वर्तमान है। उसमें रहो। पर नहीं, यह तो भूत और भविष्य है। यदि आप मुझे सुन रहे हैं तो यह भी भूतकाल हुआ। मेरे शब्द आपतक आते हैं। इनमें समय लग रहा है। चाहे एक पल से भी कम समय लग रहा है या एक हजार साल लग रहे हैं, पर दोनों भूतकाल हैं। जब हम किसी को देख रहे हैं तो उसमें भी पहले दिमाग में तस्वीर बनती है, बुद्धि का इस्तेमाल होता है। इसमें भी समय लगता है। इसलिए यह भी वर्तमान नहीं है। यानि इन आँखों से आप जो भी दृश्य संसार में देख रहे हैं, वो भी वर्तमान न होकर भूतकाल है। शब्द कानों तक गये। ब्रेन ने चित्त से पूछा कि क्या है? फिर बताया गया कि क्या है। यानि प्रश्नोत्तर भी भूतकाल है। पर वर्तमान कैसा है? वर्तमान में संकल्प-विकल्प नहीं हैं। वासुदेव ने अर्जुन से कहा कि वर्तमान में जी। पर सभी उसकी ग़लत परिभाषा मान रहे हैं। पर सच यह था कि वर्तमान में चिंतन भी नहीं है, क्रिया भी नहीं है। वर्तमान उसका नाम है। इसी के लिए साहिब कह रहे हैं—  
तन थिर मन थिर वचन थिर, सुरति निरति थिर होय॥

साहिब साफ बोल रहे हैं। जो सुरति है, वो मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार से कतई परे है। सीधी बात हुई कि मन ही सबसे बड़ा व्यवधान डालने वाला हुआ। मन के कारण से वर्तमान में नहीं हो पा रहे हैं। साहिब ने कहा—

**तेरा बैरी कोई नहीं, तेरा बैरी मन॥**

भौतिक संसार में जो भी देख रहे हैं, पाँच तत्व का है। पर सुरति इनसे रहित है। वो नित्य है। मन को पंच भौतिक तत्वों में बोला। मन शून्य में, निराकार में निवास करता है। दिखता नहीं है, पर है। दिख नहीं रहा है, पर मन है। स्थूल रूप से पवन देख नहीं पाते हैं। त्वचा से स्पर्श होता है तो पवन का अनुभव हो जाता है। खुशबू दिख नहीं रही है। नासिका अनुभव करती है। हमारी आत्मा मन का अनुभव करती है। वो दिख नहीं रहा है। आत्मा में ताकत है। सद्गुरु बोध करायेगा। शरीर में कैसा योग है! संकल्प उठा, आपने निश्चय किया। कर्मज्ञानेन्द्रियों को आदेश दिया गया तो क्रिया हुई। आदमी को पता न चला पर क्रिया हुई। आपको कहीं खुजली हुई। त्वचा ज्ञान इंद्रि है। खबर दी। यह स्थूल ढाँचा, पंच भौतिक तत्व, सभी इंद्रियाँ मन में ओत-प्रोत हैं। दिमाग ने मच्छर को नहीं देखा। त्वचा ने स्पन्दन से दिमाग को कहा, बुद्धि को कहा कि कुछ यहाँ पर है। मन को सूचना मिली तो मन ने तपाक से आदेश दिया कि हटाओ। यहां साहिब बड़ी गहरी बात बोल रहे हैं—

**संतो तन खोजे मन पाया॥**

**मन ही तन है इंद्रि मन है॥**

ये समस्त कर्मज्ञानेन्द्रियाँ भी मन है। मन इनमें ओत-प्रोत हैं। जैसे फूल में खुशबू ओत-प्रोत है, तिलों में तेल ओत-प्रोत है, मन इंद्रियों में ओत-प्रोत है। आत्मा को किसी आनन्द से कुछ लेना-देना नहीं है। ये सब कार्य मन के हो रहे हैं। आत्मा सहयोग दे रही है। आत्मा ने अपने को मन मान लिया, अपने को शरीर मान लिया। हालांकि कहन-सुनन

के लिए कहते हैं कि आत्मा है। पर अमलीयामा नहीं पहना पा रहे हैं। क्रियाकलापों में अपने को आत्मा नहीं मान रहे हैं। व्यवहार, आचरण में शरीर ही मानकर जी रहे हैं। देखा, कितना मन का वेग है! मन कितना जबरदस्त है! यह बड़ा कौतुक है कि मनुष्य आत्मा को नहीं समझ पा रहा है। कहाँ गयी है आत्मा? लहरसिंह की आत्मा शरीर में है या कहीं बाहर गयी है। नहीं, इसी में है। न किसी के विसर्जन से चली जाती है, न आहुत से आती है। वो है ही। बहुत बड़ा कौतुक है—

### मुझमें रहकर मुझसे पर्दा ॥

शरीर में आत्मा का अता-पता नहीं चल पा रहा है। आत्म-साक्षात्कार में कोई रुकावट डाल रहा है। इसी में तो है। कहीं चली नहीं गयी है। लेकिन आत्मा की अनुभूति नहीं हो पा रही है। आत्मा जानी नहीं जा रही है। ज़रूर ऐसी कोई शक्तियाँ हैं, जो आत्मा तक नहीं पहुँचने दे रही हैं। ज़रूर कुछ शक्तियाँ हैं, जो बाध्य कर रही हैं कि स्थूल जीवन जिएँ। मृगमृचिका की तरह मन आगे सुख दिखाता है। सूअर की नासिका में गुण है कि दुर्गंध प्रिय लगती है। आपको नहीं लग रही है। पर सूअर का सिस्टम ऐसा है कि दुर्गंध खुशबू की तरह लग रही है उसे। यह उसकी वृत्ति है। संसार का कोई भी पदार्थ नहीं है, जो आत्मा को आनन्द दे सके। चाँद के खोने के बाद चकोर अग्नि में चाँद की कल्पना करके अंगार को चबाता है कि यही चाँद है। इसी तरह मृगमृचिका की तरह संसार की चीज़ों में मनुष्य आनन्द खोज रहा है। यह कौतुक है। साहिब कह रहे हैं—  
पलट वजूद में अजब विश्राम है, होय मौजूद तो समझ आवै॥

बस, हाजिर हो जा इसमें। एक शब्द में कह रहे हैं—

तन रहते मन जात है, मन रहते तन जाय।

कभी तन यहीं होता है, पर मन चला जाता है और कभी मन वहीं रहता है और आप तन से चले जाते हैं।

तन मन जब एकै रहे, हंस कबीर कहाय॥

यानि इसी में हाज़िर रहें। आदमी इसमें हाज़िर नहीं रहता। जहाँ आपका ध्यान है, आप वहीं हैं। दिनभर भागता रहता है, घूमता रहता है। पल भर भी स्थिर नहीं रहता। मन दौड़ता रहता है।

तो यह बहुत बड़ा कौतुक है कि इस असार संसार में सुख की खोज कर रहा है। इस भौतिक संसार में जो सुख मिलेगा, वो इंद्रियों का विषय है। ले देकर अच्छा खाकर मज़ा मिलता है। आप कहते हैं कि मज़ा आ गया। कोशिकाओं को वो अनुभूति ब्रेन ने दी। आत्मा का संबंध नहीं है। कहीं सिनेमा देखने चला जाता है। यह मज़ा आँखों ने दिया। एक ने सवाल किया कि सभी आत्मज्ञान की बात करते हैं। सभी आत्मज्ञानी बने घूम रहे हैं। आखिर हमें कैसे पता चले कि आत्मज्ञानी कौन है? मैंने कहा कि एक चीज़ देखना। जो भी इंद्रियों का आनन्द प्राप्त कर रहा है, उसके लिए चेष्टारत है, वो आत्मज्ञानी नहीं है। इसका मतलब है कि आत्मज्ञानी स्वादिष्ट चीज़ें नहीं खायेगा, मधुर शब्द नहीं सुनेगा, खुशबू से नफरत करेगा क्या? नहीं, ऐसा नहीं है। जो आत्मज्ञानी है, वो अपने आत्म स्वरूप में स्थिर रहता है। पर शरीर के संचालन के लिए जितना चाहिए, वो कर रहा है। दूसरे शब्दों में आत्मज्ञानी किसी भी इंद्रि का आनन्द नहीं लेगा। क्यों? क्योंकि उसे पता चल जाता है कि इस आनन्द के कारण से वो भटक रहा था। इंद्रियों के आनन्द के कारण से अपने निजरूप से दूर था। इसलिए इनमें रहते हुए भी इन चीज़ों में रमता नहीं है।

गेटे ने बड़ा खूब कहा कि कोई भी आदमी किसी को थोड़े समय के लिए बेवकूफ बना सकता है, पर हमेशा नहीं। मैं उदारण देता हूँ। मैंने कहीं एक रिश्ता करना था। लड़का-लड़की दोनों गुरुमुख थे। माँ-बाप राजी थे। मैंने लड़के को कहा कि यह लड़की है, जीवन साथी है, एक बार चुनना होता है, देख लो। उसने नहीं देखा, कहा कि ठीक है। सही में उसने नहीं देखा। बातचीत हुई तो जाते-जाते वो टेढ़ी नज़र से देखकर चला गया। मेरी नज़र पड़ी। कोई भी अपनी वृत्ति छुपा नहीं सकता है।

जो ढोंग करता है, उसके अन्दर आकांक्षा रहती है। सीधी सी बात है। जिस तरह भ्रम वश हम रस्सी को साँप समझकर भयभीत हो जाते हैं और भय यथार्थ साँप को देखने वाला होता है। पर जब हमें मालूम पड़ जाता है कि यह रस्सी है तो उसके बाद यदि हम चाहें तो भी भयभीत नहीं हो सकते हैं। पहले भयभीत हो गये थे, पर बाद में यदि स्वयं मनन से भी साँप मानें तो भी भय उत्पन्न नहीं होगा। इसी तरह आत्मज्ञानी चाहकर भी फिर संसार के पदार्थों में रम नहीं पाता है। क्योंकि वो मानने लगता है कि आत्मरूप से हटाने वाली ये ही चीज़ें हैं। साहिब ने एक बात बड़ी अच्छी कही—

चलो चलो सब कोई कहे, पहुँचा बिरला कोय॥  
 पहुँचा बिरला कोय, बीच में दुर्गम घाटी दोय॥  
 एक कनक और कामिनी, दुर्गम घाटी दोय॥

साहिब कह रहे हैं कि सभी कहते हैं कि परमात्मा के पास चलना है, पर पहुँचता कोई कोई है। क्यों? क्योंकि बीच में दो दुर्गम घाटियाँ हैं। वहाँ स्लिप खा जाता है। ये दुर्गम घाटियाँ हैं—कनक और कामिनी। कनक यानी रूपया-पैसा और कामिनी यानी नारी। सवाल उठता है कि ये क्यों रुकावट हैं? यही आपको जन्म दिया, घर में यही बैठी है, आपको रोटी खिला रही है, आपका पोषण कर रही है। क्यों है दुर्गम घाटी? आकर्षण है जबरदस्त। यदि चिंतन करेंगे तो कुछ आकर्षण नहीं है। पर आकर्षण है। जैसे आपके हाथ-पाँव हैं, ऐसे इसके हैं। जैसे आपके मल-मूत्र के द्वार हैं, ऐसे इसके हैं। पर परमात्मा की प्राप्ति में क्यों बाधक है? आप खाने की चीज़ देखते हैं तो मुँह में पानी आ जाता है। पत्थर देखकर तो मुँह में पानी नहीं आता न! पत्ते देखकर भी नहीं आया। क्योंकि आप कई बार खा चुके हैं। इस रस की अनुभूति इंद्रियों से है। इसलिए पानी पटका दिया। ये दो क्यों आकर्षित हैं, बताता हूँ। दुनिया के अन्दर इंद्रिय आनन्द है। पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं, पाँच कर्मेन्द्रियाँ। हरेक का आनन्द है।



अच्छा गीत सुनते हैं तो कान को आनन्द आता है। पर आप इस आनन्द में अपना आपा नहीं खो देते हैं। कहीं स्वादिष्ट खाना खाते हैं तो भी आनन्द आता है, पर एक सीमा तक का है। अपना आपा नहीं खोते हैं। कभी गर्मी में ए.सी. वाले कमरे में जाकर बैठते हैं तो वहाँ भी आनन्द मिलता है, पर वहाँ भी अपना आपा नहीं खोते हैं। भौतिक इंद्रियों में सबसे बड़ा आनन्द विषय इंद्रि का है। ये बाकी इंद्रियों के आनन्द से बड़ा है और इसका साधन स्त्री है। इसलिए यह आकर्षित है।

कोई कहता है कि घूमने जाना है, कोई कहता है कि स्वादिष्ट खाना है, कोई कहता है कि सिनेमा देखने जाना है। जो आत्मज्ञानी है, वो कोई मनोरंजन नहीं करेगा। वो अपने में रहता है।

### उदासीन जग रहो गुसाईं ॥

वो हमेशा संसार को दुखों का घर समझता है। आप जेल जाना चाहते हैं क्या? नहीं। क्योंकि वहाँ दिक्कत है। इसी तरह विषयों में दिक्कत है। इंसान इस दुनिया में क्यों जी रहा है? इंसान दुनिया में एक सुख की तलाश में जी रहा है। वो सोचता है कि सुख मिलेगा।

**कहत कबीर सुनो भाई साधो, रुई लपेटी आग है ॥**

अब धन की प्रासंगिकता क्या है? पैरों की प्रासंगिकता है कि चलने में काम आते हैं। आदमी बहुत पैसा क्यों चाहता है? हमारे पूर्वज पैसे के पीछे नहीं दौड़ रहे थे। हमारे भौतिक संसाधन पैसे से पूरे हो जाते हैं। क्या चीज़ नहीं मिल जाती है! बेटा मर जाए तो इंसान पागल नहीं हो जाता है, पर पैसा चले जाने से पागल हो जाता है। इसका इतना आकर्षण है। इसका आकर्षण बचपन से साथ में है। बच्चा बंदगी करने आता है तो वो अपना सिर तो पाँव में रख देता है, पर पैसा नहीं रखना चाहता है। धन से इसलिए प्रेम है कि सभी चीज़ें मिल जाती हैं। यह सभी विलासिताओं का साधन है। यदि पैसे में रुझाव है तो आत्मज्ञानी नहीं हो सकता है। रोटी तो मैं भी खा रहा हूँ, मकान में मैं भी रह रहा हूँ, कपड़े मैंने भी पहने

हैं, पर बड़ी भिन्नता है। मेरा भोजन आप नहीं खा सकते हैं। वो निस्वाद है। मैं जानता हूँ कि हर मजे में सज़ा है।

**बच के निकल जा इस बस्ती से॥**

तो इंसान ने पूरी तवज्जो इसमें लगा रखी है। बूढ़ा भी बाल काले कर रहा है कि कोई आकर्षित हो जाए। मन बूढ़ा नहीं हो रहा है न! रहन-सहन, विवेक, विचार मनुष्य को यह चीज सिखाता है। इंसान एक चीज़ के लिए जी रहा है—मजे के लिए। कभी भी यह पिपासा नहीं बुझती है। जितना भोगों में डूबोगे, उतनी पिपासा बढ़ती जाएगी और अंत में कष्ट मिलेगा। तभी कह रहे हैं—

**कहें कबीर सुनो भाई साधो, रुई लपेटी आग है॥**

आप किसी को देखकर कहते हैं कि अच्छा है। मैं नहीं कहता हूँ। मैं अच्छे-बुरे का मूल्यांकन इंद्रियों से करता हूँ कि कितना नियंत्रण रख रहा है।

**इंद्री साधे साध कहाय॥**

मैं देख रहा हूँ कि अपने पर कंट्रोल कितना है। साहिब ने कहा—  
**काम क्रोध लोभ मोह अहंकार। साधु सोई जो इनको मारा॥**

इंसान की वृत्तियाँ अलग-अलग हैं। मैं नियंत्रण रख रहा हूँ तो पढ़ भी रहा हूँ। जो पढ़ा लिखा है तो दूसरे पढ़े लिखे को जानता है। जाहिल है तो उसे भी समझता है। मैं देखता हूँ। मेरे पास बहुत तरह के लोग आते हैं। कुछ सेवा वाले भी आते हैं, कुछ समर्पित भी हैं। कुछ सेवा करके बढ़ियाई चाहते हैं कि दूसरों से मान मिले। कुछ व्यवसाय के लिए आते हैं। लेकिन शील के कारण मैं किसी से नहीं कहता हूँ। दोष समझकर अपमान नहीं करता हूँ।

तो मनुष्य केवल एक बात के लिए जी रहा है और वो है इंद्रियों का आनन्द। अच्छा पहन रहा है, अपने को सुंदर बनाने का भरसक प्रयास कर रहा है। अच्छा, यह भावना आपमें कैसे समाई? हम मूल चीज़ की

तरफ चलते हैं। ज़रूर अंतःकरण में सूक्ष्म रूप से वासना का प्रस्फुटन होता है। एक स्थूल वासना होती है और एक सूक्ष्म वासना। वासना इच्छा से होती है। यहाँ साहिब एक शब्द कह रहे हैं—

**चाह मिटी चिंता मिटी, मनवा बेपरवाह।**

**वो ही शाहनशाह है, जिसको नाहिं चाह॥**

इसका एक और कारण है और वो यह कि आत्मा बहुत सुंदर है। यह शाही है। कंगाल भी हो जाए, पर शाही आदमी का शाहीपना समाप्त नहीं होता है। आत्मा है ही शाही। वो है ही अति सुंदर। इसलिए शरीर में आकर इसे ही सुंदर बना रही है और संतुष्ट नहीं है, क्योंकि उस सुंदरता तक शरीर की पहुँच नहीं है।

तो आत्मज्ञानी खाता भी है, देखता भी है, पर उसका देखना और होता है। कुछ स्त्री को देखते हैं कि वो शरमा जाती है। पर आत्मज्ञानी दूसरी नज़र से देखता है। यह अंतर होता है। बाकी स्वाद के लिए खाते हैं, पर आत्मज्ञानी शरीर के लिए अनिवार्य उर्जा के लिए खाता है। उसके सब क्रियाकलापों में बहुत अन्तर है।

**यह माया है दो भांति की, जो कोई जान पाय।  
एक मिलावे पीव से, एक नरक ले जाय॥**

यही पैसा नशाखोरी में लगाओ तो नरक का रास्ता है, पर यही परमार्थ में लगाओ तो कैसा है! इंद्रियों का प्रयोग आत्मज्ञानी आत्मा के कल्याण के लिए करता है। वो कोई मज़ा नहीं लेता है। वो विषय-वासना से दूर रहता है।

**जब तलक विषयों से यह दिल दूर हो जाता नहीं।  
तब तलक साधक विचारा चैन सुख पाता नहीं॥  
कर नहीं सकता है जो एकाग्र अपनी वृत्तियाँ।  
उसको सपने में भी परमात्म नजर आता नहीं॥**

सही बात यह है कि देखने का साधन सिर्फ आँखें हैं, चलने का

साधन सिर्फ पैर हैं, सूँघने का साधन सिर्फ नासिका है। सच यह है कि परमात्मा को देखने का एक ही साधन है—ध्यान। यह कहीं घूम रहा है। यह दुनिया में घूम रहा है। आत्मज्ञानी अपने स्वरूप में रहता है। उसे वहीं आनन्द मिलता है। वो अपने स्वरूप में लीन हो जाता है।

**पलट वजूद में अजब विश्राम है ॥**

आत्मा के अन्दर आनन्द में समा जाता है। बाहर के जो आनन्द हैं, उनका अंत कष्टमय होता है। आत्मा तो आनन्द स्वरूप है। यह मानव चोला मिला है, इसे गँवाना नहीं है।

**अगर है शौक मिलने का, तो हरदम लौ लगाता जा।  
मिटकर खुशनुमाई को, भस्म तन में रमाता जा ॥**

फिर दिक्कतें कुछ नहीं रह जायेंगी। अगर आप दुनिया में सुख ढूँढ़ रहे हैं तो आत्मा के करीब नहीं हैं। दुनिया का सुख छोड़ना है।

**कबीर मन तो एक है, भावे जहाँ लगाय।  
भावे गुरु की भक्ति कर, भावे विषय कमाय ॥**

इस तरह एक आत्मज्ञानी आत्मनिष्ठ है। उसकी धुन दुनिया में नहीं है। वो अपने में है। वो सुख दुख से विचलित नहीं होता है।

**एक रंग में जो रहे, ऐसा बिरला कोय ॥**

एक आत्मज्ञानी को किसी चीज़ की जरूरत नहीं रहती है। जब राम जी को वशिष्ठ मुनि ने कहा कि हे राम, आत्म-साक्षात्कार हो जाने पर इंसान भवसागर से पार हो जाता है तो राम जी ने प्रश्न किया कि हे गुरुवर! आत्मा का ऐसा क्या स्वरूप है कि उसे मात्र देखने से संसार सागर से पार हो जाता है। वशिष्ठ मुनि ने कहा कि हे राम! तब जगत की भ्रांति समाप्त हो जाती है। जिस तरह रस्सी में सर्प की कल्पना करके भयभीत होता है। अगले पल पता चलने पर भय समाप्त हो जाता है। इसी तरह आत्मा को देख लेने के बाद जगत का आकर्षण समाप्त हो जाता है।

मेरा मानना है कि आप आत्मज्ञानी हैं। आपको शंका हो सकती

है, पर मुझे नहीं। आपको संसार में अब मज़ा नहीं आ रहा है। अब संसार के बाकी लोगों से अलग हो गये हैं। आप यह बात बोलें या नहीं बोलें, पर आप दुनिया के लोगों से निराले हो गये हैं। दुनिया मन में गुम है। आप मन में समाए नहीं हैं। आप मन से अलग हैं। आप होश में हैं। यह प्रयास आपका नहीं था। हमने आपको बदल दिया है।

जब मैं था तो गुरु नहीं, अब गुरु हैं मैं नाहिं॥

कुछ जो नहीं हो पाए, उसका कारण है कि उन्होंने जगह नहीं दी।

पारस से परसा नहीं, रहा लोह का लोह॥

मुझे आपका सहयोग चाहिए।

पहले दाता शिष्य भया, जिन तन मन अरपा शीश।

पीछे दाता गुरु भया, जिन नाम दिया बख्शीश॥

साहिब कह रहे हैं—

गुरु सत्य नाम सत्य आप सत्य जो होय।

तीन सत्य जब एक हों, विष से अमृत होय॥



जो गुरु गृहस्थ में रहकर अपने को संत कह रहा है, वो आपसे धोखा कर रहा है। वो कभी भी संत नहीं हो सकता है। एक संत चाहकर भी विषय नहीं कर सकता है। जो विषय आनन्द ले रहा है, वो माया में फँसा है। उसे सच्चे आनन्द का स्वाद अभी नहीं मिला है। फिर जो परमात्मा में मिल जाता है, वो उसी का रूप हो जाता है, उसके लिए सब बच्चे हो जाते हैं। इसलिए बाप अपनी बेटी से शादी नहीं कर सकता, उससे विषय नहीं कर सकता।

# मैं हंस चेतावन आया

साहिब संत थोड़ा थे। संत सम्राट थे। संतों की खानि थे। संतों की धारा उन्हीं के द्वारा चली। उनका व्यक्तित्व बड़ा निराला था। विरोधी तबके ने उनका नामोनिशान न रहे, यह प्रयास किया। गंदी कहानियाँ ढूँढ़ ली। ताकि लोग उनके पास नहीं पहुँचें। काशी का लहरतारा तालाब 500 एकड़ में था। उस तबके ने उसे गंदगी के ढेर के रूप में तबदील कर दिया। वो तबका बहुत शातिर है। वो समाज की नस को जानता है। साहिब ने आकर बड़ी बुलंद आवाज़ में उससे समाज को चेतन करने की कोशिश की। समाज को सतर्क किया, आहुत किया। समाज को जगाया कि बचो। कबीर साहिब की वाणी एक चेतावनी है। उन्होंने अपनी वाणी में समाज को सावधान किया। कुरीतियों से आगाह किया। धर्म के छल, कपट को, धोखे को बड़े बेहतरीन तरीके से उजागर किया। भाइयो, देखते हैं कि साहिब कहाँ से आए। उनका लक्ष्य क्या था? साहिब अपने एक शब्द में बोल रहे हैं।

**संतो अविगत से चले आए, कोई भेद मर्म न पाए॥**

कह रहे हैं कि तीन लोक से परे एक देश है, मैं वहाँ से आया।  
**न हम रहले गर्भवास में, बालक होय दिखलाया॥**

कह रहे हैं कि मैं गर्भ में रहा ही नहीं। मेरा शरीर रज-वीर्य से पैदा नहीं है।

**कक्का केवल नाम है, बब्बा वरण शरीर।**

**ररा सबमें रमि रहा, तिसका नाम कबीर॥**

कबीर शब्द की परिभाषा ही यही है कि जो फॉर्मलेस है, जिसका शरीर नहीं है। पंच भौतिक तत्वों से परे। कह रहे हैं कि मैं माता के पेट में रहा ही नहीं।

अब उस तबके का खेल देखो। समाज का हर एक वर्ग यह जानता है कि कबीर साहिब का जन्म एक जुलाहे के घर हुआ। सच्चाई कहीं इससे बहुत दूर है। कह रहे हैं—

काशी तट सरोवर ऊपर, तहाँ जुलाहा पाया॥  
ना हमरे मात पिता, ना गिरही न दासी।

कह रहे हैं कि मेरी कोई पत्नी नहीं है। न कोई मेरा माता-पिता है।

नीरू के घर नाम धराया, जग में हो गयी हाँसी॥  
काशी में हम प्रगट भये, रामानन्द परधाया।  
कहत कबीर सुनो भाई साधो, मैं हंस चेतावन आया॥

माघ सुदी एकादश को सद्गुरु कबीर साहिब का अवतरण सुबह अमृतवेले में लहरतारा तालाब में हुआ। कैसे हुआ? एक अद्भुत प्रकाश शून्य से उतरा। कमल के पत्तों पर बालक के रूप में परिवर्तित हो गया। उस समय रामानन्द जी के शिष्य अष्टानन्द जी लहरतारा तालाब के किनारे ध्यान कर रहे थे। उन्होंने यह प्रकाश उतरते देखा। अपने गुरु को जाकर बोला कि आज मैंने आकाश से एक प्रकाश उतरते देखा। रामानन्द जी ने कहा कि उसका संदेश पूरे विश्व को मिलेगा। संयोगवश उसी दिन नीरू गौने में अपनी पत्नी को विदा करके ला रहा था। नीमा को प्यास लगी। जैसे ही पानी पीने तालाब में गयी तो एक सुंदर बालक को कमल के पत्तों पर हाथ-पाँव मारते देखा। उसने बच्चे को उठाया और ले आई। नीरू ने देखा तो कहा कि यह क्या है? कहा कि बहुत ही सुंदर बालक

कमल के पत्तों पर था। नीरू ने कहा कि इसे फेंक दो। आज ही मैं तुम्हें मुकलावे में लेकर चल रहा हूँ। नीमा ने कहा कि इतना सुंदर बालक है, मैंने नहीं छोड़ना है। नीमा नहीं मानी तो नीरू उसे मारने लगा। मजबूर होकर के नीमा उस बालक को छोड़ने जा रही थी।

**तब साहिब हुंकारिया।।**

तब साहिब ने कहा—

**पूर्व जन्म की प्रीति से, तोहि मिला हूँ आप।  
मुक्ति संदेश सुनाऊँगा, ले चलो अपने साथ।।**

कहा कि हे नीमा, पिछले जन्म की भक्ति के कारण मैं तुम्हें मिला। यह पिछले जन्म की प्रीति कैसी? आइए, उस तरफ चलते हैं। द्वापर युग में सुपच सुदर्शन साहिब के भक्त थे। भंगी का बच्चा था वो। हरिजन। वो बहुत बड़ा भक्त था। साहिब से दीक्षा ली। साहिब चारों युग में आए।

**युगन युगन हम यहाँ चले आए। जो चीह्ना सो लोक पठाए।।**

उसने साहिब से कहा कि मेरे माता पिता को भी भक्ति में लगाओ। लेकिन उनके माता पिता ने भरोसा नहीं किया। उनका अगला जन्म हुआ। एक ब्राह्मण-ब्राह्मणी का। उस जन्म में भी उन्होंने साहिब की भक्ति नहीं मानी। फिर तीसरा जन्म हुआ। उसमें भी स्वीकार नहीं किया। चौथे जन्म में नीरू नीमा के रूप में वही आए। साहिब ने उन्हें बतलाया कि इस कारण से मैं तुम्हारे घर आया हूँ। ले चलो। अब छोटे बालक को बोलते देख दोनों को थोड़ी आस्था भी हुई। ले कर के चल पड़े। यह मैं कोई कहानी या उपन्यास की बात नहीं बता रहा हूँ। यह परम सत्य है। यह सत्य मैं प्रमाणित करके बताऊँगा। जब साहिब को लेकर घर पहुँचे तो काजी और पंडितों को बुलाया। पहले लोगों ने बड़ी मखौल उड़ाई। नीमा नीरू समझाते रह गये कि ऐसे-ऐसे यह तालाब में मिला। अब हमें यह मालूम नहीं है कि यह हिंदू है या मुसलमान। इसलिए दोनों



को बुलाया कि भाई इसका नामकरण करो। वो दोनों अपने पोथी-पत्र खोलने लगे। तब साहिब खुद बोले-हे पंडितो और मौलवियो! मेरा नाम रखने की आवश्यकता नहीं। मेरा नाम कबीर है। 'कबीर' शब्द का अर्थ है-कायावीर। जिसको शरीर नहीं। मौलवियों ने कहा कि यह नाम तो ईश्वर का है। हे नीरू! यह काफ़िर है, इसे मार डालो। नीरू ने अंदर ले जाकर बालक को कई छुरे पेट में लगाए। छुरा आर-पार हो जाता था। मरे नहीं, नीरू डर गया। साहिब ने कहा-हे नीरू! न मेरी कोई माँ है, न जन्म हुआ है। यह मेरा शरीर तुम्हारे देखने के लिए है। मेरा हाड-माँस लौथड़ा नहीं। नीरू डर गया। छुरी फेंक दी। साहिब ने छोटी उम्र से ही परम तत्व की बात करनी शुरू की। तब लोग पूछने लगे कि गुरु के बिना ज्ञान नहीं होता, तुम्हारा गुरु कौन है? तू तो निगुरा है। कबीर साहिब ने कहा कि यह तो बात ठीक कह रहे हैं। अब गुरु किसको करें! तब रामानन्द जी वैष्णव भक्ति के थे। सोचा कि बाकी से ये ठीक हैं। माँस नहीं खा रहे हैं। गंदे काम नहीं कर रहे हैं। पर रामानन्द का नियम था कि हरिजन को देखते भी नहीं थे। छूते भी नहीं थे। साहिब ने एक-दो बार कहा, पर वो नहीं माने। पर्दा लगाकर तब हरिजन से बात करते थे। इतनी छुआछूत थी। तब रामानन्द जी सुबह अमृतवेले में गंगा जी पर स्नान करने जाते थे। साहिब छोटा बालक बनकर सीढ़ियों पर लेट गये। रामानन्द जी जब आए तो सर पर खड़ाऊँ लगी। बालक रोने लगा। रामानन्द जी नीचे झुके और सिर पर हाथ फेरकर कहा कि राम-राम कह, रो मत। उनकी गले की माला भी साहिब के गले में गिर गयी। सुबह साहिब ने वैष्णव रूप बनाया। जो फोटो आप साहिब की देखते हैं, वो वैष्णव रूप की है। माला, तिलक आदि। लोगों ने देखा तो पूछा कि क्या बात है आज? साहिब ने कहा कि मैंने रामानन्द जी को गुरु कर लिया है। लोग रामानन्द जी के पास गये और कहा कि आपने कबीर को दीक्षा दी है? रामानन्द जी ने कहा कि नहीं। वो कहने लगे कि वो तो कह रहा है कि आपने

दीक्षा दी है। रामानन्द जी ने कहा कि बुलाओ। साहिब को बुलाया तो रामानन्द जी ने पर्दे में पूछा कि मैंने तुम्हें कब दीक्षा दी? साहिब ने कहा कि सुबह ही तो आपने मुझे गंगा किनारे सीढ़ियों पर दीक्षा दी थी, राम-राम बोलने को कहा था। रामानन्द जी ने कहा कि वो तो छोटा बालक था। साहिब ने वही रूप बना लिया और पूछा कि क्या यही बालक था। तब रामानन्द जी को विश्वास हो गया कि यह कोई महापुरुष है और उन्होंने साहिब से पर्दा हटा लिया और सबके सामने अपना शिष्य स्वीकार किया।

साहिब ने समाज को कुरीतियों से सतर्क किया। पाखंडी तबके से समाज को सावधान किया। 120 साल अनादि ब्रह्म का संदेश समाज को दिया। समाज को साहिब ने और क्या दिया? समाज को चेतन किया। महान समाज सुधारकों में उनका विशेष स्थान है। अहिंसा के प्रति उनके विचार उत्तम हैं। किसी को नहीं मारना।

जीव न मारो बापुरा, सबके एकै प्राण।  
हत्या कबहुँ न छूटती, कोटि सुनो पुराण॥

साहिब ने समाज का सर्वांगीण विकास अपनी वाणी में किया। समाज को चेतन किया। समाज को जागरुक किया कि परमात्मा तुझमें है। सबसे पहले समाज सुधार किया, कुरीतियों से बचाया। उनके शब्द आत्मवृत्ति की ओर ले चल रहे हैं।

तू मौको कहाँ ढूँढ़े रे बंदे, मैं तो तेरे पास में॥  
ना मैं जप में ना मैं तप में, नहीं व्रत उपवास में॥  
क्रिया कर्म में मैं न रहता, नहीं योग सन्यास में॥  
ना मैं काशी ना मैं मथुरा, नहीं काबे कैलाश में॥  
खोजी होय तुरत मिल जाऊँ, एक पलक तलाश में॥  
कहत कबीर सुनो भाई साधो, मैं रहता तेरे पास में॥

साहिब ने निष्पक्ष वाणी दी। उनके सभी शब्दों में निष्पक्षता है।

किसी धर्म की स्थापना नहीं की। किसी जाति की हिमायत नहीं की। आप देखते हैं कि लोग जातियों में, धार्मिक संकीर्णताओं में जुड़े हुए हैं। पर साहिब की वाणी में ऐसा नहीं है।

**कबीरा खड़ा बाजार में, सबकी माँगे खैर।  
ना काहू से दोस्ती, ना काहू से वैर॥**

साहिब ने तत्व की बात मनुष्य को समझाई। एक आदमी ने मुझसे पूछा कि महाराज, कबीर साहिब से पहले किसी ने परमात्मा का संदेश नहीं दिया? हम उन्हीं की बात का अनुकरण क्यों करें? मैंने कहा कि बड़ी अच्छी बात है। यदि हम साहिब के भक्ति पदों की तरफ देखते हैं, रूहानियत की तरफ देखते हैं तो भी लाजवाब है। समाज में समता की बात की। कबीर साहिब ने व्यक्ति को जगाया। किसी बिरादरी को नहीं जगाया। किसी धर्म को जगाने नहीं आए। न धर्म को जगाया, न जाति को जगाया, न बिरादरी को जगाया। व्यक्ति को जगाया। हरेक मनुष्य को जगाया।

**मानुष की एक जाति पछान॥  
एक ही जाति सकल संसारी॥  
एक ही राह से सब जग आया। एक ही में पुनि सबै समाया॥**

मैंने कहा कि भक्ति क्षेत्र में साहिब ने जो क्रांति की, जो कुछ कहा, इससे पहले किसी ने नहीं कहा। कुछ भिन्न चीजें बोली साहिब ने। वो आगे चलकर के भक्ति की एक धारा बनी, एक दिशा बनी, और संतत्व बना। साहिब कह रहे हैं—

**तीन लोक प्रलय कराई। चौथा लोक अमर है भाई॥**

गण गंधर्व आदि सब तीन लोक की बात किये। साहिब ने चौथे लोक की बात कही। यह पहले किसी ने नहीं कहा। हम आज वैज्ञानिक युग में जी रहे हैं। पता है, वैज्ञानिकों ने कितनी-कितनी जानकारीयाँ ले ली हैं। तो हम विवाद क्यों कर रहे हैं, झगड़ा क्यों कर रहे हैं। हमें सुनना

होगा न, समझना होगा न! भक्ति की अगर कोई ऐसी धारा मिली तो लड़ाई छोड़कर विचार करना होगा न! हम क्यों लड़ें? यह मूर्खता नहीं है क्या! इस ब्रह्माण्ड को भी अनादि कहते हैं। ब्रह्माण्ड का अर्थ है कि जिसका लगातार विस्तार होता जा रहा है, जो फैलता जा रहा है। इसलिए इसे बेअंत बोला। पर यह भी अनादि सा अंत है। एक दिन खत्म हो जाएगा। आओ बताता हूँ, कैसे। आपको सुनकर आश्चर्य होगा कि इस ब्रह्माण्ड का विस्तार एक मिनट में एक करोड़ 80 लाख कि.मी. हो रहा है। यह फैलता ही जा रहा है, बढ़ता ही जा रहा है। दुनिया में हरेक चीज़ बढ़ रही है। और जो कुछ भी बढ़ेगा, खत्म हो जाएगा। पेड़ बढ़ता जाता है, बढ़ता जाता है, बढ़ता जाता है। बढ़ने की एक पराकाष्ठा है। बढ़ने के बाद कम होना शुरू हो जाता है। आप कहेंगे कि बाहू महाराज, किसी पेड़ को छोटा होते नहीं देखा। कम होता है। उसकी पत्तियाँ कम होती जायेंगी, उसकी टहनियाँ सूखती जायेंगी। धीरे-धीरे कुम्हलाता जाएगा। क्यों? उसकी जड़ों में अपना भोजन खींचने की ताकत खत्म होती जाएगी। आदमी बूढ़ा क्यों होता है? एक ही कारण से होता है। आदमी का हाजमा बिगड़ता है, तब होता है। आँतें भोजन हजम करने की क्षमता खो देती हैं। आदमी बूढ़ा हो जाता है। इस तरह पेड़ खत्म हो जाते हैं। इंसान भी बढ़ता जाता है, बढ़ता जाता है, बढ़ता जाता है। फिर घटना शुरू होता है। पत्थर फेंकते हैं, जाता जाता है, जाता जाता है, फिर एक बिंदु पर पहुँचने के बाद नीचे आता है और आकर के ज़मीन से लग जाता है। दुनिया में जितने भी महापुरुष हैं, उनका विकास भी 35 साल तक हुआ। 35 साल के बाद आदमी घटना शुरू होता है। आप कहेंगे कि हमने तो किसी आदमी को साढ़े 5 फुट से 5 फुट होते नहीं देखा। कैसे घटेगा! आँखों की रोशनी खत्म होने लगेगी, बाल सफेद होना शुरू हो जाते हैं, दाँत गिरने लग जाते हैं, कानों से सुनना कम होने लग जाता है। यह घटना शुरू होता है। और एक दिन घटते-घटते बिलकुल घट जाता है, मर जाता है।

.... तो साहिब ने एक आध्यात्मिक क्रांति लाई। सब चौंक गये। जिनकी पुरानी दुकानें चल रही थीं, उनको व्यवधान लगा। उन्होंने अमर लोक का संदेश दिया। उनके निर्गुण पदों में उस देश का जिक्र आता है।  
**मरहमी होय सो जाने संतो, ऐसा देश हमारा है।  
 बिन बादल जहाँ बिजुरी चमके, बिन बादल उजियारा है॥**

उस देश की महिमा साहिब ने अपनी वाणियों में की। पर आपको यह सुनकर हैरानी होगी कि इस समय दुनिया के अंदर 50 करोड़ लोग हैं, जो संतों की, साहिब की विचारधारा का अनुकरण कर रहे हैं। लोग समझदार हुए, समझने लगे। साहिब ने कहा कि यह आत्मा उस देश से आई है। जब तक वापिस आप वहाँ नहीं पहुँचेंगे, संसार सागर से पार नहीं हो सकेंगे, जन्म मरण से छुटकारा नहीं होगा। साहिब ने यह थोड़ा न कहा कि चार मुक्तियाँ नहीं हैं। कह रहे हैं कि चार मुक्तियाँ हैं, लेकिन चारों मुक्तियों से पुनर्जन्म है। फिर भवसागर में आना होता है।  
**तहँ के गये बहुरि न आवे, ऐसा देश हमारा है।  
 अवधू बेगम देश हमारा है॥**

वहाँ जन्म-मरण नहीं, वहाँ माया-काया नहीं। वहाँ ये सब चीजें नहीं हैं। वो निर्मल देश है। जब तक यह आत्मा वहाँ नहीं पहुँचेगी, इसका कल्याण नहीं हो सकता है। उन्होंने किसी का विरोध नहीं किया। उस अमर-लोक का जिक्र किया। सभी भक्तियों में, सभी धर्मों में साहिब की अपनी एक जगह है। आज सगुण भक्ति वाले भी साहिब की वाणी ले रहे हैं। योगियों में वो महायोगेश्वर का स्थान रखते हैं। देखो, कैसे पूरे ब्रह्माण्ड का खेल बता रहे हैं!

**खेल ब्रह्माण्ड का पिंड में देखिया, जगत की भ्रमणा दूर भागी।  
 बाहरा भीतरा एक आकाशवत्, सुषुम्ना डोर तहाँ पलट लागी॥**

कह रहे हैं कि पूरा ब्रह्माण्ड पिंड में देखा।

**पवन को पलटकर, शून्य में घर किया॥**

ये वाणियाँ इंगित कर रही हैं कि महान योग का गुण था उनमें। कह रहे हैं—

इड़ा पिंगला सुषुम्ना सम करे।  
अर्द्ध और उर्द्ध विच ध्यान लावै।  
कहैं कबीर सो संत निर्भय हुआ, जन्म औ मरण का भ्रम भावै॥

आजकल योग का काफी प्रचार आप देख रहे हैं। योग कमाई का साधन भी हो गया। हम योग के खिलाफ नहीं हैं। पर योग का हमारी आत्मा से संबंध नहीं है। इसलिए उस समय के महान योगेश्वर, लोगों से भी कबीर साहिब की गोष्ठियाँ हुईं। शरीर को योग की शक्ति से वज्र बना दिया था। लेकिन आखिर तो शरीर मिटेगा ही न। शरीर को स्वस्थ रखना आवश्यक है, बड़ा आवश्यक है।

### प्रथम स्वर्ग नीरोगी काया॥

लेकिन अगर आप सोचें कि योग से परम तत्त्व की प्राप्ति कर लें तो यह नहीं होगा। 6 योगेश्वरों में गोरखनाथ महान योगी माने गये। उनको साहिब कह रहे हैं—

इड़ा विनशे पिंगला विनशे, विनशे सुखमन नाड़ी।

प्राणायाम ठीक है। कुंभक, रेचक क्रियाएँ ठीक हैं। लेकिन इनका संबंध केवल हमारे स्नायुमंडल से है। हमारी आत्मा से नहीं है। हम स्वांसा में सुमिरन कह रहे हैं। इसमें दो चीजें आ जाती हैं। योग भी आ जाएगा, भक्ति भी आ जाएगी। मनुष्य जो भी स्वांसा ले रहा है, अधूरी है। आप जो भी काम करते हैं, एकाग्रता से करें। यदि दाँत साफ कर रहे हैं, तो एकाग्रता से करें। यदि खाना खा रहे हैं, तो भी एकाग्रता से खाएँ। नहीं तो पाचन क्रिया ठीक नहीं हो पाएगी। जो भी काम करें, एकाग्रता से करें। जो स्वांसाएँ आप वैसे ले रहे हैं, ये काफी नहीं हैं। स्वांस एकाग्रता से लो। अधूरी स्वांस नाभि चक्र तक नहीं पहुँचती है। आप स्वांस लें, एकाग्रता से लें। आप स्वांस लें, नाभि चक्र तक आए। इसलिए सुमिरन

में भी स्वांस, नाम, ध्यान एक करना बताया। साहिब कह रहे हैं—

सकल पसारा मेटि कर, मन पवना कर एक।  
ऊँची तानो सुरति को, तहाँ देखो पुरुष अलेख॥

इसलिए उस समय के योगियों में भी कबीर साहिब का स्थान बहुत ऊँचा है। कवियों में कविप्रवर। उन्होंने उस देश की बात की। कहा कि हर इंसान के पास में उस देश में जाने की क्षमता है। परा तत्व की बात की। आखिर उस देश में हम कैसे पहुँचें? वाह, कबीर साहिब की वाणी में बड़ा वज्रन है। वो क्या कह रहे हैं—

कोटि जन्म का पंथ था, गुरु पल में दिया पहुँचाय॥

यह करोड़ों जन्मों का पंथ था। यह क्षमता कहाँ से आएगी? चार तरह की मुक्तियों को प्राप्त करने के सूत्र दिये हैं, वो तो आप अपनी कमाई से, अपने परिश्रम से कर सकते हैं। लेकिन अमर लोक की प्राप्ति बिना सद्गुरु के नहीं होगी। इसलिए साहिब ने एक शब्द का सृजन किया—सद्गुरु। यह शब्द पहले नहीं था। गुरु और सद्गुरु में अन्तर है। तीन लोक की उपासना देने वाला, रहस्य देने वाला गुरु है।

सतपुरुष को जानसी, तिसका सतगुरु नाम॥

साहिब ने चौथे लोक की बात कही। अब यह गुरु कैसे पहुँचायेगा उस देश में?

बिन सतगुरु पावे नहीं, कोई कोटिन करे उपाय॥

यूँ तो सगुण भक्ति में भी गुरु का महत्व है। निर्गुण भक्ति में भी है। पर संतत्व की धारा में बहुत अधिक महत्व दिया। सुनो—

गुरु को कीजै दंडवत, कोटि कोटि प्रणाम।  
कीट न जानै भृंग को, करिले आप समान॥

जैसे भंडारिन अपनी आवाज़ से कीड़े को अपनी तरह बना देती है। सद्गुरु अपनी क्षमताएँ दे देगा, संसार सागर से पार कर देगा। कीड़ा

उड़ नहीं सकता है, पर भृंगी के संपर्क में आने के साथ उसमें उड़ने की ताकत आ जाती है। भाइयो, अगर आप विचार करके देखेंगे तो यह आत्मा बंधन में है। और हम सब कह भी रहे हैं कि आत्मा बंधन में है। आत्मा को बाँधने वाला है—मन।

मन अत्यंत गहन अँधकार में रहता है। अँधकार ही मन का पोषण करता है। इस मन के कारण से आत्मा का ज्ञान नहीं हो रहा है। यह मन बड़ा जटिल है। मन बड़ा शक्तिशाली है। आत्मा को इसी मन ने बाँधा है। मन की प्रकृया मनुष्य को समझ में नहीं आ रही है। मन चुपके से अपना काम कर रहा है। व्यक्ति को जब देखते हैं तो आत्मा नज़र नहीं आ रही है। व्यक्ति में दो बात नज़र आ रही हैं। पहला व्यक्ति में नज़र आ रहा है—शरीर। पंच भौतिक शरीर। यह तो नाशवान है। यह तो आत्मा हो ही नहीं सकता। यह आत्मा नहीं है। व्यक्ति को भी अपने अंदर में आत्मा का पता नहीं चल रहा है। खुद व्यक्ति को भी अपने आप में दो चीज़ दिख रही हैं—एक व्यक्ति दिख रहा है, एक व्यक्तित्व। अब यह व्यक्तित्व कैसा है? इसमें इच्छाएँ भी हैं, इसमें बुद्धि भी है, इसमें संकल्प भी हैं। यह आत्मा नहीं है। शास्त्र कह रहे हैं कि आत्मा मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार से भी परे है। अंतःकरण की वृत्ति क्या है? काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार। सबमें नज़र आ रहा है। आत्मा काम, क्रोध, लोभ, मोह से भी परे है। इसका मतलब है कि यह व्यक्तित्व भी एक धोखा है। जो आप अपने को अनुभव कर रहे हैं, यह भी आत्मा नहीं है। यह भी धोखा है। इसका मतलब है कि इन दोनों के बीच में आत्मा कहीं फंसी है। आत्मा समझ में नहीं आ रही है। गुरु जब नाम देता है तो अंतःकरण को रौशन करता है। जैसे डॉ० जब दवा देता है तो रोग के कीटाणुओं को मारता है। इस तरह गुरु नाम रूपी एक चेतन सत्ता आपको देता है। उससे क्या होगा? कैसे मुक्त होंगे? पूरे व्यक्तित्व का तमाशा नज़र आने लगेगा। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार दिखने लगेंगे। मन



की पूरी क्रियाएँ समझ में आने लगेंगी। मन की वृत्तियाँ समझ में आने लगेंगी। मन की क्रियाएँ अच्छी तरह पकड़ में आयेंगी। मन नज़र आने लगेगा।

**मन को कोई चीहन न पाए, नाना नाच नचाए॥**

अन्यथा दुनिया का कोई भी आदमी इस मन को समझ नहीं पा रहा है। याद रखना, जैसे आपके पैरों में चलने की ताकत है, आपके कानों में सुनने की ताकत है, आपकी आँखों में देखने की ताकत है। इस तरह आपकी आत्मा में ईश्वर तक जाने की ताकत है। आपकी आत्मा में उड़ने की शक्ति है। आपकी आत्मा में परमात्मा को देखने की शक्ति है। पर ये सब शक्तियाँ मन द्वारा लोप हो गयी हैं। गुरुजन अंतःकरण को चेतन कर देते हैं। नानक देव जी ने इसी स्थान पर एक शब्द कहा—

**अक्खे वाजो देखना, बिन कन्ने सुनना।  
हत्थे वाजो करना, बिन पैरों चलना॥  
नानक हुकम पछान के, यों जीवत मरना॥**

कबीर साहिब भी कह रहे हैं। ये अवस्थाएँ गुरु अपने आप कर देगा। समझ में आ जाएगी बात।

**बैन बिन बोलना, नैन बिन देखना।**

**पैर बिन चल गया, शहर बेगमपुरा॥**

**आप का खेल कहो कौन जाने॥**

रामायण में गोस्वामी जी ने इस बात को बड़े सुंदर अलंकार से कहा—

**पग बिनु चले सुने बिन काना।  
कर बिनु कर्म करे विधि नाना॥**

आनन रहति सकल रस भोगी। बिन वाणी वक्ता बड़ योगी।  
तन बिन परस नैन बिन दरसे। गहे घ्राण सब शेख विशेखे॥  
यों विधि सब अलौकिक करनी। महिमा जाय कवन विधि वरणी॥

आप याद रखना, आपको किसी भी शक्ति को आहुत नहीं करना है। आत्मा स्थिर है, अखंडित है। इस आत्मा से माया कुछ भी कम नहीं कर सकती है। आपके पास पर्याप्त अध्यात्म शक्तियाँ भरी पड़ी हैं।  
**सबकी गठरी लाल है, कोई नहीं कंगाल।।**

आपके पास शक्तियाँ भरी पड़ी हैं। ये मन द्वारा आच्छादित हैं केवल। याद रहे, जो भी चीज़ बढ़ती है, वो कम हो जायेगी। जो कम हो जाएगी, वो खत्म हो जाएगी। जो भी चीज़ न्यून होगी, खत्म हो जाएगी। जो भी बढ़ेगी, वो कम भी होगी। मैंने आपसे कहा कि ब्रह्माण्ड निरंतर बढ़ता जा रहा है। बढ़ते-बढ़ते एक दिन खत्म हो जाएगा। सिद्धांत कह रहा है कि जो भी बढ़ेगा, वो मिटेगा। अभी यह बढ़ता जा रहा है, बढ़ता जा रहा है। एक पराकाष्ठा तक बढ़ेगा, फिर यह खत्म हो जाएगा। इंसान भी बढ़ रहा है, फिर खत्म हो जाएगा। पर आत्मा स्थिर है, कमती-बढ़ती नहीं है। आत्मा में कुछ डाला नहीं जा सकता है, कुछ निकाला नहीं जा सकता है। यह न्यूनाधिक नहीं हो रही है। आपकी कोई भी ताकत किसी ने नहीं छीनी है। आपकी कोई भी क्षमता कोई कम नहीं किया है। न यह मन में ताकत है, न माया में। साहिब ने बड़े प्यारे शब्दों में चेताया।

### **आपा को आपा ही बंध्यौ।।**

इस आत्मा ने अपनी ही ताकत से अपने विनाश का रास्ता चुना। इस आत्मा पर आवरण आ गये। एक मणि रौशनी देती है। दीपक भी रौशनी दे रहा है, पर उसमें समस्या है कि तेल कम हो गया, बाती जल गयी तो बुझ जाएगा। अगर सब चीज़ ठीक है, हवा का झोंका आया तो भी बुझ जायेगा। लेकिन मणि में यह समस्या नहीं है। न उसे तेल चाहिए, न हवा का झोंका उसे बुझा सकता है। लेकिन उसके ऊपर यदि हम गोबर फेंक दें, मिट्टी फेंक दे तो उसका प्रकाश आच्छादित हो जाएगा। आत्मा मन और माया द्वारा आच्छादित है। गुरु मन और माया के पर्दे को अलग करता है। इसका परिणाम यह होता है कि समझ में आने लग जाते हैं ये

सब। दुनिया का सबसे बड़ा आश्चर्य ही यही है कि आत्मा व्यक्तित्व को अपना रूप मानने लग गयी है। आत्मा अंतःकरण को अपना रूप मानने लगी। आत्मा मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार को अपना रूप मानने लगी। यही है—अज्ञान। अब गुरु जो नाम देता है, वो क्या है? लोगों ने इस पर व्यापार शुरू किया। साहिब वाणी में कह रहे हैं—

अकह नाम गुरु बिन नहीं पावे। पूरा गुरु अकह समझावे॥  
गुप्त नाम सो कहा न जाई। लिखा न जाई पढ़ा न जाई॥  
बाबन से बाहर करे, जब गुरु मिले पूर॥

यह नाम वाणियों का विषय नहीं है। यह नाम निराला है। जब नाम की रौशनी आती है तो उसी से मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार आदि समझ में आयेगा। इसी पर कबीर साहिब ने एक शब्द कहा—

पारस में अरु संत में, तू बड़ो अंतरो मान।  
वह लोहा कंचन करे, वह करिले आप समान॥

पारस लोहे को सोना बना सकता है, पर पारस लोहे को पारस नहीं बना सकता है। लेकिन गुरु अपनी तरह कर देगा।

**काग पलट हंसा कर दीना॥**

इसका मतलब है कबीर साहिब जिस गुरुत्व की बात कर रहे हैं, वो पहले किसी ने नहीं की है। बाकी हम सबकी यह धारणा है कि गुरु हमें ईश्वर का रास्ता बतायेगा। आज के आधुनिक युग में सभी चीजें टी.वी. पर भी आ रही हैं, ध्यान सूत्र समझाए जा रहे हैं, सभी पढ़े-लिखे हैं। क्या सन्मार्ग है, क्या अनुचित है, समझ में आ रहा है। गुरु अगर ये बताया तो अच्छी बात है, पर यह कोई बड़ी बात नहीं है। गुरु तो—

काग पलट हंसा कर दीना। करत न लागी बार॥  
कोटि जन्म का पंथ था, गुरु पल में दिया पहुँचाय॥

गुरु पल में पार कर देता है। कबीर साहिब ने गुरु को गोविंद से बड़ा कहा तो उसका आधार है। गुरु को ईश्वर से बड़ा किसी ने भी पहले

कहने की हिम्मत नहीं की। कबीर साहिब गुरु को परमात्मा से बड़ा कह रहे हैं। इसमें तथ्य और रहस्य हैं।

गुरु हैं बड़े गोविंद से, मन में देख विचार।  
हरि सुमिरे सो बार है, गुरु सुमिरे सो पार॥  
कबीरा हरि के रूठते, गुरु की शरणी जाय।  
कहैं कबीर गुरु रूठते, हरि नहीं होत सहाय॥  
कबीर ते नर अंध हैं, गुरु को कहते और।  
हरि रूठे गुरु ठौर है, गुरु रूठे नहीं ठौर॥

उनकी सुरति पारस सुरति है।

कबीर संगत साधु की, जो भूसी मिले खाय।  
खीर खांड मिसरी मिले, साकट संग न जाय॥

कबीर साहिब की वाणियाँ ही चेतावनियाँ हैं। सत्य की ओर प्रेरित कर रही हैं, सावधान कर रही हैं। गुरुत्व से हमारी आत्मा को शक्तियाँ प्राप्त हो जायेंगी। जो भी जिसका अंश है, उसको अपने अंशी तक जाने की ताकत है। पक्का है। आपको एक उदाहरण देता हूँ। पानी समुद्र का अंश है। आप अपने घर की नाली में पानी फेंकते हैं। देखो, वो सागर तक पहुँचने की क्षमता रखता है। नाली से वो बहता बहता बड़ी नाली में पहुँच जाता है। वहाँ से बड़े नाले में पहुँचता है। फिर वहाँ से किसी नदी से मिल जाता है। नदी फिर किसी बड़ी नदी से मिल जाती है। आखिर वो समुद्र तक पहुँच जाता है। हर अंश अंशी की ओर प्रेरित होता है। आग सूर्य का अंश है। जब भी जलाओ तो ऊपर ही लपटें मारती है। वायु आकाश का अंश है, इसलिए उसमें विलोम होती है। धरती सूर्य का अंश है, उसके चारों ओर चक्कर काट रही है। सूर्य के आकर्षण के अन्दर है। सूर्य का आकर्षण खत्म हो जाएगा तो धरती खत्म हो जाएगी। आपकी आत्मा परमात्मा से कभी अलग नहीं हुई है, जुड़ी है। कबीर साहिब ने इसको सतर्क करके कहा—

प्रीतम को पतिया लिखूँ, जो कहूँ बसे विदेश।  
 तन में मन में नयन में, वाको कौन अंदेश॥  
 साहिब तेरी साहिबी, सब घट रही समाय।  
 ज्यों मेंहदी के पात में, लाली लखी न जाय॥  
 ज्यों तिल माहिं तेल है, ज्यों चकमक में आग।  
 तेरा साईं तुझमें है, जाग सके तो जाग॥  
 परम प्रभु अपने ही उर पायो॥

ये शब्द इस बात को इंगित कर रहे हैं। पर यह क्षमता हमें, चौथे लोक में जाने के लिए, किसी योग से नहीं मिल सकती है। एक बात और बताना चाहता हूँ, ध्यान देना। चारों तरह की मुक्तियों में भी आत्म-साक्षात्कार यथार्थ नहीं है, संपूर्ण नहीं है। आप देखते हैं कि दूध भी खराब हो जाता है, दही भी खराब हो जाती है। पर दही थोड़ा बाद में खराब होती है। भइया, करीम भी खराब हो जाती है। पर घी खराब नहीं होता। क्योंकि वो समग्र रूप से शुद्ध है। इस तरह स्वर्गादि लोकों में भी शरीर है। वहाँ भी पुनर्जन्म है। आत्म साक्षात्कार नहीं है वहाँ। पितरादि लोकों में भी, सामीप्य मुक्ति में भी आत्म साक्षात्कार नहीं है। आत्म साक्षात्कार केवल अमर लोक में है। उस अवस्था में आत्मा को हंस बोला। आत्मा और हंस में एक अन्तर है। कबीर साहिब ने आत्मा को भी भ्रम बोला। जिस समय यह चेतन सत्ता शरीर को धारण करती है तो इसे जीव कहते हैं। प्राणों को धारण करती है तो जीव कहते हैं।

**प्राणेन धरेन जीवेशू॥**

जब यह प्राणों को त्यागकर मन में समाती है तो इस आत्मा को ब्रह्म कहते हैं। जब यह आत्मा पंच भौतिक तत्त्व और मन-माया से बाहर निकल जाती है, तब इस आत्मा की संज्ञा संतों ने हंस दी। हंसा कहा। इसलिए संतों ने इस आत्मा की एक अलग स्थिति के विषय में बात की। तो यह क्षमताएँ आपके पास हैं। स्वाभाविक हैं। इसलिए गुरु नाम रूपी

रौशनी देता है जिससे मन और माया का पूरा आवरण छूट जाता है।

**नाम बिना हृदय शुद्ध न होई। कोटिन भांति करे जो कोई॥**

इस तरह साहिब ने चौथे लोक की बात कही।

अब हम देखते हैं कि क्या साहिब यथार्थ में उस अमर लोक से आए! माँ के पेट से जन्म नहीं लिया क्या! 120 साल साहिब ने समाज को तत्व का ज्ञान दिया। जब दुनिया से जाना था तो कबीर साहिब ने ऐलान किया कि माघ सुदी एकादश के दिन मैं संसार से जाऊँगा। कबीर साहिब ने अपने जीवन काल में 52 लाख लोगों को नाम दिया था। उनकी वाणी में आता है—

**बावन लाख दीनो बीड़ा। छत्तीस लाख लगायो तीरा॥**

तो साहिब ने कहा कि मैं मगहर में शरीर त्यागूँगा। तमाम लोग इकट्ठा हुए। ऐसा क्यों? लोगों में थोथी धारना थी कि मगहर में मरने वाला गदहा बनता है।

**काशी मरे सो मुक्ता। मगहर मरे सो गदहा होई॥**

तो साहिब ने कहा—

**जो कबीरा काशी मरे, तो रामहि कौन निहोर॥**

साहिब ने सोचा कि लोगों की ये भ्रांतियाँ मिटते हैं। इसमें रहस्य था। काशी से मगहर शरीर छोड़ने क्यों आए? सुनो। काशी करवत लेकर लोग अपना कल्याण करते थे, सोचते थे कि मुक्ति मिलती है। वहाँ ऐसा था कि पहले कोई दुखी हुआ, गुस्सा हुआ तो जाता था काशी में, करवत लेता था। जैसे चारा काटने की मशीन होती है, ऐसे था। उसमें जाकर गरदन रखता था, करवत लेता था, मर जाता था। ऐसा क्यों था? क्योंकि इसके बदले में दक्षिणा मिलती थी। आदमी मरने से पहले दान-दक्षिणा देता है। यह सब इसलिए था वहाँ। बाद में अंग्रेजों ने बंद करवाया। कबीर साहिब ने समाज की जाते समय भी सेवा की, कहा कि चलो भाई मगहर, मैं वहीं शरीर छोड़ूँगा। जब साहिब मगहर में आए तो काफी शिष्यों को

भी पता चला। वो भी पहुँच गये। उस समय आप कल्पना करें कि 52 लाख लोगों को नाम दिया था तो कितनी बड़ी क्रांति चलाई होगी! तमाम लोग इकट्ठा हुए। उनके शिष्य बिजली खान पठान भी आए और बीरसिंह बघेल भी आया। जब कमरे में चादर ओढ़ाई गयी, शरीर छोड़ने के लिए लेटे तो बीरसिंह बघेल ने अपने सेनापति से कहा कि जैसे कबीर साहिब शरीर छोड़ें, उनके पार्थिव शरीर को लेना, काशी में हम उनके शरीर का संस्कार हिंदू धर्म के अनुसार करेंगे। बिजलीखान पठान ने कहा कि नहीं भाई, ये मेरे भी मुर्शिद हैं। इनका संस्कार हम इस्लाम के अनुसार करेंगे। बीरसिंह बघेल को कहा कि भाई, हम गुरु भाई हैं, विचार करो। कबीर साहिब काशी में रहे जीवन भर, उनकी इच्छा थी। वहाँ आपका राज्य था। मैंने भी वहाँ दीक्षा ली। पर अपनी मर्जी से मगहर में आए। यह मेरा राज्य है। आप खुद बताओ कि किसका हक बना! बीरसिंह ने कहा कि तुम्हारी बात में तर्क है। लेकिन कबीर साहिब को मुसलमान करके दफना दोगे तो क्षति होगी। हिंदु लोग भक्ति नहीं करेंगे। इसलिए मुझे संस्कार करने दो। जब दोनों की बात नहीं बैठी तो युद्ध के लिए दोनों प्रस्तुत हुए। उस समय एक आलौकिक कौतुक हुआ। साहिब ने यह भी दिखाना था कि मैं क्या हूँ। जोरदार आवाज हुई और अद्भुत प्रकाश हुआ।

**उठाओ पर्दा नहीं है मुर्दा।  
ऐ रे मूर्ख नादाना। तुमने हमको नहीं पहचाना।।**

जब पर्दा उठाया तो शरीर नहीं था। आप सोचें कि वो यह संदेश देकर गये कि शरीर नहीं हूँ।

**ना मैं तुर्क ना मैं हिंदू। माँ का रज न पिता का बिंदु।।**

कई वाणियों में उन्होंने यह कहा। आखिर में प्रमाणित करके गये। मुसलमानों ने फूल लेकर मजार बनाई। हिंदुओं ने फूल लेकर के समाधि बनाई। आज भी मगहर में इस बात की गवाही दे रहे हैं कि वो हिंदु और मुसलमान दोनों से परे महान तत्त्वदर्शी थे और एक शरीर रहित

व्यक्तित्व था। इस तरह भाइयो, साहिब का लक्ष्य था कि मानव को परम सत्य की तरफ ले चलना। शुद्ध आत्मतत्त्व की बात कही, कोई जाहिलपने की बात नहीं की। बालकपन से ही उन्होंने परम तत्त्व की बात कही। आज भी उनपर पी.एच.डी., रिसर्च हो रहे हैं। इंग्लैंड में तो काफ़ी ज़्यादा। आंतरिक्ष में ग्रहों, नक्षत्रों की दूरियाँ भी बोली हैं। उन्हें 52 बार मौत की सज़ा मिली। पाखंडी तबके ने 52 बार मौत की सज़ा दी। वो 52 जंजीरें कहलाती हैं और 52 कसनियाँ कहलाती हैं। इस तरह साहिब ने पूरा जीवन मानवता के कल्याण के लिए काम किया और उस देश की बात कही। वास्तव में वो एक निराला देश है। जब तक यह आत्मा वापिस वहाँ नहीं पहुँचती है, इस आत्मा का कभी कल्याण नहीं होगा। वो किसी की निंदा नहीं कर रहे हैं। वो कह रहे हैं कि बाकी सब चीज़ें एक सीमा के अन्दर हैं।

तो भाइयो, आपके पास में कोई शक्ति देनी नहीं है। आपके पास शक्तियों का पुंज भरा पड़ा है।

साहिब तेरी साहिबी, सब घट रही समाय।  
ज्यों मेंहदी के पात में, लाली लखी न जाय॥  
लाली मेरे लाल की, जित देखूँ तित लाल।  
लाली देखन मैं गया, तो मैं भी हो गया लाल॥

एक अदद् गुरु के बिना हम अपने अन्दर उस शक्ति को नहीं जगा सकते हैं। आदमी योग द्वारा अपनी शारीरिक शक्ति को जगा सकता है, अपनी भौतिक क्षमता को जगा सकता है, लेकिन अगर सोचे कि मैं इन बाहरी भक्तियों और योग द्वारा आत्म शक्ति को जगाऊँ तो आत्म शक्ति योग का सब्जेक्ट नहीं है। यह कृपा से होगा। साहिब ने सहज योग बोला। सहज योग का मतलब है कि जिस दिन नाम की ताकत आपके अन्दर आ जाएगी तो आपके अन्दर वो शक्ति खुद ही आ जाएगी और सब चीज़ें बदलती चलेंगी। नाम की प्राप्ति के बाद एक सत्ता आपका मार्ग-दर्शन करती है।



गुरु साहिब तो एक है, बाकी सब आकार।  
आपा तज के गुरु भजे, तब पावे दीदार॥

वो शक्तियाँ आपके साथ में हैं। वो शक्तियाँ आपको चेतन कर रही हैं। आपके साथ में हमेशा ऐसा लगेगा कि एक ताकत है। यह नाम है। सतगुरु नाम बताने वाले, तुझको कोटिन प्रणाम॥ गुप्त नाम गुरु बिन नहीं पावे। पूरा गुरु अकह समझावे॥

यानि धीरे-धीरे आत्मा की क्षमताएँ बढ़ती जायेंगी। यह है—सहज मार्ग। मन समझ में आता जायेगा। चित्त समझ आता जायेगा। कपाट की सब चीजें समझ आती जायेंगी। साधना भी स्वयं होती जायेगी। कई अन्दर से संकेत मिलने लग जायेंगे अंतःकरण में। कई ऐसी नाड़ियाँ खुल जाती हैं, कई क्रियाओं का बोध हो जाता है। रिद्धियाँ—सिद्धियाँ सबका भंडार इस मानव तन के अन्दर भरा पड़ा है। पर हम एक अदद् गुरु के बिना ये चीजें प्राप्त ही नहीं कर सकते हैं। इसलिए तो कह रहे हैं—

गुरु मिलने से झगड़ा खत्म हो गया।  
ना तो तन ही रहा न मन ही रहा, गुरु मिलने से झगड़ा खत्म हो गया॥

जबसे आपको नाम मिला है, आपको पता चल रहा होगा, आभास हो रहा होगा कि कुछ शक्तियाँ आपको बचाती चल रही हैं, आपका संरक्षण करती चल रही हैं। आपको लगता होगा कि एक दिव्य सत्ता आपके साथ में है। यह शक्ति एक पूर्ण गुरु आपमें जाग्रत कर देता है। तभी तो बुल्लेशाह ने अपनी वाणी में कहा—

ना रब्ब मैं तीर्था दीठ्या, ना रोजा नमाजे।  
बुल्लेशाह नूं मुर्शिद मिलया, अंदरों रब्ब लखाया॥

एक सद्गुरु आपको कोई परमात्मा का रास्ता थोड़ा बताता है, कोई योग की क्रिया थोड़ा बताता है। वो तो—

कोटि जन्म का पथ था, पल में दिया लखाया॥

आपके अन्दर उस दिव्य सत्ता को प्रगट कर देता है। यह है—सद्गुरु का कार्य। गुरु आपके अन्दर की वो क्षमता स्वयं जागरुक कर देता है। मानव तन अमोलक है। देवता लोग इस मानव तन को प्राप्त करने की चाह रख रहे हैं। वो चाहते हैं कि काश हमें भी तन मिले। क्योंकि इस तन के अन्दर क्षमताएँ हैं। आप शरीर की शक्तियाँ जगाएँ, अच्छी बात है। आप योग करें, खराब नहीं बोल रहे हैं। लेकिन उसी तरफ एकाग्र नहीं हो जाओ न! यही पर्याप्त नहीं है। जब तक आत्म शक्ति नहीं जगेगी, आदमी संसार-सागर से पार नहीं हो सकता है। आत्म शक्ति योगी नहीं जगा सकता है। आत्म शक्ति बाहरी उपासना करने वाला नहीं जगा सकता है। आत्म शक्ति एक पूर्ण सद्गुरु जगा सकता है। इसलिए कबीर साहिब ने अपनी वाणी में पूर्ण सद्गुरु का दर्जा ईश्वर से भी ऊपर कहा। जब तक पूर्ण सद्गुरु की प्राप्ति नहीं होती है, तब तक उस अमर लोक की प्राप्ति हो ही नहीं सकती है। इसलिए ये क्षमताएँ हमें एक अदद् गुरु के द्वारा ही प्राप्त हो सकती हैं। इसी लाइन में फिर बाकी संतों ने भी आकर उस देश की बात की। यदि आप संतों की वाणी का शोध करें तो पायेंगे कि उन्होंने उस अमर लोक की बात की है और साहिब के नक्शेकदम पर चले हैं। जो-जो बातें उन्होंने कहीं हैं, उनका अनुकरण किया है, पूरा-पूरा अनुकरण किया है।

साहिब ने समाज को एक अलग चीज़ दी। उन्होंने 11वें द्वार की बात की। 11वाँ द्वार आपकी सुरति के अन्दर है। 10वें द्वार तक तो योगी भी कह रहे थे। साहिब ने 11वें द्वार की बात की, अमर लोक की बात की, नाम की बात की और कहा कि आपको सद्गुरु पार कर देगा। तो यह अन्तर है।

**भक्ति भक्ति में भेद है ॥**

साहिब वाणी में साफ कह रहे हैं—

**नौ द्वारे संसार सब, दसवां योगी तार।**

**एकादश खिड़की बनी, जानत संत सुजान ॥**

योगी लोग दसवें द्वार की तरफ जाते हैं। एक योगी आम आदमी से एक हज़ार गुणा अधिक आनन्द प्राप्त करता है। 11वां द्वार संत लोग जानते हैं। अगर 10वें द्वार से भी निकलते हैं तो मृत्यु के शिकंजे से हमेशा के लिए नहीं छूट सकते हैं। ज़मानत पर जैसे कैदी रिहा होता है, ऐसे हो सकते हैं। साहिब ने अपनी वाणी में 11वें द्वार का उल्लेख कई जगह किया। कह रहे हैं—

**अंत समय जब जीव का आई। यथा कर्म तब देही पाई ॥**

जब अंतकाल आता है तो कर्म के अनुसार देही पाता है।

**हेठ द्वार से प्राण निकास। नरक खान में पाए वासा ॥**

अगर मौत के समय आदमी के प्राण मल द्वार से निकल जायेंगे तो वो नरक में चला जाएगा। उसकी पहचान है कि मल-मूत्र बाहर हो जाएगा। समझो भयभीत हुआ था। यमदूत आए थे। जब भी भय और कष्ट हो तभी आदमी का मल-मूत्र बाहर आता है। वो कष्ट में था।

**नाभि द्वार से जीव जब जाई। जलचर खानि में प्रगटाई ॥**

अगर मौत के समय शिश्न से प्राण निकलेंगे तो पानी के 9 लाख जीव हैं, वहां जन्म लेगा। जिस रास्ते से गया, वहीं पहुँचेगा। जिस मत में गया, उस गति को प्राप्त होगा।

**अंतमतः सागताः ॥**

आगे कह रहे हैं—

**मुख द्वार से जीव जब जाई। अन्न खानि में वासा पाई ॥**

अगर मौत के समय मुख से प्राण निकले तो मुख खुला रह जाएगा और वह अन्न खानि में पहुँचेगा।

**नासिका द्वार से प्राण जब जाई। अंडज खानि में प्रगटाई ॥**

यदि नासिका से प्राण निकल गये तो वो पक्षी आदि बनेगा। हवा में रहेगा।

**नेत्र द्वार से जीव जब जाई। मक्खी आदि तन को पाई ॥**

यदि नेत्र द्वार से प्राण निकल गये तो आँखें फटी रह जायेंगी। मौसम के बदलाव से कीट पतंगे जो पैदा होते उसमें जन्म लेगा।

**श्रवण द्वार से जीव जब चाला। प्रेत देह पाय ततकाला॥**

यदि कानों से प्राण निकल गये तो प्रेत योनि में पहुँच जायेगा। उसकी पहचान है कि बड़ा भयानक शरीर लगेगा। मुखवृत्ति अजीब-सी होगी। आपको डर लगेगा देखकर।

**दसम द्वार से जीव जब जाई। स्वर्ग लोक में वासा पाई॥**

यदि 10वें द्वार से गया तो स्वर्ग में निवास करेगा और वापिस आकर ऊँची कुल में जन्म लेकर राजा बनेगा।

**11वें द्वार से जीव जब जाई। अमर लोक में वासा पाई॥**

11वें द्वार से जीव जब जायेगा तभी अमर लोक में वास पायेगा।

इसलिए पहले जितने भी ऋषि, मुनि, गण, गंधर्व आदि हुए, दसवें द्वार तक की साधना बोली। उनको झूठा थोड़ा कह रहे हैं। भाई न्यूटन ने कुछ कहा। पर आज के वैज्ञानिकों के पास संसाधन अधिक हैं। वो आगे कह रहे हैं। इस तरह साहिब ने तत्व की बात बड़े ज़ोरदार तरीके से कही।



\* शरीर के किसी भी स्थान पर ध्यान रोकना एक छल है, माया है।

\* यदि आपका गुरु गृहस्थ है तो उससे कभी भी अपनी आत्मा के कल्याण की उम्मीद नहीं रखना। वो नहीं कर पायेगा।

# एक सखी के प्रेम में बह गये कोटि कबीर

---

आइए, हम देखें, आखिर क्या वजह है कि वो सर्वशक्तिमान पास होते हुए भी दिख नहीं रहा है। सबसे बड़ी बात यह है कि जाग्रत अवस्था उसकी अनुभूति नहीं कर सकती है। आदमी चार अवस्थाओं से गुज़रता है—जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीया। सुषुप्ति में जाग्रत से 1000 गुणा कम चेतना होती है। इस अवस्था में पहुँचकर इंसान विचारशून्य हो जाता है। यह एक कॉमा की अवस्था होती है। एक तो इंसान चोट लगने पर भी कॉमा में पहुँच जाता है और दूसरा ध्यान के द्वारा भी इस अवस्था में पहुँचा जा सकता है। कभी आप बहुत गहरी नींद में पहुँच जाते हैं। उठने के बाद भी कुछ देर तक आपको होश नहीं होता है कि आप कहां पर हैं। आप चारों ओर नजर डालते हैं, जानने का प्रयास करते हैं कि कहाँ हूँ। थोड़ी देर के बाद आपको आभास होता है कि आप फलानी जगह पर हैं। यह अवस्था सुषुप्ति कहलाती है। वृक्षादि इस अवस्था में हैं। स्वप्न अवस्था भी बड़ी निराली है। इसमें साधक एक सूक्ष्म दुनिया को देखता है। जो कुछ दिखता है, वो सच लगता है। स्वप्न देखने वाला उस दुनिया को सच मानकर चलता है। जैसे लाल रंग का चश्मा लगाया तो सब कुछ लाल-लाल ही दिखता है। यदि नीले रंग का चश्मा लगाया तो सब चीजें नीली दिखने लगती हैं। इसी तरह हर अवस्था उसी के अनुरूप सत्य लगने लगती है, पर होती नहीं है। जितनी देर तक स्वप्न देखता है, सब सत्य लगता है। कितना भी बुद्धिमान क्यों न हो, सब स्वप्न को देखते हुए

यथार्थ ही मानते हैं। इसी तरह जाग्रत अवस्था है। इसमें संसार सत्य लगेगा। हजार बार कहते रहो, सोचते रहो कि दुनिया नाशवान् है, पर यह व्यवहार में सत्य ही लगेगी। सब कह रहे हैं कि अनित्य है, कोई किसी का नहीं है, पर व्यवहार में सत्य मान रहे हैं। यह इंद्रियों का खेल है। जब तक आप इस अवस्था में हैं, सब नित्य लगेगा। इसी तरह जब चौथी अवस्था में पहुँचता है तो तीनों अवस्थाएँ अज्ञानमय लगती हैं। पर तीनों में संसार नित्य लगेगा। यही है—बंधन। इन अवस्थाओं में सुरति घूमती है। जाग्रत में आँखों में वास होता है, तुरीया में सुषुम्ना के अन्दर। पर एक विडंबना है कि जाग्रत से कैसे निकलें! जाग्रत से निकलकर नींद में चले जाते हैं। वो तो और भी बदतर अवस्था है। पर सुषुप्ति में खुद नहीं जाता है। अचानक पहुँच जाता है। किसी को उसमें जाने का फॉर्मूला पता नहीं है। सोते-सोते अचानक पहुँच जाता है। नींद में जाने के लिए तो चेष्टा करनी पड़ती है, लेटना पड़ता है, आँखों को बंद करना पड़ता है, पर स्वप्न से सुषुप्ति में जाने के लिए चेष्टा नहीं करनी पड़ती। तब 10 गुणा कम चेतना होती है। कभी आप नींद में वो काम भी कर लेते हैं, जो जाग्रत में कभी भी नहीं कर सकते हैं। देखा, अवस्था का खेल। इसी प्रकार तुरीया अवस्था है। वो स्वाभाविक नहीं है। इसमें जाग्रत अवस्था रुकावट है। जाग्रत के पायदान से फिसलकर नींद में जाता है। जाग्रत से ऊपर उठकर तुरीया में जाता है। पर मनुष्य को जाग्रत से ऊपर उठना नहीं आता है। सभी लोगों के दो हाथ हैं, पर उन्हें तैरना नहीं आता है। कुछ लोग हैं, जिन्हें तैरना आता है। उनके भी दो ही हाथ हैं। यानी जिन्हें नहीं आता, उन्होंने सीखा नहीं। इसी तरह सीखना होगा।

सुरति औ निरति मन पवन को पलट कर।  
गंग और यमुन के घाट आने॥  
कहैं कबीर सो संत निर्भय हुआ, जन्म औ मरन के भ्रम भानै॥

वो निर्भय पद की प्राप्ति करता है।

अब सवाल है कि तुरीया में कैसे जाएँ? इसमें चेतना की बाधा

है। इससे निकलना मुश्किल है। इसमें कर्मज्ञान इंद्रियां काम कर रही हैं। आँख, नाक, मुख आदि एक्टिव हैं। स्वप्न में ये काम नहीं करती हैं। सोए हुए के आगे कुछ कहें तो उसे समझ नहीं आता है। वो देख भी नहीं पाता है। सुनने, देखने पर ताला लग जाता है। आँखें सीज हो जाती हैं। कानों पर शट्टर गिर जाता है। आपने कभी गंभीरता से चिंतन नहीं किया। पहले देखते हैं कि इंद्रियाँ एक्टिव किससे हो रही हैं। फिर सीज करने की बात सोचेंगे न! आँखें खुली हैं तो कोई-न-कोई दृश्य दिखेगा-ही-दिखेगा। कर्मज्ञान इंद्रियाँ केवल स्थूल का चिंतन कर सकती हैं, सूक्ष्म का नहीं। इसलिए जाग्रत की चेतना अलग है, स्वप्न का अलग है। जाग्रत अवस्था को संचालित करती है-स्वांस। स्वप्न में स्वप्न की सूक्ष्म तंत्रिकाओं को भी यही चेतन करती है। पर जाग्रत में कर्मज्ञान इंद्रियों को चेतन करती है। इससे हम स्थूल जगत का आभास करते हैं। इस अनुभूति से ऊपर उठना होगा। यह आसान नहीं है। ऊपर उठने पर तुरीया अवस्था है। फिर उसके ऊपर तुरीयातीत है। फिर उससे कहीं आगे जाकर एक अवस्था है।

**तुरीयातीत ताहिं के पारा। विनती करे तहँ दास तुम्हारा॥**

तुरीया अवस्था में जाने के लिए जाग्रत को लॉक करना पड़ेगा। जाग्रत अवस्था को लॉक करना बड़ा मुश्किल है। पर घबराएँ नहीं।

**बनत बनत बन जाई॥**

साहिब कह रहे हैं-

**सुरति निरति मन पवन को पलट कर,  
गंग औ यमुन के घाट आने॥**

कैसे पलटा जाए? योगी लोग भी योग करते हैं। खेचरी, उनमुनि, चाचरी आदि पंच मुद्राओं का योग करते हैं। हम किसी को भी खराब नहीं कह रहे हैं। चाहे पी.एच.डी. है, मैट्रिक वाले को हीन भाव से नहीं देख सकते हैं। वो भी एक पायदान पर है।

एक समय में हमारी एक स्वांस चलती है। इड़ा और पिंगला के

मध्य में सुषुम्ना है। स्वांसा में गर्मी है। लगातार चलेगी तो बहुत गर्मी होगी। इसलिए पौन-पौन घंटे का क्रम है। यह वायु नाभिचक्र में पहुँचती है। यहाँ पहुँचकर 10 वायुओं में बदलती है। अपान, उदान, समान, सर्वतनव्याम आदि 10 वायुएँ शरीर में काम करती हैं। ये पूरे शरीर का संचालन कर रही हैं। जिस्म में पूरा खेल हवा का है। वज्रन उठाते हैं तो वायु भरते हैं। जंप लगाते हैं तो भी वायु को संग्रीहीत करते हैं। जो भी काम करते हैं, यह धनन्जय वायु है। नाग वायु कंठ में रहती है। यह नींद लाती है। जब उबासी लेते हैं तो कंठ सुकुड़ता है। जब यह खराब होगी तो इंसान पागल हो जाएगा। किरकिल ट्रेफिक पुलिस की तरह सब वायुओं को अलग-अलग रखती है। यह छींक लाती है। जब आपको छींक आती है तो आप आराम महसूस करते हैं। देवदत्त पलकों में है। आँखों को उठाती-गिराती हैं। पलकों के पीछे एक तरल पदार्थ है, जो आँखों को तरोताजा रखता है। नहीं तो आँखें पथरा जायेंगी। ऐसे में लोग मुनमुनिया हो जाते हैं। उनकी आटोमेटिक पलकें नहीं गिरती हैं। उन्हें चेष्टा करनी पड़ती है। हमारे शरीर का रोम-रोम वायु से चेतन है।

### इड़ा के घर पिंगला जाई।।

इड़ा पिंगला को लय कर देते हैं। यह स्वांसा सुषुम्ना में कैसे समाते हैं? गोरखनाथ की साहिब से गोष्ठी हुई तो साहिब से सवाल पूछा—

गोरखनाथ : कबीर काया मध्ये सार क्या?

साहिब : काया मध्ये स्वांसा सार।

गोरखनाथ : कहाँ से उठत है कहाँ को जाय समाय?

साहिब : शून्य से उठत है, नाभिदल में आय।

गोरखनाथ : हाथ पांव इसके नहीं, कैसे पकड़ी जाय?

साहिब : हाथ पांव इसके नहीं, सुरति से पकड़ी जाय।

यानी यह ध्यान से पकड़ी जाएगी। साहिब यही कह रहे हैं—

सुरति औ निरति मन पवन को पलट कर,



गंग औ यमुन के घाट आने ।

कहैं कबीर सो संत निर्भय हुआ, जन्म औ मरन का भ्रम भानै ॥

हमारी स्वांस बारी-बारी से चलती है । ऐसे में चेतन अवस्था बनी रहेगी । आदमी इस अवस्था से नहीं निकल सकता है । तब तक स्थूल जगत ही दिखेगा ।

ज्ञान भूमि के बीच चलत है उलटी स्वांसा ॥

तब भूख प्यास भी नहीं लगती है । स्वाभाविक स्वांसा नाभि में आती है । जब तक स्वांस आ रही है, 10 वायुएँ बन रही हैं । इंद्रियों में चेतना आ रही है तो स्थूल जगत दिखेगा । इसका मतलब है कि पवन मुख्य कारण है इस अवस्था का । साहिब कह रहे हैं—

सुरति के दंड से, घेर मन पवन को ।

फेर उलटा चले ॥

वाह भाई । हम जो भी स्वांस ले रहे हैं, उससे शरीर चल रहा है । स्वाभाविक हमारी स्वांसा का चलना नाभि क्षेत्र की तरफ है । पर वास्तव में यह भी स्वाभाविक नहीं जा रही है । यह हम एकाग्रता से वहाँ आने दे रहे हैं । आज्ञाचक्र में बैठा आत्मदेव स्वांस ले रहा है । तो गोरखनाथ ने पूछा—

हाथ पांव इसके नहीं, कैसे पकड़ी जाय ।

साहिब ने कहा—

हाथ पांव इसके नहीं, यह सुरति से पकड़ी जाय ॥

स्वांसा स्वाभाविक नाभि में चल रही है । योगी पवन को पलटता है । साहिब भी कह रहे हैं—

पवन को पलट कर, शून्य में घर किया ॥

गोरखनाथ से साहिब ने कहा कि यह सुरति से पकड़ी जाएगी ।

एक ने मुझसे नेट पर सवाल किया कि—

कबीरा कबीरा क्या कहे, चल यमुना के तीर ।

एक सखी के प्रेम में, बह गये कोटि कबीर ॥

उसने पूछा कि इस दोहे का मतलब क्या है?  
मैंने कहा कि कबीर चेतन सत्ता को कहते हैं।

**कायाबीर कबीर कहाय॥**

साहिब कह रहे हैं—

**यह कबीर भव भटका खाय। वो कबीर भव पार लगाय॥**

जो अपने को काया समझ रहा है, वो अज्ञानी है, संसार में भटक रहा है और जो अपने को आत्मरूप मान रहा है, वो ज्ञानी है।

...तो यमुना के किनारे चलो। हे अज्ञानी, इड़ा पिंगला के ऊपर चल। सखी सुषुम्ना को कह रहे हैं। करोड़ों लोग यहाँ से अपने गंतव्य को प्राप्त किये हैं। जहाँ कबीरा बोला है, वहाँ अज्ञानी कहा है और जहाँ कहत कबीर कहा है, वहाँ ज्ञानी कहा है। साहिब एक शब्द में फिर कह रहे हैं—

**गंग औ यमुन के घाट को खोज ले, भंवर गुंजार तहाँ होय भाई॥**

गंगा यमुना का घाट सुषुम्ना है। वो खोज नहीं पता है तो इलाहाबाद पहुँच जाएगा।

**त्रिवेणी के घाट पर, भई संतन की भीड़॥**

इड़ा पिंगला है त्रिवेणी का घाट। यहाँ संतों की भीड़ है। यहाँ धुनें हो रही हैं। आगे रहस्य गुरु बोलेगा।

**सरस्वती देख तहाँ निर्मल बहे, तास के पिये सब प्यास जाई॥**

सुषुम्ना बंद पड़ी है। जो लॉक कभी न खोलें, वहाँ जंग लग जाती है।

**सुरति और निरति मन पवन को पलट कर, गंग औ यमुन के घाट आने॥**

सुरति, निरति और मन, पवन को पलट दे। साहिब की कई चीजें दुनिया समझती नहीं है। जो होश है, वो सुरति है। वो घूम रही है। जो घट में है, वो निरति है।

**पांच को नाथ कर, अगम का आनन्द ले॥**

पाँचों तत्वों को नाथ ले।

साहिब कह रहे हैं—

सकल पसारा मेटि कर, मन पवना कर एक ।  
ऊँची तानों सुरति को, तहाँ देखो पुरुष अलेख ॥

मन, पवन को एक करना है ।

पाँच को नाथ कर, साथ सोहं लिया ।

अधर दरियाव का सुख माने ॥

स्वांसा को साथ ले लिया । ध्यान भजन में तो बैठना होगा न । लेकिन आपने फैसला कर रखा है कि ध्यान भजन नहीं करना है । आप ही हैं । यह तो एक विकल्प है । आपने विकल्प ले लिया कि आप पार कर दो । मेरी प्राथमिकता है कि भजन करना । यह नहीं कि कुछ न करें । यदि आपको कहा जाए कि मनमोहन सिंह जी का ध्यान करो तो ध्यान आ जाता है । किसी हीरो का ध्यान करो तो आ जाएगा । उसका ध्यान आ जाएगा । पर मेरा ध्यान नहीं आ रहा है । जब तक आप मन की स्थिति में हैं, तब तक नहीं मिलेगा । पूर्ण एकाग्र हो जाओगे तो मिलेगा । सपने में भी मिलूँगा तो चेतन हो जाओगे ।

आप सुमिरन भजन करना । सुमिरन तो आटोमेटिक चीज़ है । उससे सुषुम्ना खुल जाएगी ।

**जप तप संयम साधना, सब सुमिरन के माहिं ॥**

आटोमेटिक इड़ा पिंगला लय हो जायेंगी । इड़ा पिंगला लय होती हैं तो सुषुम्ना खुल जाती है । 9 द्वार पवन से बंद हैं । पवन ऊपर खींचे तो 9 द्वार लॉक हो जायेंगे । जैसे स्वांसा ऊपर सिमटती है तो लॉक हो जाता है । फिर स्वांसा ऊपर चलती है । मन सुरति को भटकाता है । यदि एकाग्र रहे तो ऊपर चलते चलते एक शून्य बन जाती है । वो शून्य पलटनी है ।  
**शून्य महल की फेरी देही, सो वैरागी पक्का होई ॥**

शून्य के पलटने पर तुरीया अवस्था बन जाती है । फिर तुरीया में जाकर समझ जाता है कि माया के शरीर में कैसे घुसना होता है । वो यह खेल समझ जाता है ।



# जा घट नाम न संचरे

---

जा घट नाम न संचरे, सो घट जान मशान।  
जैसे खाल लुहार की, स्वांस लेत बिनु प्राण॥

बहुत बड़ी महिमा है नाम की। जितने भी महापुरुष हैं, नाम का महात्म बोला। बहुत ज़्यादा बोला। इतना बड़ा महात्म बोला है तो कुछ चीज़ तो होगी न!

सार नाम निःअक्षर रूपा॥

आखिर नाम क्या करेगा?

नाम बिन हृदय शुद्ध न होई। कोटिन भांति करे जो कोई॥

नाम के बिना हृदय शुद्ध नहीं हो सकता है।

जीव हृदय तम मोह विशेषा॥

बहुत अँधकार है। कहाँ से आया यह अँधकार? आकाश तत्व से। इसी कारण से मन, माया, आंतरिक शत्रुओं का कुछ पता नहीं चलता है। वहाँ चाँद, सूर्य, तारे आदि प्रकाश नहीं कर सकते हैं। नाम वहाँ प्रकाश करेगा।

जा घट नाम न संचरे, तिसको जान मसान॥

बड़ी विशेष खूबी नाम की बोली। नाम एक दिव्य चेतना है।

अकह नाम सो कहा न जाई॥

जैसा दुनिया ने नाम सोचा, वैसा नहीं है।

लिखा न जाई, पढ़ा न जाई॥

लिखने में नहीं आता, पढ़ा नहीं जा सकता है।

## बिन सतगुरु कोई नहीं पाई ॥

एक बात साफ है, सिद्ध हो रही है कि अलफ़ाजी नाम नहीं है। सभी कह रहे हैं कि गुरु के यहाँ चलो, नाम लेना है। नाम वाणियों में नहीं है। नाम एक पूरे गुरु से लेने की क्या ज़रूरत है?

**सार नाम बिन गुरु नहीं पावे।**

**पूरा गुरु अकह समझावे ॥**

एक बात साफ हो गयी कि जो नाम हृदय को प्रकाशित करेगा, वो सबके पास नहीं है। साहिब कह रहे हैं—

**गुरु संजीवन नाम बताए, ताके बल हंसा घर जाए ॥**

गुरु नानक देव भी कह रहे हैं—

**नानक नाम जहाज है, चढ़े सो उतरे पार ॥**

सुरति को नाम की ताकत से कैसे जगाएँ? यह मन, माया के आवरण में उलझी है। मन, माया का आवरण है जिसके कारण से यह अपने को जिस्म समझ रही है। जिन चीज़ों ने जकड़ा है, वो दिख नहीं रही हैं। वो कोई आत्मा से बढ़ी नहीं हैं, शक्तिशाली नहीं हैं। आत्मा से मज़बूत कुछ भी नहीं है, आत्मा से शक्तिशाली कुछ भी नहीं है। यह बड़ी आलौकिक है। जिन चीज़ों ने जकड़ा है, वो इसी आत्मा की शक्ति लेकर इसे भ्रमित कर रही हैं। आत्मदेव अपने को शरीर मान रहा है। पंच भौतिक शरीर तो नाशवान् है। पर कितना आकर्षण है इसका! आसक्ति कितनी है! तभी तो मेरा-मेरा कह रहे हैं। इसकी प्रकृति भी कितनी ख़राब है! सब अच्छा-अच्छा खाना चाह रहे हैं, अच्छा-अच्छा पहनना चाह रहे हैं। इसके लिए फिर पाप किया जा रहा है। इसी शरीर की ज़रूरतों की पूर्ति के लिए मनुष्य ठगी कर रहा है, पाप कर रहा है। इसे जिंदा रखने के लिए पूर्ण एकाग्रता से दुनिया के कामों में उलझना पड़ रहा है।

**जड़ चेतन है ग्रंथि पड़ गई ॥**

आत्मा ने अपने को शरीर मानना शुरू किया। आत्मा को शरीर

का मोह कितना है ! थोड़ा दुबला हो जाए तो परेशान हो जाता है । सबको पता है कि यह नाशवान् है । तो भी शरीर की आसक्ति है । पता भी है कि नाशवान् है, तो भी । क्योंकि शरीर में कुछ चीजें बाध्य करती हैं । इनका वेग तीव्र है ।

**बहु बंधन ते बाँधिया, एक विचारा जीव ॥**

इन सबके बीच आत्मा उलझी है । सब इसी के धर्म का पालन करने में लगे हैं ।

**प्रबल अविद्या का परिवारा ॥**

इनकी हुकूमत चल रही है । इस आत्मा से सब करवाया जा रहा है । बंधन साफ दिख रहा है । एक वैज्ञानिक आया, कहा कि विज्ञान परमात्मा को नहीं मानता है । मैंने कहा कि जब तू सच्चा वैज्ञानिक हो जाएगा तो आम आदमी से अधिक मानेगा । ये तेरी आँखें कैसे बन गयीं ? धरती में तेरे खाने की ज़रूरतों का सामान कहाँ से आ गया ? तेरी शरीर के लिए आवश्यक सूर्य की उष्मा किसने दी ? तेरी उँगलियों में फोल्ड हैं ताकि काम कर सके । तुझे मुख है ताकि खा सके । ऐसा नहीं लगता है कि किसी ने पहले से ही तेरे लिए इंतज़ाम करके रखा है ! एक जाहिल आदमी भी मानेगा कि किसी रचनाकार ने संरचना की है ।

इसी तरह आत्मा के बंधन साफ नज़र आ रहे हैं । अनचाहे सब काम हो रहे हैं । कई बार सोचा होगा कि लड़ाई-झगड़े में घाटा है, पर फिर भी हो जाते हैं । गुस्सा आ जाता है और फिर बाद में पछताना पड़ता है ।

**चश्म दिल से देख तू, क्या क्या तमाशो हो रहे ॥**

इन सब चीज़ों पर गौर करें ।

**करो नाम उजियारा ॥**

जिस दिन गुरु नाम देता है, क्या ग़लत है, क्या सही, क्या पाप है, क्या पुण्य, सब पता चलने लग जाता है । नाम दान के बाद हृदय दर्पण की

तरह हो जाता है। अन्दर के शत्रु दिखाई देने लग जाते हैं। जिस ध्यान में यह सब देख पाने की क्षमता है, गुरु उसे चेतन कर देता है, उसे जगा देता है। बस—

सुरति संभाले काज है, तू मत भरम भुलाय॥

दुनिया में मत उलझना।

कहैं कबीर सुनो भाई साधो, रुई लपेटी आग है॥

जो सुख पाया नाम भजन में, सो सुख नाहिं अमीरी में॥

मनुष्य-तन दुर्लभ है। इसे बेकार नहीं जाने देगा। इसका महात्म समझना। इंद्रियों के सुख के लिए ज्यादा न उलझें।



जिसे दुनिया रुहानियत कह रही है, उसे जानती नहीं है कि रुहानियत है क्या चीज़। पूरी दुनिया शरीर की गुलाम है। मैं कभी शरीर का फैशन नहीं करता हूँ। कभी पाउडर नहीं लगाया, कभी क्रीम नहीं लगाई। छोटा भाई एक दिन बोला कि हम चार आदमी के बीच जाते हैं तो ठीक बनकर जाते हैं। पर आप हैं कि इतनी संगत है, कोई ध्यान नहीं है इस ओर। कभी आपके बाल उठे हुए होते हैं, कभी कुछ। यानी शरीर का अहंकार नहीं रखता हूँ। यह मेरा विषय नहीं है।

# गुरु कुम्हार शिष्य कुंभ है

---

नाम दान देकर सद्गुरु शिष्य की कागवृत्ति को छुड़ाकर हंस समान करता है। अन्यथा अपनी ताकत से या किसी अन्य के समझाने से मन नहीं मानता है। संस्कारों का जीवन में बहुत महत्व है। पिछले जन्मों के संस्कार साथ में रहते हैं। पर सद्गुरु में ऐसी ताकत है कि पिछले जन्मों के बुरे संस्कारों को समाप्त कर हंस समान कर देता है।

ज्यूं कापड़ा दरजी गहि व्योतत, काष्ठई को बढई कसि मानै।  
कंचन को ज्यूं सुनार कसे पुनि, लोह को धाट लुहार हि जानै॥  
पाहन को कसि लेत सिलावट, पात्र कुम्हार के हाथ निवानै।  
तैसेहि शिष्य कसै गुरुदेवजु, सुंदरदास तबै मन मानै॥

कपड़े को दरजी और लकड़ी को बढ़ई ही तराश सकता है। सोने को सुनार और लोहे को लुहार ही सुंदर बनाना जानता है। इसी तरह एक सद्गुरु ही शिष्य के मन को साफ कर सकता है। वो शिष्य के अंतःकरण को निर्मल करके भक्ति का बीज उत्पन्न करता है। वो कभी समाप्त होने वाला नहीं है।

भक्ति बीज पलटे नहिं, जो युग जाय अनन्त।  
ऊँच नीच घर औतरे, रहे संत के संत॥

चाहे किसी कारण से दुबारा जन्म भी हो जाए, भक्ति का यह बीज समाप्त होने वाला नहीं है।





# जीवन की कला

---

जीवन की कला बताता हूँ। जब लोग टेंशन दें तो नहीं लेना। साइड होकर निकल जाना। कभी कोई गाली देता है तो आप भी गाली देते हैं। यह आपका नुकसान है। एक आदमी टेंशन दे रहा है तो आप गुस्सा हो गये तो उसका तो काम बन गया। जब आपने नहीं ली तो उसी की तरफ है टेंशन। यह है—जिंदगी की कला। अपने को साध लो।

**एकै साथे सब सधे, सब साथे एक जाय॥**

एक बार महात्मा बुद्ध को एक व्यक्ति गालियाँ बके जा रहा था। उनके शिष्य बैठे थे। बुद्ध मुस्कुरा रहे थे। एक शिष्य उठा, कहा कि आज्ञा दो, इसे सीधा कर दूँ। बुद्ध ने एक फल लिया, कहा कि यह फल किसका है? शिष्य ने कहा कि आपका। बुद्ध ने कहा कि मैं तुम्हें देता हूँ। तुम ले लेते हो तो किसका हुआ? शिष्य ने कहा कि मेरा। बुद्ध ने कहा कि अगर तुम नहीं लेते हो तो किसका हुआ? शिष्य ने कहा कि आपका।

जो टेंशन देते हैं, वो उनकी प्राब्लम होती है। यदि पति टेंशन दे तो भी मत लेना। यदि पत्नी टेंशन दे तो भी मत लेना। यह बहुत नुकसान करती है। यह शारीरिक मार से भी बहुत तगड़ी होती है। शरीर में कहीं चोट लगे तो ब्रेन संभाल लेता है। पर टेंशन से सीधा ब्रेन को चोट लगती है। यदि मुसीबत आए तो उसका हल ढूँढ़ना। कभी फिल्मी दुनिया वाले भी बड़ा अच्छा कह जाते हैं।

**वो अफसाना जिसे अंजाम तक लाना न हो मुमकिन।  
उसे इक खूबसूरत मोड़ देकर छोड़ना अच्छा॥**

कोई ऐसी बात, जिसे अंजाम तक नहीं पहुँचा सकते हैं, उसे खूबसूरत मोड़ देकर छोड़ना अच्छा है। ज़िंदगी में ऐसी समस्याओं को मोड़ दो। नहीं तो विवाद हो जाएगा।

कोई बैर रख रहा है तो उसकी अपनी टेंशन होती है। आप लड़ाई करेंगे तो आपका नुकसान है। एक ने गाली दी, चला गया। मन ने कहा कि कमज़ोर समझा तुझे। तू कायर है क्या। तोड़ दे इसका मुँह, बता दे कि तू क्या है। यह मन करता है। वो तो गाली देकर चला गया। आगे की कहानी मन करता है।

तेरा बैरी कोई नहीं, तेरा बैरी मन॥  
इक आपे को डार दे तो प्रीत करे सब कोय॥



गुप्त भयो है संग सबके। मन निरंजन जानिये॥  
निराकार जो वेद बखाने। सोई काल कोई मरम न जाने॥  
ज्ञान कथै अरु ज्योति दृढावै। जोति स्वरूप मर्म नहीं पावै॥  
जोति स्वरूप निरंजन राई। जिन यह सकल सृष्टि भर्माई॥  
सुर नर मुनि सबको ठगे, मन ही लिया औतार।  
जो कोई या ते बचे, तीन लोक से न्यार॥

# अमरलोक का भेद केवल साहिब ने दिया

---

इंसान परमात्मा का अनुपम सृजन है। इंसान को शास्त्रों में ईश्वर का प्रारूप कहा गया है। यह मानव तन बड़ी दिव्य शक्तियों से सज्जित, बड़ा अजीब और अनोखा है। वेदों में भी इस शरीर के लिए कहा गया है कि यह नर नारायणी देहि है। यह ज्ञान का शरीर है। देवता भी इस शरीर को प्राप्त करने की चाह रखते हैं।

यह आत्मा साधारण नहीं है। पहले भी संतों ने, महापुरुषों ने, हमारे धर्म शास्त्रों ने, ऋषि-मुनियों ने परमात्मा और इंसानी शरीर पर बहुत कुछ कहा है। इस तन पर, मानव चोले पर बहुत कुछ कहा गया है। कई वाणियों में, शब्दों में, सन्तों की साखियों में, धर्मशास्त्रों में इंसान के वजूद और परमात्मा पर कहा गया है। इस शरीर को दिव्य शक्तियों का केन्द्र माना गया है।

परमात्म विषय और मानव शरीर में अद्भुत शक्तियों के सम्बन्ध में सन्तों ने, महापुरुषों ने कहा। इस मानव तन पर नित नए अनुसंधान हो रहे हैं। षट्मार्ग हैं योगियों के, उनमें भी साधना के सूत्रों पर बहुत कुछ कहा गया। गीता में भी इस शरीर को विराट् रूप कहा गया। वेदों में भी यह कहा गया कि समस्त ब्रह्माण्ड इस पिण्ड में है। योगवशिष्ठ महारामायण त्रेतायुग का ग्रन्थ है। उसमें वशिष्ठ मुनि ने रामचन्द्र जी को तत्त्व ज्ञान दिया है। जब श्री रामचन्द्र जी ने कहा कि यह दुनिया दुःखों का घर है, तब वशिष्ठ मुनि ने श्री रामचन्द्र जी से कहा – हे राम, किस दुनिया की बात करते हो! यह दुनिया बनी ही नहीं। यह तुम्हारा सृजन है, यह तुम्हारे चित्त की स्फुरणा है।

हम देख रहे हैं यह मानव विकासशील है। जैसा कि वैज्ञानिक कह रहे हैं कि जब विस्फोट हुआ तब सृजन हुआ और शून्य विस्तीर्ण होने लगा।

वैज्ञानिक कह रहे हैं यह अभी भी बढ़ता ही जा रहा है, शून्य के बढ़ने का सिलसिला अभी रुका नहीं है। यह विस्तार करता जा रहा है।

आज तक परमात्मा पर कई साधकों ने, कई महात्माओं ने अपने विचार रखे। वर्तमान में दुनियाभर में इस पर संगोष्ठियाँ हो रही हैं, सबके विचारों को सुना जा रहा है। जब हम निष्पक्ष होकर इस बात को देखें तो पता चलता है कि जितने भी विचारक हैं, जितने भी मत-मतान्तर हैं, जितनी भी आचार-संहिता वाले लोग हैं, कहीं न कहीं वो साहिब से जुड़े हुए हैं।

आइए, देखें, आखिर कबीर साहिब ने आकर दुनिया को क्या अजूबी चीज़ दी, वो कैसी धार्मिक क्रान्ति लाए! आत्मा तथा परमात्मा के लिए इस शरीर के लिए अन्य लोगों ने क्या कहा और कहाँ तक पहुँचे! उससे आगे साहिब ने क्या कहा, उनका लक्ष्य क्या था! साहिब के संदेश, उनकी शिक्षा का क्या प्रभाव हुआ!

साहिब ने मानव-तन की आंतरिक एवं आध्यात्मिक शक्तियों को उजागर किया, उनका महत्त्व बताया। उन्होंने बहुत स्पष्ट बात कही है। साहिब ने कहा, योग का संबंध हमारे शरीर के स्नायुमण्डल से है, जिसके जागृत होने से अनेक अद्भुत अनुभूतियाँ होती हैं।

योगमत और संतमत में बहुत बड़ा भेद है। तर्क ज्ञान को परखने की कसौटी है। जैसे सोने को कसौटी पर परखा जाता है, उसी प्रकार तर्क को ज्ञान की कसौटी पर परखा जाता है। तर्क सत्य युक्त होता है। तर्क सत्य को स्थापित करता है। जब योग की बात आती है तो 6 महायोगेश्वरों का नाम आता है - (1) शिवजी, (2) दत्तात्रेयजी, (3) शुकदेवजी, (4) व्यासजी, (5) वासुदेव श्रीकृष्ण जी तथा (6) गोरखनाथ जी। कालान्तर में इनसे बढ़कर कोई योगी नहीं हुआ।

कबीर साहिब ने जो कुछ भी कहा, वो अनूठा कहा, निराला कहा, सहज कहा, सुलभ कहा, उत्तम कहा और बहुत आगे कहा। जितना कुछ पूर्व में कहा गया, उससे आगे कहा। उनकी वाणी में बहुत वजन है।

उन्होंने अपनी तार्किक शैली में समाज के बाह्याडंबर का जोरदार खण्डन किया है, कटु-प्रहार किए हैं। वो मानव को जगाने की बात कर रहे हैं। किसी के धर्म में हस्तक्षेप नहीं कर रहे हैं। जितनी छुआछूत, जातिवादिता आज है, उतनी कभी नहीं रही। आज हम जातिवादिता और धार्मिक संकीर्णता के गन्दे दौर से गुज़र रहे हैं।

आज प्रत्येक स्थान पर प्रतिस्पर्द्धा है। ठीक यही बात, आज जब हम अध्यात्म पर निगाह डालते हैं तो पाते हैं कि लोग कई तरह के प्रलोभन दे रहे हैं, दिव्य शक्तियाँ हैं, यह कहकर नाना मत-मतान्तर सबको अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयास कर रहे हैं।

जितने भी मत-मतान्तर दुनिया में हैं, सब कुछ न कुछ अनुमान लगाकर परमात्म विषय पर बोल रहे हैं। लोग चुपके से साहिब के संतमत को ले रहे हैं और जो खण्डन करने वाले हैं, वो भी अपने साहित्य में साहिब की वाणियों को जोड़ रहे हैं। सभी स्थानों पर साहिब के साहित्य की महक महसूस की जा सकती है। जब भी अमर-लोक की बात होगी तो कबीर साहिब का नाम स्वतः ही लिया जाएगा, क्योंकि वहाँ का पता सबसे पहले उन्होंने ही इस दुनिया को दिया।

जिनके स्वार्थों को चोट लगी, जिनके मकसद, हितों को नुकसान होने लगा, उन्होंने साहिब की छवि को बिगाड़ने का पूरा-पूरा प्रयास किया। बहुत-सी अनर्गल बातें उनके विषय में कही कि उनकी शादी हुई थी, लोई उनकी पत्नी थी, उनको दो संतान थी, आदि। ऐसी बातें करके लोगों को गुमराह किया जबकि सच इससे कहीं अलग है।

आज हर जगह छोटी बिरादरी के लोग ही साहिब से जुड़े हैं, उच्च वर्ग नहीं। इसकी मूल वजह है कि साहिब की छवि को बिगाड़कर ग़लत तरीके से लोगों के समक्ष प्रस्तुत किया गया है। साहिब का मत छोटी जाति के लोग अपना रहे हैं, वे ज्ञान से नहीं, उनको समझकर नहीं अपना रहे हैं। वो तो इसलिए अपना रहे हैं, क्योंकि साहिब ने सबको अपने

समान समझा, समत्व की बात की, छुआछूत का खण्डन किया। साहिब किसी का जातीय स्तर बढ़ाने नहीं आए थे, वह तो रूहानी स्तर ऊँचा उठाने आए थे। ऊँची और छोटी जाति का प्रश्न ही नहीं उठता।

वर्तमान में अधिकांशतः साहिब की वाणियों को रूपांतरित करके उपयोग में लाया जा रहा है। कुछ लोग अंधवादिता के कारण, कट्टरवादिता के कारण खुले रूप से उनकी वाणी नहीं अपना रहे हैं। जातिवादियों के भय से, समुचित आर्थिक लाभ न प्राप्त हो सकेगा, इस भय से, खुलकर नहीं कह पा रहे हैं। सभी साहिब की बात दोहराते हैं पर गुप्त रूप से, उसमें हेर-फेर करके, स्पष्ट रूप से नहीं। उनका सोचना है कि यदि हम साहिब को लेकर चलेंगे तो उच्चवर्गीय लोग हमारे पास नहीं आएंगे।

दुनिया में समझने वालों की कमी नहीं है। समझने वाले तो बहुत हैं पर समझाने वाले बहुत कम हैं। लोग समझा तो रहे हैं पर वो यह नहीं जानते कि समझाना किस तरह से है, किस शैली से है।

साहिब की वाणी सम्यक, सार्थक और महत्वपूर्ण है। उनकी शिक्षा जातिगत नहीं वरन् मानव के लिए है। साहिब की शिक्षा का सही स्वरूप जनता के सामने लाना होगा। स्वाभाविक और सात्विक नियम को समझना होगा। परमात्मा ने सभी को समान बनाया है। प्रकृति के नियम सभी के लिए समान हैं। सभी को सर्दी-गर्मी, भूख-प्यास, नींद-थकान आदि का अनुभव समान रूप से होता है। सभी के शरीर की रचना समान है।

जातीय विभेद को दूर करने के अतिरिक्त साहिब ने समाज-क्षेत्र में सात्विकता और आचरण-प्रवणता को प्रचारित किया है। उन्होंने आत्मा और परमात्मा के एक्य को प्रस्थापित किया है।



# एक सिस्टम फिट कर देता हूँ

बन्धुओ, मेरी यह मान्यता है कि परमात्मतत्त्व के विषय में संसार के लोगों में या महात्माओं में मतभेद बहुत कम हैं। किसी न किसी रूप में विश्व की जितनी भी बड़ी आध्यात्मिक हस्तियाँ हुई हैं या धर्मवेत्ता हुए, धर्म के अगुवा हुए, उन्होंने परमात्म रूप को स्वीकार किया है। 'ईश्वर है', इसे स्वीकार किया है। परमात्मा के प्रति हमारी मान्यताओं में भिन्नता नहीं है। धरती पर रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार कर रहा है, मान रहा है कि ईश्वर है। हमारी भिन्नताएँ कहाँ से हैं! फिर मतभेद किन बातों का है! कहीं परमात्मा के वजूद और स्वरूप के विषय में हम लोगों में मतभेद हैं।

आइए, हम सच की तरफ़ चलते हैं। ये मतभेद कैसा है! विचारणें बिना सम्य ज्ञानम्। भारवी, एक अच्छे महात्मा हुए, वो कह रहे हैं – विचारणें बिना सम्य ज्ञानम् कितम्। विचार के बिना समय ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती है। देखते हैं, परमात्म स्वरूप के विषय में हम सबकी मान्यतायें क्या हैं? परमात्मा है, इसका प्रमाण क्या है? आप देखें, मैं एक सरल प्रमाण दे रहा हूँ।

पाश्चात्य विद्वान भी कह रहे हैं कि ईश्वरीय सत्ता है, जो इस संपूर्ण विश्व का संचालन कर रही है। ईश्वर के विषय में हमारे वेदों ने भी कहा है। अगर हम अपनी भौतिक दृष्टि से देखें तो लग रहा है कि संसार का संचालन एक दिव्यशक्ति कर रही है, समस्त नक्षत्र अपनी मर्यादा, निर्धारित व्यवस्था के अनुसार गति कर रहे हैं। पृथ्वी, ग्रह, उपग्रह, अंतरिक्ष की जितनी भी शासित वस्तुएँ हैं, इनका नियंत्रण हो रहा है। बन्धुओं, आप में से कुछ लोगों का यह मत होगा कि वैज्ञानिक परमात्मा को नहीं मानते, यह भूल है। वैज्ञानिक लोग परमात्मा के स्वरूप को

स्वीकार करते हैं। वो तो अच्छी तरह मानते हैं कि यह सुपर कम्प्यूटराईज है, पूरी व्यवस्था। एक सत्य, एक प्रेम, एक परमात्मा, एक शक्ति है, दूर, पास होते भी दूर, जो पूरे ब्रह्माण्ड का संचालन कर रही है।

एक शक्ति है, एक परमात्मा है। पाश्चात्य विद्वानों का भी मत ईश्वर के प्रति यही कह रहा है कि हम देख रहे हैं, नक्षत्रों में, सौरमण्डल में, शून्य में, ब्रह्माण्ड में जितनी भी वस्तुएँ हैं, अपने तरीके से क्रमबद्ध रूप से अपना कार्य कर रही हैं। सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी, समस्त ग्रह अंतरिक्ष में अपनी निर्धारित दिशा में चल रहे हैं। इनकी दिशाएँ स्थापित की हुई हैं। मैं पूछना चाहता हूँ कि सुपर कम्प्यूटर में मेमोरिज हैं या रोबोट सब कार्य करता है। आखिर उसकी क्षमतायें किसी ने स्थापित की हैं ; उसमें मानव ने अपनी व्यवस्था बनायी हुई है। उसे ऊर्जा कहाँ से मिलती है ? सिस्टम कैसे हैं ? वर्तमान में कम्प्यूटर पूरे कार्य करता हुआ मिलता है।

जिस प्रकार आजकल अनेकों यंत्र कम्प्यूटर द्वारा स्वचालित हैं, उसी प्रकार संपूर्ण ब्रह्माण्ड एक परम सत्ता द्वारा संचालित हैं। वही परम सत्ता परमात्मा है। दुनिया के सभी धर्म इस बात का समर्थन करते हैं।

आइए, सुनें, किसी ने परमात्मा को निर्गुण रूप में मान लिया है, किसी ने परमात्मा को जल रूप में मान लिया है। किसी ने वृक्षों के रूप में, किसी ने मिट्टी के रूप में, किसी ने परमात्मा को सूर्य रूप में मान लिया है तो किसी ने 33 करोड़ देवताओं में से विशिष्ट करके मान लिया है। किसी ने परमात्मा को देवरूप में माना है, किसी ने निराकार रूप में मान लिया है। जो जहाँ मान रहा है, वहाँ से वो हट ही नहीं रहा है। आप पिछली कथाएँ सुनते हैं कि मनुष्य भी बड़ा पिछड़ा हुआ लग रहा है।

सर्वप्रथम तो जो व्यक्ति अपने को शरीर मान रहा है, उसको मैं बहुत पिछड़ा हुआ मानता हूँ। मैं एक बात बताता हूँ, यह घमंड नहीं है, मैं कभी भी थकता नहीं हूँ। मेरी माँसपेशियाँ, मेरा शरीर तौबा भी कर दे तो भी नहीं थकता हूँ। वजह – मेरी यह मान्यता है कि मैं शरीर नहीं हूँ, मैं अपनी बड़ाई नहीं बोल रहा हूँ। सुनिए –



एक बार मैं लद्दाख में था। एक पहाड़ी थी 22,000 फीट की, वहाँ मोर्चा था। 17,000 फीट के ऊपर ऑक्सीजन की समस्या होती है। मोर्चे तो 17,000 फीट पर थे, पर एक और पोजीशन थी, संयोग से यदि चीनी 17,000 फीट पर हमला करने आ जाते तो ऊपर 22,000 फीट पर एक प्राकृतिक डिफेन्स हमारा सहायक मोर्चा बना हुआ था और वो ऐसी पहाड़ी थी, जहाँ से चीन का दाहिना दर्रा था। चीनी वहीं से आ सकते थे। 17,000 फीट को जो लाईन थी, उस पहाड़ी की, उसमें से लोग आते-जाते थे। हम लोग भी आते-जाते थे। लेकिन जो 22,000 फीट ऊँचाई थी, वहाँ कोई नहीं जाता था। वहाँ हेलिकॉप्टर, युद्ध सामग्री इत्यादि लाता था। हम दस-बारह व्यक्तियों की एक टोली ऊपर भेजी गई कि जाओ भई, देख कर आओ उसको। बड़े साहसी दस-बारह फौजियो को छाँटा गया, हज़ार में से। जिसमें एक ऑफिसर, एक जे.सी.ओ. और आठ-नौ हम जवान थे। जब हम चले 18,000 फीट पर, दो जवानों को चक्कर आ गया। ऑक्सीजन की जब कमी होगी शरीर में सुईयाँ सी चुभेंगी और दिमाग में साँय-साँय होगी। बोले-हम नहीं चल सकते। कोई बात नहीं, बैठो ! मैंने कहा ; क्योंकि वो जो 5,000 फीट का रास्ता तय करना था, जो वर्टीकल (खड़ा) था और हॉरिजोन्टल (सीधा) हमें तीन-चार किलोमीटर रास्ता तय करना था, जो बहुत ही कठिन रास्ता था। 19,000 फीट जाने पर चार जवान और बैठ गए, बोले - हमारे फेफड़ों में सुईयाँ जैसी लग रही हैं। जैसे-जैसे ऑक्सीजन की कमी होगी तो माँसपेशियाँ प्रभावित होंगी। उनसे कहा - तुम भी जल्दी से नीचे वहीं जाओ जहाँ 17000 फीट पर अपना मोर्चा था। वे भी वापस आ गए।

हम तीन जवान और ऑफिसर एक साथ चले। कुछ दूर जाने पर ऑफिसर साथ में था उसे भी चक्कर आ गया, वह बोला - साहब अब आगे नहीं चलूँगा। एक साहसी था बोला - मैं चलूँगा। तीन जवान और मैं चला, करीब 20,000 फीट के आसपास पहुँचे थे दो और वहीं बैठ गए

; नींद जैसी बेहोशी आयी। मैं मुस्करा रहा था। जब हम 21,000 फीट पर पहुँचे तो जो जवान साथ में था, वह बोला – ऐसा लगता है जैसे जान चली जाएगी। मुझसे बोला, चलो भाई पीछे। मेरी उम्र ठीक 20 वर्ष थी। मैंने कहा, साहब घबराओ मत। मैं ऊपर तक जाकर देखकर आता हूँ। वह बोला, वहाँ आपको चक्कर आ गया तो कौन संभालेगा ; चलो अभी दोनों एक-दूसरे के सहारे नीचे चलते हैं। मैं बोला – आप जाओ। आप मानेंगे, मेरा मन भी कह रहा है कि चक्कर आएगा। मैंने कहा, मैं हूँ ही आत्मा; मैं शरीर नहीं हूँ ; किसको चक्कर आएगा। आत्मा को किसी वायु की आवश्यकता नहीं, ऑक्सीजन की भी नहीं। मैं डेडीकेट हुआ ; आप मानेंगे, मैं ऊपर गया, देखा मक्खन था, ब्रेडें थी। कई वर्ष पहले रखा था। खराब क्यों नहीं हुआ। बर्फ में थी, कोल्ड स्टोर में थीं। गोला बारूद भरा था। सभी चेक किया – कितने मोर्चे, डिफेंस कैसा था, कहाँ कमांड पोस्ट थी। मैंने नक्शा बनाया। उसका बाऊचर नीचे था। कमांडेंट ने बताया नहीं कि बाऊचर मेरे पास है ; देखना चाहता था कि गप्प मार रहे हैं या सच में जाकर देखेंगे। मैं पूरा विवरण बना कर लाया – कहाँ कमांड पोस्ट है, कहाँ क्या चीज़ है। मैं वहाँ एक घंटा रुका। वे 17000 फीट नीचे भी नहीं उतर पाये थे। उनको आकर पिकअप कर लिया। मैं अपनी बड़ाई नहीं बोल रहा हूँ। जब आकर मैंने विवरण दिया तो ऑफिसर बोला, तुम सही में गए हो। फिर उसने बताया, यह पूरा विवरण है, जो-जो चीज़ें तुम बता रहे हो, वे कहाँ हैं। उसने फिर अपना बाऊचर दिखाया और मुझे पुरस्कार भी दिया।

कहने का मतलब है, मैं कभी नहीं थकता। थकना काम शरीर का है। तो बंधुओ, परमात्म तत्त्व के प्रति जो आपको ताकत दे रहा है ; ऊर्जा परमात्मा कहलाती है। यही ऊर्जा ईश्वरीय सत्ता कहलाती है ; यही ऊर्जा अद्भुत शक्ति कहलाती है। आप इसके बिना नहीं चल सकते। आप यह मत सोचना कि यह ऊर्जा आपको रोटी से मिल रही है, यह मत सोचना यह ऊर्जा आपको पानी से मिल रही है, यह मत सोचना कि यह ऊर्जा

आपको भोजन से मिल रही है, नहीं सोचना। एक प्राकृतिक ऊर्जा का स्रोत आपकी आत्मा के अंदर है। इसको ऋषियों ने प्रमाणित करके दिखाया। 50-50 हजार वर्ष जीकर गहन समाधि में बैठकर। मैं भी एक बात कह रहा हूँ, आप चाहें तो एक हजार वर्ष भी जी सकते हैं। पक्का प्रमाणित करूँगा। समय आएगा सब चीजें होंगी। आप चाहें तो 200 वर्ष भी जी सकते हैं। आप जितना चाहे जीवन की अवधि को बढ़ा सकते हैं। आलू को गर्मी में बाहर रखो तो खराब हो जाएगा, परन्तु कोल्ड स्टोरेज में खराब नहीं होगा।

अपने जीवन और शरीर को ऐसे ही समाधि द्वारा ऋषियों ने लम्बी अवधि तक रखा। बहुत पुरानी बात नहीं है, 600 वर्ष पूर्व स्वामी रामानन्द हुए। उन्होंने सात सौ वर्ष की आयु में शरीर छोड़ा। अभी देवरहा बाबा हुए, देवरिया के थे 350 वर्ष की आयु में शरीर छोड़ा। वे 23 घंटे जागते थे और गुफा में तप करते थे और एक घंटे के लिए बाहर आते थे।

एक ऊर्जा चाहिए। गाड़ी चल रही है, ऊर्जा चाहिए ; पंखें चल रहे हैं, ऊर्जा चाहिए। सोलर सिस्टम, लाइटें जल रही हैं, वो पहले ग्रेविटी पावर को एकत्रित करती हैं, सूर्य से। अपना भी दिमाग, आपका हृदय पहले कहीं से शक्तियों को प्राप्त कर रहे हैं, पहले कहीं से शक्तियाँ आपके अंदर आ रही हैं। एक सूत्र इस शरीर के अंदर लगा हुआ है, जो आपकी आँखों में, आपके दिमाग में, आपके पाँव में, आपके हाथों में क्रियाशीलता और गति की ताकत दे रहा है। वही सत्ता परमात्मा कहलाती है (ऊर्जा ही परमात्मा है)। मोटर को चलाने के लिए पेट्रोल नहीं चाहिए ? जैसे आप देखें, आगे भविष्य में ईंधन, तेल समाप्त हो जाएगा, डीजल-पेट्रोल समाप्त हो जाएगा। पृथ्वी हमारी आवश्यकताओं को पूर्ण करने में सक्षम नहीं है। ज़मीन की हालत वैसे ही बुरी होती जा रही है, जो खनिज हम निकाल रहे हैं, पंपिंग से पानी निकाल रहे हैं, जो ऑयल निकाल रहे हैं, पेट्रोल पदार्थ निकालते जा रहे हैं, ज़मीन को खोखला करते जा रहे हैं। इसी गति से अगर ज़मीन से खनिज तत्त्व बाहर निकला तो यह बहुत कम

समय में नष्ट हो जाएगी। सन्तों को इसकी चिन्ता है, उनका दृष्टिकोण बड़ा गहरा है ; वो जो बातें बोल रहे हैं, बड़ी अच्छी हैं। मैं वैज्ञानिकों से बहुत स्नेह करता हूँ। बताऊँ क्यों ! वे वास्तव में सच्चे लोग होते हैं ; वो झूठे नहीं होते हैं। वो झूठे हुए थोड़ा तो सिस्टम ही फेल हो जाएगा। वे आदी हो जाते हैं, सही सिस्टम के। उनको दुनिया की फिक्र है। जब इंसान कॉमनसेंस में होता है तो सिर्फ अपनी फिक्र रखता है। जब उसमें समाधि की गहनता आती है, सोच बढ़ जाती है तो अपने देश, अपने गाँव, कस्बे की फिक्र रखता है।

राया में मैं अपना स्कूल बना रहा था तो हेड मास्टर जी बोले कि हम आपका नाम लिखना चाहते हैं। मैं बोला - रत्ती भर भी इच्छा नहीं है मेरी कि आप इसमें मेरा नाम लिखें। फिर क्या हुई सेवा, जब अपना नाम रखने के लिए हम परेशान हों। मैं अपने नाम के लिए परेशान नहीं हूँ, वजह एक है - “कोई न रहा एक पुरुष रूप रहेगा।” वो ही रहेगा ; जिस दिन प्रलय आ जाती है। न जाने कितने बड़े पीर पैगम्बर धरती पर आए, सिर्फ एक वो ही रहेगा ; पूरी व्यवस्था परिवर्तित हो जाती है ; सिस्टम समाप्त हो जाते हैं। कोई पूछने वाला भी नहीं होगा, जब यह पृथ्वी नष्ट हो जाएगी, पता ही नहीं होगा, कितने कृष्ण आए, ब्रह्मा आए, कितने शिव सनकादिक आए। कागभुसुंडी जी रामायण में कह रहे हैं - 100 बार महाप्रलय देखी, जिसमें देवी देवताओं को भी लय होते देखा। वो कह रहे हैं ब्रह्मा, विष्णु, शिव सनकादिक को भी मैंने लय होते देखा। पता नहीं लोग क्या पोथियाँ पढ़ रहे हैं, क्या धर्मशास्त्र पढ़ रहे हैं। लेकिन कभी भी किसी भी देश काल में नष्ट नहीं होने वाला “आदि सच युगादि सच है भी सच नानक होंसी भी सच” जो कभी भी किसी देशकाल अवस्था में नष्ट नहीं होता उसे अनादि, अनन्त कहते हैं।

वो सत्य अनादि अनन्त है। ऐसे तो सूर्य भी सच लग रहा है, पर ये अनादि शांत है, एक दिन नष्ट हो जाएगा। पृथ्वी भी सच लग रही है पर

ये अनादि अनन्त नहीं है, अनादि शांत है। परमात्मा अनादि अनन्त है, एक वो ऊर्जा है, एक वो तत्त्व है जो वृद्ध नहीं होता, नष्ट नहीं होता, न्यूनाधिक नहीं होता, विभाजित नहीं होता, अभौतिक अविनाशी इसलिए इसकी कई संज्ञाएँ दीं। तो परमात्मा के विषय में हम सबकी अलग-अलग मान्यताएँ बन गयी हैं। आइए, हम सब स्वच्छन्द भाव से इस बात पर विचार क्यों न करें, कोई आपस में क्यों लड़ाई करें ! हम प्रेम से भी तो किसी को जीत सकते हैं ; प्रेम से भी तो किसी का नज़रिया बदल सकते हैं। मैं अपने सत्संगियों को बोलता हूँ – जो मेरी निन्दा कर रहे हैं, आप उनसे झगड़ा न करो ; कारण तो ढूँढो न, निन्दा का; क्यों अंधेरे में हैं ! किसी ने मुझे डाकू कहा, सामान्यजन थे बेचारे ; उन्होंने मान लिया, सरल थे। कहा, ये डाकू हैं। ठीक है, देखो कितने साधारण हैं वो लोग, जो मेरी निन्दा कर रहे हैं। उनको किसी ने कहा, ये डाकू हैं। कितने भोले हैं, वो मुझे डाकू समझने लगे। किसी ने कहा उग्रवादी है, वो कितने सीधे लोग हैं, उन्होंने मुझे उग्रवादी मान लिया; ठीक है, आपने कभी उनकी स्थिति को सोचा नहीं होगा और घृणा बना दी ना।

मैंने राया में एक ही सत्संग दिया। सब लोगों ने कहा, हमें अंधकार में रखा था, कुछ लोगों ने कहा – महाराज ! आपके विरुद्ध काफी बातें कहीं। अब हमें पता चल रहा है, आपके विरुद्ध बातें क्यों कही गयी ! अपनी मेजोरिटी बनाने के लिए बदमाश टोली ने सोचा कि पिण्ड के लोग उस तरफ न जुड़ें; वजह थी। उन्होंने सोचा कि इनके यहाँ बड़े अच्छे-अच्छे लोग भी आते हैं, बहुत संख्या में। मेरा मानना है, जो एक ढर्रा चला आ रहा हो, जब भी कोई परिवर्तन करेगा तो उसकी तीन स्थितियाँ होंगी। पहले आप हम सब मानते थे, ये सूरज देवता अपने घोड़ों पर दौड़ रहा है, पृथ्वी की परिक्रमा कर रहा हैं, हमारे पूर्वजों की ये मान्यताएँ हैं। लेकिन न्यूटन, आईस्टीन आदि वैज्ञानिकों ने पहले ही कह दिया कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर चक्कर लगा रही है। उनकी बहुत जबर्दस्त भर्त्सना हुई। क्यों हुई ! क्योंकि हमारी एक धारणा बनी हुई थी।

एक उदाहरण दे रहा हूँ। वैज्ञानिकों का बड़ा विरोध हुआ। थोड़े समय बाद, जब उन्होंने अपने सिद्धांत बताए, ये-ये सिस्टम हैं, इस कारण से हम प्रमाणित कर रहे हैं, रात और दिन हो रहे हैं, ऐसा-ऐसा हो रहा है, ऋतुएँ आ रही हैं, तो कुछ व्यक्ति मानने लगे। वो चुप हो गए। वो अंदर से मानने लगे, इनकी बात में वज्रन है। लेकिन चुप क्यों हुए! झिझके, पहले हम इनकी निन्दा कर चुके हैं और अब इनको कहेंगे 'हाँ', तो हमारा अपमान होगा। तो दूसरी स्थिति आती है, शांत हो जाता है आदमी; ठीक है। चुप हो जाता है।

तीसरी स्थिति में अनुकरण करता है, थोड़ा-सा। हो सकता है, वो सब लोग मेरी प्रशंसा करना शुरू कर देंगे। ठीक है ना। अच्छा तो देखिए, वही प्राध्यापक बच्चों को पढ़ा रहे हैं कि बच्चों पृथ्वी सूर्य के चारों ओर चक्कर लगा रही है। अब हम सब सहमत हो गए। लेकिन पहले की स्थिति कैसी थी! हो सकता है, आज मैं वो बात कह रहा हूँ या साहिब ने कही थी तो क्रांति हुई थी। इसका एक प्रभाव हुआ, अब कुछ लोग सहमत हो गए हैं। अच्छी तरह। संतमत जब चला तो सहमत हुए; एक धर्म भी बन गया। सिख धर्म भी बन गया। उन्होंने इस नियम का अनुकरण किया। एक समय आएगा जो बाकी बचे हुए लोग हैं, जो दूसरी धारा वाले हैं उसमें विलय हो जाएँगे और तब वह महसूस करने लगेंगे कि पहले हम अंधकार में थे। जब यह परिवर्तन आ जाएगा ना तो ऐसा होगा, संतमत समझाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी, क्योंकि जन्म के माता-पिता संतमत की बात बच्चों को सिखाते जाएँगे। किसी को हिन्दू बनाने की कोशिश नहीं की जाती है। हिन्दू संस्कृति में रहता है, माता-पिता हिन्दू हैं। जब डॉ. बारासिंह के पास कोई भी नहीं था, वो जब उस दुनिया की बात कर रहे थे, लोग मान ही नहीं रहे थे। तो, वो राजा या किसी-किसी को अपनी अध्यात्मिक शक्ति से उस दुनिया को दिखलाते थे। क्योंकि वो जानते थे, उनके पास आधार नहीं है। हमारे पास आधार हैं। मैं अनेक संतों व महापुरुषों की वाणी का हवाला दे दूँगा। मेरे पास तो आधार है, उनके पास आधार ही नहीं था। कितना मुश्किल रहा होगा

उनका यह सफ़र जनता तक पहुँचाने में ; अपनी बात लोगों के सामने रखने में उनको बहुत कठिनाई हुई होगी ।

सूर्य की ऊर्जा कहाँ पर है, आप देखें, चारों ओर सूर्य की ऊर्जा है । पर सौर में एक सिस्टम है, वो ऊर्जा को एकत्रित कर लेता है । ऐसा तो नहीं होगा न कि एक दीया रख दो सूर्य के सामने, रात को जलना शुरू कर देगा । जलता है क्या ? जापान में, अमेरिका में सौर ऊर्जा से गाड़ियाँ भी चल रही हैं, पर यह तकनीक अभी विकसित नहीं हुई है । एक समय आएगा, यह तकनीक विकसित हो जाएगी, आम आदमी तक पहुँचेगी, पर ये सौर लाइट क्यों जल रही है ! बाकी चीज़ों में सूर्य की ऊर्जा क्यों नहीं एकत्रित हुई ; क्योंकि उसमें सिस्टम नहीं था, और सूर्य का जो लैम्प था, उसमें एक सिस्टम रखा था । एंटीना में ; उसने क्या किया ? ऊर्जा एकत्रित की और रात में रोशनी हो गयी ।

इस तरह गुरु एक सिस्टम फिट करता है शरीर में और आपके अंदर ईश्वरीय ऊर्जा आने लगती है । हम आपको कह रहे हैं, बैटरी ऑन रखो, ऊर्जा आएगी । आपके अंदर हमने ऊर्जा सिस्टम फिट कर रखा है । एक व्यक्ति मुझे बोला भी, गुरु जी मैं एक बात के लिए बड़ा परेशान हूँ । मैंने कहा - कहो, तो बोला जिस दिन से नाम लिया है, लगता है, आप मेरे साथ हो, सोते भी, जागते भी ; पक्का खड़े हुए लगते हो ।

बड़ा खोजी था वो भी; बोला - गुरुजी आप उसके साथ भी रहते हो और मेरे साथ भी राँजड़ी में भी रहते हो और बहुत लोगों से पता किया वो भी कह रहे हैं । आगे कहा - मुझे लगता है, दो बातें हो सकती हैं या तो नामदान के अवसर पर आप अपना एक रूप निकालकर प्रत्येक में दे देते हो या तो एक बात यह हो सकती है या ऐसा होता होगा, आपसे सबकी तार जुड़ी है और एक साथ ही आप यह अद्भुत कार्य कर रहे हैं । मैंने कहा - तुम्हारा पहला विचार सही है, तभी तो कह रहे हैं - “ना रब में तीर्था दिखाया, ना रोजा नवाजे, बुल्लेशाह नू मुर्शिद मिलिया अन्दरो रब लखाया ।”

बन्धुओ, आप मानेंगे, ऊर्जा वाला सोलर सिस्टम आपके साथ फिक्स कर देता हूँ, ठीक है। केवल सोलर लैम्प ही सूरज की रोशनी रिसीव करता है और रात को रोशनी देता है। आप बल्ब रख दो, वो नहीं रोशनी देगा, ट्यूब लाईट रख दो, वो नहीं रोशनी देगी, बाकी चीजें रख दो, वो नहीं रोशनी देंगी। उनमें सिस्टम नहीं है, ऊर्जा को एकत्रित करने का, ठीक है। आपमें मैंने सिस्टम जोड़ दिया है, उसे पृथक नहीं करना। यह पृथक हो जाता है, शराब पीने से, चोरी, बेईमानी करने से, परस्त्रीगमन करने से। जैसे प्रत्येक मनुष्य के शरीर में इस चमड़ी के नीचे एक सफेद चमड़ी है। जिनकी चमड़ी मटमैले रंग की है, उन्हें बीमारी होने के अधिक आसार है, जिनकी लाल रंग की है उनको कम। सफेद दाग के निशान ज़ख्म की जगह से शुरू होते हैं।

वैज्ञानिक या सोलर सिस्टम वाले, जब प्लेट को सेट करते हैं तो आमतौर पर उसका मुँह नब्बे अंश और पश्चिम दिशा की ओर रखते हैं। हमने क्या कहा है आप एंटीने (ध्यान रूपी एंटीना) को दुनिया की ओर नहीं लगाना। आप टेलिविज़न का एंटीना जहाँ से तरंगे आती हैं, वहीं लगाते हैं ना ; इस मानव मन की विशेषता सभी धर्मशास्त्रों में कही गयी है। सन्त महापुरुषों ने इस मानव जीवन का महत्त्व कहा है। इसमें नर नारायण ही दिखेगा। वास्तव में इस शरीर में सर्वशक्तिमान निवास करता है ; इसमें परमात्मा का वास है। परमात्मा के विषय में भी साफ सुथरी सोच है, दुनिया के सभी धर्मशास्त्रों की, सब सन्तों की, सब महात्माओं की, कि ईश्वर तो है, परमात्मा तो है। सभी लोग परमात्मा के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं। कुछ लोग सोचते हैं कि वैज्ञानिक लोग ईश्वर के अस्तित्व को नहीं मानते हैं। मेरी मान्यता है कि वैज्ञानिक लोग परमात्मा को आम आदमी से बेहतर मानते हैं, अच्छी तरह मानते हैं। उनकी यह मान्यता है कि ईश्वर है, उनके पास एक बेहतरीन आधार है, क्योंकि वो देख रहे हैं इस सृजन को, परन्तु वो प्रभावित नहीं कर पा रहे हैं। लेकिन वे दिल से मानते हैं।



विज्ञान की एक शैली है। विज्ञान की एक भाषा है। वैज्ञानिक वही बात करते हैं, जो सिद्ध कर पाएँ, जो प्रमाणित कर पाएँ। जो सिद्धांत रूप से वो प्रमाणित नहीं कर पाते हैं, वह बातें वो नहीं बोलते हैं। मैं महसूस करता हूँ कि वैज्ञानिकों का पेशा ईमानदारी का है। इसमें तनिक भी बेईमानी की गुंजाइश नहीं है। जब वे इस सृजन को देखते हैं तो वे जान जाते हैं कि, यह पूरा सृजन एक बहुत बड़ी ताकत के हाथ में है।

आप देखें, पृथ्वी तीन खरब 20 अरब मील के लगभग एक वर्ष में अपनी यात्रा तय करती है। यह बहुत लम्बी यात्रा है। तीन खरब 20 अरब मील 365 दिन में, अर्थात्, एक अरब मील प्रतिदिन में यह तय कर रही है। एक अरब मील कोई कम दूरी नहीं है। सूर्य के चारों ओर यह चक्कर लगा रही हैं। 600 मील प्रति सैकेण्ड इसकी रफ्तार है। इसकी गति में थोड़ा-सा परिवर्तन आ जाये, थोड़ी सी गड़बड़ी आ जाए तो धरती के सभी प्राणियों को ऐसा झटका लगेगा कि एक भी शक्ति जिन्दा नहीं रहेगी। सब चीजें यथाक्रम युग्म हैं, यह सब क्या है, सर्वशक्तिमान ने पूरे सृजन में इतने तरीके से डाटा फिट किया हुआ है कि सबको निर्धारण तौर पर चलना होगा। जैसे कम्प्यूटर है। ऐसे-ऐसे कम्प्यूटर हैं जिनमें 50-50 हजार मेमोरीज हैं। आप देखें, रोबोट्स बनाए, ऐसे कम्प्यूटर बनाए, आप आदेश करो वो पालन करेंगे। आप उन्हें कहो ना कमिशनर साहिब को बुला लाओ तो वो आकर यूँ कहेगा - कमिशनर साहब, आपको फलाने ने बुलाया है, चलो। कुछ आप प्रश्न करें तो वो उत्तर देने की क्षमता रखते हैं। यह मानव शरीर एक सुपर कम्प्यूटर है। मानव-तन साधारण नहीं है। सुपर कम्प्यूटर के 50 हजार मेमोरीज हैं। मनुष्य के अन्दर तो खरबों मेमोरीज हैं। इसके अन्दर इतनी ताकत है कि खरबों बातें एक साथ याद कर सकता है।

आपके मस्तिष्क में दो अरब सूक्ष्म कोशिकाएँ हैं। प्रत्येक कोशिका में दो मुख्य बातें याद रखने की ताकत होती है। कुछ ऐसी कोशिकाएँ हैं, जो थोड़ी ही देर में बातों को भूल जाती हैं। जब हम गंभीर होकर कुछ

बातों को अपने दिमाग में रखते हैं, वो पूरी ज़िन्दगी रहती हैं। बड़ा जबर्दस्त सिस्टम है। यह शरीर मामूली नहीं है ; यह सुपर कम्प्यूटराईज़्ड है। जो भी कम्प्यूटर चलता है, कार्य करता है, उसके दो सिद्धांत हैं। एक तो ऊर्जा से चलता है, दूसरा उसकी सेटिंग चाहिए। जितने कम्प्यूटर हैं, इनकी सेटिंग की हुई। प्रकृति की सेटिंग करने वाला सर्वशक्तिमान है। ऊर्जा को स्रोत भी है। मैं एक बात आमतौर पर कहता हूँ कि आप चाहे तो 200 वर्ष भी जी सकते हैं ; आप चाहें तो 500 वर्ष भी जी सकते हैं ; आप चाहें तो एक हजार वर्ष भी जी सकते हैं ; आप चाहें तो दस वर्ष भी जी सकते हैं ; आप चाहें तो अगले पल भी मर सकते हैं। सब आपके हाथ में है।

बन्धुओ, वैज्ञानिक अच्छी तरह देखता है, यह कितनी सुन्दर और सूक्ष्म व्याख्या है। यह किसी एक दिव्य शक्ति द्वारा है। पाश्चात्य विद्वान कह रहे हैं, एक शक्ति है, एक सत्य है, एक प्रेम है, एक बल है, जो संपूर्ण विश्व को चलायमान कर रहा है। वास्तव में है, सच में है एक ताकत। वैज्ञानिक लोग देखते हैं इस सृजन को तो वो समझ जाते हैं कि इसकी व्यवस्था बड़ी ही सुपर कम्प्यूटराईज़्ड है। वो लोग यह जान जाते हैं। सामान्य सी बात है। सब कम्प्यूटरों में डाटाज् फिट हैं, जानकारीयाँ फिट हैं। मानव ने की हैं। प्रकृति भी एक कम्प्यूटर है। इसकी व्यवस्था करने वाला भी एक सर्वशक्तिमान है, जिसने अपनी दिव्यशक्ति से प्रकृति की व्यवस्था की है। मनुष्य अपने शरीर से बेखबर है ; उसे अपने शरीर की जानकारी नहीं है। जैसे हम एक रेडियो खरीदते हैं, एक गाड़ी खरीदते हैं, एक टेपरिकार्डर खरीदते हैं, एक टेलीविज़न खरीदते हैं, हम उन्हें बस ओपरेट करना जानते हैं। एक मैकनिक को पूरे सिस्टम की जानकारी होती है। उसकी जानकारी और हमारी जानकारी में बहुत अन्तर होता है। बस, जीवन का भी यही पहलू है। हम सामान्यजन जीवन का साधारण उपयोग कर रहे हैं। भय, आहार, मैथुन, निद्रा .... हम इन चार को ही जानते हैं। एक तो शरीर और इन्द्रियों से आनन्द लेना मनुष्य जानता है, सोना जानता है, भोजन करने की कला सबको है और शारीरिक भय

सभी में है। आप मत सोचना कि दुनिया में कोई निडर है, जिसने भी शरीर धारण किया है, वह डरता है।

एक बार अध्यात्म की यात्रा हो रही थी। सैकेण्ड्स में अरबों मील जा रहे थे; वो यात्रा ऐसी होती है। इतनी तीव्र गति के हम जा रहे थे ; भय लगा, कहीं दुर्घटना न हो जाए। तब होश दिखाया गया कि भई, तुम्हें इसलिए भय है, क्योंकि तुम शरीर में रह चुके हो। अधिक गति होने से व्यक्ति क्यों डरता है। किसी से हम टकरा जाएँगे, शरीर नष्ट हो जाएगा, इसलिए भय लगता है। एक्सीडेंट नहीं होगा। अगर हम चाहें तो दीवार से भी निकल चलेंगे। कोई सवाल ही नहीं है टकराने का; क्षति की यह कल्पना इसलिए आयी कि हम शरीर में निवास कर चुके हैं। बस, इसका यही कारण है ; पर वहां यह शरीर नहीं है।

साधना में कभी-कभी ऐसे होता है, जब भी कोई एक शक्ति आपको उठाना चाहती है, उस समय यह मन बहुत बड़ी रुकावट देता है। मन की रुकावट प्रत्येक क्षेत्र में, प्रत्येक पहलू में है। आईये हम देखते हैं कि यह क्या है। मन इस आत्मा को ईश्वर तक पहुँचाने में व्यवधान देता है। इसका यही कार्य है। जब भी आप कोई ऐसा कार्य करेंगे, जिसमें आपकी आत्मा का कल्याण हो, तो यह मन रुकावट देता है। ध्यान करेंगे तो वहाँ भी मन की रुकावट आएगी। सुमिरन करेंगे तो वहाँ भी रुकावट आएगी। गुरु की सेवा करेंगे तो वहाँ भी रुकावट आएगी। **“नानक जो गुरु सेवे अपना, हों तिस बलिहारी जाऊँ।”**

जीवन के प्रत्येक पहलू में एक निगेटिव सोच का नाम मन है। मैं बताता हूँ कैसे रुकावट डालता है। जीवन के प्रत्येक पहलू में मन सदा आत्मा को बंधन में डालने का प्रयास करता है, पीछे खींचने की कोशिश करता है। एक निगेटिव सोच का नाम मन है, एक विरोधी ताकत का नाम मन है। इसलिए अपनी वाणी में कह रहे हैं। **“जीव के संग मन काल रहाई, अज्ञानी नर जानत नाहीं। मन ही आहे काल कराला, जीव नचाय करे बेहाला।”** जब आप भजन करेंगे तो उस समय मन

व्यवधान देगा। जब आप ध्यान करेंगे तो वहाँ भी मन आपको रुकावट देगा। जब आप तन, मन, धन तीनों से किसी तरह गुरु की सेवा करेंगे तो भी रुकावट देगा। इसलिए गुरु नानक देव जी कह रहे हैं – “नानक जो गुरु सेवे अपना, हो तिस बलिहारी जाऊँ”।

मैं एक साधना की बात कर रहा हूँ। आप कभी ध्यान देना, पहले इस मन का प्रयास होगा कि आप ध्यान में बैठ ही नहीं पाएँ। मेरे पास शुगर मिल के जनरल मैनेजर श्री दास आए और बोले, महाराज ! गुरु तो मैंने किया हुआ है ; अब मुझे और गुरु नहीं करना है ; मैं गुरु कर चुका हूँ। आप कृपा करके मुझे ऐसा तरीका बता दो, जिससे यह मन रुक जाए। इतना बड़े अधिकारी की यह बात सुनकर मुझे हँसी आयी और मुझसे रहा भी नहीं गया ; मैं बोला – जी. एम. साहब, एक बात बताओ, व्यक्ति गुरु किसलिए करता है, इसी मन को नियंत्रित करने के लिए, अंदर की दुनिया में जाने के लिए। अब आप बात गुरुजी की मानोगे और मन को नियंत्रित करने का फार्मूला लोगे। गुरु और क्या बताता है! मन को नियंत्रित करने का और ईश्वर में जाने का रास्ता ही तो बताता है। खैर, मैंने उनका दिल नहीं तोड़ा। मन पर नियंत्रित ही मुख्य बात है।

बंधुओं, आप जब साधना में जायेंगे तो पहिले चंद एक रुकावटें आपके सामने आएँगी। इसे आप समझ लें कि मन, है कौन ? इसे भी समझ लें कि मन, हैं क्या चीज़ ? वास्तव में, मनुष्य अपने व्यक्तित्व से, स्वयं से परिचित नहीं है। वर्तमान में जो आप महसूस कर रहे हैं कि मैं मधु हूँ या मैं बलवन्त सिंह हूँ; यही मन है। आपको जो बातें याद हैं, यहाँ मेरा घर है, यह मेरा मित्र है, यह मेरा परिवार है, यह मेरा रिश्तेदार है, मैं यह कार्य करता हूँ, यही मन है। मन बहुत विशाल चीज़ है। जो वर्तमान के स्वयं को आप अनुभव कर रहे हैं, मैं हूँ ; यही मन है। इसमें जो एक ऊर्जा और चेतना है, वही आत्मा है, जो इन सब बातों से परे है। इसी मन से चेतना को बाहर निकालना ही परम-पुरुष की प्राप्ति है या

आत्म-कल्याण है या महानिर्वाण है।

इसका सीधा यह मतलब हुआ कि आप चाहें भी तो याद नहीं आएगा, मैं ओम कुमार हूँ, ठीक है। यदि आपको याद आ रहा है कि मैं ओम कुमार हूँ तो यह चित्त है। यह मन का एक रूप है। जो महापुरुषों ने कहा - **आपा छोड़ कर प्रभु को प्राप्त करना। वो आपा छोड़ने का मतलब है कि हम आत्मभिमान का ध्यान न रखें।** हम स्वयं को नहीं जानते, पर आप चिन्ता न करें, मैं तरीका बताऊँगा। जब आप साधना काल में बैठते हैं, सबसे पहले यह मन आपको ध्यान में नहीं बैठने देता। मन एक बहुत बड़ी रुकावट है। आपको ईश्वर तक जाने में सबसे बड़ी रुकावट इस मन की है। इसमें शक्तियाँ भी बड़ी हैं। **मन के अष्ट सिद्धियाँ हैं। फूल से आप प्रेम कर रहे हैं ; आपको निश्चित लगेगा कि यह बड़ा आकर्षक है। इसका आकर्षण आत्मा को नहीं हुआ ; यह मन की कला है। मन बहुत महान् कलाकार है। मैं मन का ही विशेषज्ञ हूँ। इसलिए मेरे पास दुनिया का कोई शौक नहीं है।**

एक दिन मेरे भाई ने कहा, मैं आपको परमात्मा मानता हूँ, मनुष्य नहीं और इसमें मुझे रत्ती भर भी संशय नहीं है। मैंने कहा - तुम्हारा यह मानने का आधार क्या है ? वह बोला - आपकी आध्यात्मिक शक्ति तो मैं नहीं जान पाया हूँ ; आपकी आध्यात्मिक गहराई को भी नहीं नाप पाया हूँ और न ही अनुभव कर पाया हूँ। पर कुछ बातें मैंने आपमें देखी हैं। प्रथम तो आपमें दुनिया का कोई शौक और तरंग नहीं है। आपके पास मन नाम की कोई चीज़ नहीं है। आपकी दिनचर्या मैं देख रहा हूँ। ऐसा कोई और व्यक्ति एक माह तक करे तो ऊब जाएगा। आपको मैंने कभी ऊबते नहीं देखा। आप एक ही लय में लीन रहते हैं। कभी आपने नहीं कहा कि मुझे घूमने जाना है, कभी आपने नहीं कहा कि मुझे यह खिलाओ। एक ही धुन मैं आपमें पढ़ रहा हूँ, सिर्फ एक ही धुन, मनुष्यों को चेतन करके ईश्वर की ओर ले जाना है। यह धुन मनुष्य में नहीं होती है, इस धुन के लिए आप विश्राम भी नहीं करते हैं। आपके कुल शारीरिक कार्यों को देखकर मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि आप एक साधारण व्यक्ति नहीं है।

सही बात है। मैं कभी आपको थका नहीं मिलूँगा। गिरने दो ना मेरा शरीर लड़खड़ा कर ; तब भी मैं बिल्कुल समर्पित मिलूँगा, पवित्र कार्यों के लिए। करने दो ना चौबीस घंटे मुझे कार्य, क्योंकि मैं मन के कहने पर नहीं चलता हूँ। जब आपका मन कहा है, प्रसन्न हो जाओ तो आप प्रसन्न हो जाते हैं। चाबी घुमाता है, खुशी की तो खुश हो जाते हो, चाबी घुमाता है, दुख की तो दुखी हो जाते हो। चाबी घुमाता है, मुँह फुलाने की तो आप मुँह फुला लेते हो। चाबी घुमाता है, क्रोध करने को तो आप क्रोध करने लगते हो। जैसा वह आपको संचालित कर रहा है, आप होते जा रहे हो।

**“एक रंग में जो रहे ऐसा बिरला कोय, कबीरा, ऐसा बिरला कोय।”**

मैं इस मन की कोई बात नहीं मानता हूँ। सच यह है – **“कहत कबीर सुनो भई साधो जगत बना है मन से”**। भाई, माता, पिता, घरद्वार, मित्र, शत्रु, हितैषी इत्यादि जो कुछ भी है, यह पूर्णरूपेण मन द्वारा ही निर्मित है। इसलिए, साहिब कह रहे हैं –

**जीव के संग मन काल रहाई, अज्ञानी नर जानत नाहीं।**

**मन ही आये काल कराला, जीव नचाए करे बेहाला ॥**

**बाजीगर का बाँदरा, ऐसा ये मन साथ।**

**नाना नाच नचाई के राखे अपने हाथ ॥**

सच यह है, परमात्मा एक कोशिश में है, प्रभु एक कोशिश में है। आपको माया और मन से बचाने के लिए, आपको यहाँ से छुड़ाने के लिए कोशिश में है। आप एक मानवीय आधार से सोचें। आपके बच्चों को परेशानी हो तो आप परेशान हो जाते हैं। चाहे आपका बच्चा गलती करके, जुर्म करके जेल जाए, तो भी आप उसे छुड़ाना चाहते हैं। वही बात तो हमारे लिए भी लागू होती है जो आपके लिए हैं।



# उचित-अनुचित

1. नींद को सो-सोकर जीतने की कोशिश न करो; स्त्री को काम-वासना से जीतने की कोशिश मत करो; आग को लकड़ी डाल जीतने का प्रयास न करो और नशे की आदत को शराब पी-पीकर जीतने का प्रयत्न न करो।
- ◆ न स्वप्नेन जयेन्निद्रां न कोमेन जयेत् स्त्रियः। नन्धनेन जयेदग्निं न पानेन सुरां जयेत् ॥ ( महाभारत – उद्योग 39/81 )
2. बिल्ली, मुर्गा, बकरा, कुत्ता, सुअर और पक्षियों को पालनेवाला नरक में जाता है।
- ◆ माजरिकुकुटच्छाग श्वराहविहंगमान्। पोषयन्नरकं याति तमेव द्विजसत्तम ॥ ( विष्णुपुराण – 2-6-21 )
3. सोय हुए मनुष्य को मत जगाओ।
- ◆ सुप्तं न प्रबोधयेत्। ( विष्णुस्मृति – 71 )
4. जल में मल-मूत्र, मैथुन करना उचित नहीं है।
- ◆ नाप्सु मूत्रं पुरीषं वा मैथुनं वा समाचरेत् ( ब्रह्मपुराण – 221-24 )
5. गर्भपात ब्रह्महत्या से दुगुना पाप-कर्म है। इसका तो प्रयश्चित भी नहीं है। अतः ऐसा महापाप करने वाली स्त्री का तो त्याग ही कर देना चाहिए।
- ◆ गर्भत्यागो भर्तृनिन्दा स्त्रीणां पतनकारणम्। एष ग्रहान्तिके दोषः तस्मात्तां दूरतस्त्यजेत् ॥ ( गुरङ्गपुराण – आचार. 105-47 )
6. पाँच अंगों ( दो हाथ, दो पैर और मुख ) को धोकर भोजन करें। ऐसा करनेवाला सौ वर्षों तक जीवित रहता है।
- ◆ हस्तेपादे मुखे चैव पंचार्द्रां भोजनं चरेत्। पंचार्द्रकस्तु भुञ्जानः शतं

वर्षाणि जीवति ॥ ( पद्मपुरा - सृष्टि. 51-88 )

7. दिन में सोना उचित नहीं है ।  
 ◆ न दिवा प्रस्वेपेज्जातु न पूर्वापररात्रिषु । ( महाभारत - अनु. 243-6 )
8. दिवास्वापं च वर्जयेत् । ( नारदपुराण - पू. 26-27 )  
 ◆ गाय की पीठ पर सवारी करना बहुत ही अनुचित एवं निन्दनीय कार्य है ।
9. गवां च यानं पृष्ठेन सर्वथैव विगर्हितम् । ( मनुस्मृति 4-72 )  
 ◆ गुरुजनों को 'तू' कहकर बुलाना बहुत ही अनुचित बात है । ऐसा कहना तो उन्हें बिना मारे ही मार डालने के समान है ।  
 ◆ त्वंकारो वा वधो वापि गुरुणामुभयं समम् । ( स्कन्दपुराण - मा. कौ. 41-165 )  
 ◆ त्वमित्युक्तो हि निहतो गुरुर्भवति भारत । ( महाभारत - कर्ण. 69-83 )
10. दाँतों को परस्पर रगड़ना ठीक नहीं होता ।  
 ◆ न दन्तान् विघट्टयेत् । ( चरकसंहिता - सूत्र. 8-11 )
11. छिपकर दूसरों की बातें सुनना सर्वथा अनुचित काम है ।  
 ◆ सँल्लापं नैव शृणुयाद् गुप्तः कस्यापि सर्वदा । ( शुक्रनीति - 3-144 )
12. पुत्र के जीवित होने पर स्त्री पति रहित होने पर भी विधवा नहीं कहलाती । विधवा वो है, जिसका न पति हो, न पुत्र ।  
 ◆ जीवपुत्रा तु या नारी विधवेति न चोच्यते । पतिपुत्रविहीना या विधवेत्युच्चये बुधैः । ( कपिलस्मृति 593 )
13. यदि कोई गुस्से में आकर गाली दे तो बदले में तुम भी गाली मत दो । गाली देनेवाला सहनशील के रोके हुए क्रोध से जल जाता है और अपने पुण्य भी खो देता है ।  
 ◆ आक्रुश्यमानो नाक्रोशेन्मन्युरेव तितिक्षतः । आक्रोष्टारं निर्दहति



सुकृतं चास्य विन्दति ॥ ( महाभारत - उद्योग 36-5 )

14. नमक को हाथ में रखकर चाटना ठीक नहीं होता।

◆ नोत्संगे भक्षयेद्भक्ष्यान्न पाणौ लवणं । ( विष्णुधर्मोत्तर. - 2-93-12 )

15. दीन, अन्धे पंगु और बहरे मनुष्यों का कभी उपहास मत करो।

◆ दीनान्धपंगुबधिरा नोपाहास्याः कदाचन । ( शुक्रनीति 3-115 )

16. जब आप मल-मूत्र का त्याग कर रहे हों तो प्रयास करें कि उस समय न तो अपने मल की ओर ध्यान दें और न ही दिशाओं, ग्रहों, नक्षत्रों, सूर्य, चाँद आदि की ओर ही देखें।

◆ वारवग्नी विप्रमादित्यमापः पश्यंस्तथैव गाः । न कदाचन कुर्वीत विष्णूमूत्रस्य विसर्जनम् ॥ ( देवीभागवत - 11-2-15 )

17. अपनी शक्ति को देखो और तब ही किसी कार्य का आरम्भ करो।

◆ स्वशक्तिं ज्ञात्वा कार्यमारभेत ।

18. अपनी स्त्री की रक्षा करनी चाहिए। ऐसे में धर्म, कुल, संतान, आत्मा, चरित्र - सबकी रक्षा हो जाती है।

◆ स्वां प्रसूतिं चरित्रं च कुलमात्मानमंव च । स्वं च धर्मं प्रयत्नेन जायां रक्षन्हि रक्षति ॥ ( मनुस्मृति - 9-7 )

19. उत्तर-पश्चिम की ओर सिर करके मत सोएं, क्योंकि ऐसे में रोग की प्राप्ति होती है और आयु भी कम होती है, अतः हमेशा पूर्व या दक्षिण की ओर ही मुँह करके सोना चाहिए।

◆ उत्तरे पश्चिमे चैव न स्वपेद्धि कदाचन । स्वप्नादायुः क्षयं याति ब्रह्महा पुरुषो भवेत् । न कुर्वीत ततः स्वप्नं शस्तं च पूर्वदक्षिणम् ॥ ( पद्यपुराण - सृष्टि . 51-125-126 )

◆ प्राच्यां दिशि शिरश्शस्तं याम्यायामथ वा नृप । सदैव स्वपतः पुंसो विपरीतं तु रोगदम् ॥ ( विष्णुपुराण - 3-11-113 )

20. अपनी चरित्रवान, सुशीला स्त्री को युवा अवस्था में छोड़ देने

वाला सात जन्मों तक स्त्री होता है और बार-2 विधुर होता है।

◆ अदुष्टां विनतां भार्या यौवने यः परित्यजे। सप्तजन्म भवंत् स्त्रीत्वं वैधव्यं च पुनः पुनः॥ ( वसिष्ठस्मृति - 5-30 )

21. धर्म का सार सुनकर उसे हृदय में धारण कर लो। जैसा व्यवहार आप दूसरों द्वारा अपने लिए नहीं चाहते हैं, वैसा व्यवहार खुद भी दूसरों के साथ मत करो।

◆ श्रृयतां धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा चैतप्रधार्यताम्। आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्॥ ( पद्मपुराण - सृष्टि. 19-355 )

22. चलते हुए भोजन मत करो; कभी मत।

◆ निषण्णश्चापि खादेत न तु गच्छन् कदाचन। ( महाभारत - अनु. 104-60 )

23. जो जिसका अन्न खाता है, वह मानो उसका पाप भोजन करता है अर्थात् यदि वो अन्न पाप की कमाई का हो तो खाने वाला भी उसका भागीदार बनता है।

◆ दृष्टकृतं हि मनुष्याणामन्नमाश्रित्य तिष्ठति। यस्यान्नं समश्नाति स तस्याश्नाति किल्बिषम्॥ ( आंगिरसस्मृति 58 )

24. पाप करने के बाद यदि कोई मनुष्य पश्चाताप कर लेता है तो वह उस पाप से छूट जाता है और यदि वह निश्चय कर ले कि आगे से यह पाप नहीं करेगा तो वह पवित्र भी हो जाता है।

◆ कृत्वा पापं हि सन्तप्य तस्मात्पापात्प्रमुच्यते। नैवं कुर्या पुनरिति निवृत्त्या पूयते तु सः॥ ( मनुस्मृति 11-230 )

25. यदि दो व्यक्ति बातचीत कर रहे हों या दो पूज्य व्यक्ति खड़े हों तो हमें उनके बीच से होकर निकलना नहीं चाहिए।

◆ न मध्ये पूज्ययोर्यायात्। ( अग्निपुराण 155-21 )

◆ न मध्याद् गमनं भाषाशालिनोः स्थितियोरपि। ( शुक्रनीति 3-103 )

26. बुद्धिमान मनुष्य कभी गहनों और कपड़ों के स्थान में उलट-फेर

नहीं करते यानि ऊपर पहनने वाले वस्त्रों को नीचे नहीं पहनते और नीचे पहननेवाले कपड़ों को ऊपर नहीं पहनते।

◆ विपर्ययं न कुर्वीत वाससो बुद्धिमान् नरः। ( महाभारत - अनु. 104-85 )

27. सवारी पर बैठे हों या अपने आसन पर बैठे हों, उतरकर, खड़े होकर गुरुजनों को प्रणाम करना चाहिए।

◆ यानासनस्थश्चैवैनमवरुह्याभिवादयेत्। ( मनुस्मृति 2-202 )

28. खड़े होकर जल मत पिँ।

न जलं चोत्थितः पिवेत्। ( स्कन्दपुराण - ब्रह्म. धर्म. 6-74 )

29. रात को तथा सन्ध्या समय में स्नान नहीं करना चाहिए।

◆ स्नायीत न तथा निशि। ( मार्कण्डेपुराण 34-51 )

30. दूसरे की कोई भी वस्तु, चाहे वह बहुत छोटी-सी क्यों न हो, अपहरण करने वाला नरक का पात्र होता है।

◆ यद्वा तद्वा परद्रव्यमपि सर्षपमात्रकम्। अपहत्य नरः पापो नारकी नात्र संशयः॥ ( स्कन्दपुराण - मा. कु. 41-76 )

31. देह से बुद्धि, श्री, लज्जा, शांति और कीर्ति - ये पाँचों देवता उस समय निकल जाते हैं। जब इसांन किसी से कुछ माँगता है।

◆ देहीति वचनद्वारा देहस्थाः पंच देवतः। सद्यो निर्गत्य गच्छान्ति धी श्रीहीशान्तिकीर्तयः॥ ( ब्रह्मपुराण - 137-10 )

32. चलते हुए या खड़े होकर मल-मूत्र का त्याग उचित नहीं है।  
न गच्छन्न च तिष्ठन् वै विष्णुमूत्रोत्सर्गमात्मावान्। ( ब्रह्मपुराण 221-29 )

33. केश, नाखुन व रोम दाँतों से चबाने नहीं चाहिए।

न दन्तैर्नखरोमाणि छिन्द्यात्। ( कूर्मपुराण - उ 16-66 )

◆ न छिन्द्यान्नखलोमानि दन्तैर्नोत्पाटयेन्नखान्। ( मनुस्मृति 4-69 )

34. गुरु के आगे पाँव पसारकर कभी मत बैठो और न ही किसी

चीज़ का सहारा लेकर ही बैठो।

- ◆ न पर्यागिकावष्टम्भपादप्रसारणानि गुरुसन्निधौ कुर्यात् ।  
( सुश्रुतसंहिता - चिकित्सा. 24-94 )

35. कुत्तों का मैथुन, उधार, गर्भधारण, स्वामीपन, दुष्ट-मित्रता, कुपथ्य-सेवन आदि शुरु-2 में सुखदायी लगते हैं। पर अंत में दुखदायी सिद्ध होते हैं।

- ◆ श्वमैथुननमृणं गर्भाधानं सावामित्वमेव च । खलसख्यमपथ्यं तु प्राक्सुखं दुःखनिर्गमम् । ( शुक्रनीति - 3-289-290 )

36. दिन में और सूर्योदय के बाद सोना आयु का नाशक है।

- ◆ अनायुष्यं दिवा स्वप्नं तथाभ्युदितशायिता । प्रगे निशामाशु तथा नैवोच्छिष्टाः स्वपन्ति वै । ( महाभारत - अनु. 104-138 )

37. भोजन करते समय मौन रहें।

- ◆ ततो मौनेन भुंजीत । ( स्कन्दपुराण - ब्रह्म. धर्मा. 5-140 )

38. सन्ध्याकाल में चार कर्म वर्जित हैं - भोजन, स्त्रीसंग, निद्रा और स्वाध्याय। ऐसे समय का भोजन व्याधि का कारण बनता है, स्त्रीसंग क्रूर संतान को उत्पन्न करता है, निद्रा लक्ष्मी का नाश करता है और स्वाध्याय आयु का नाश करता है।

- ◆ चत्वारि खलु कर्माणि सन्ध्याकाले विवर्जयेत् । आहारं निद्रां स्वाध्यायं च चतुर्थकम् ॥ आहारज्जायते व्याधिः क्रूरगर्भश्च मैथुने । निद्रा श्रियो निवर्तन्ते स्वाध्याये मरणं ध्रुवम् ॥ ( यमस्मृति - 76-77 )

39. सिर को दोनों हाथों से खुजलाना उचित नहीं है।

- ◆ न संहताभ्यां हस्ताभ्यां कण्डूयेदात्मनः शिरः । ( नारदपुराण - पूर्व, 26-23 )

- ◆ न संहताभ्यां पाणिभ्यां कण्डूयेदात्मनः शिरः । ( कूर्मपुराण - उ. 16-64 )

40. जिस दिन उपवास रखा हो, उस दिन शरीर में तेल लगाकर मत

नहाएँ। यह सौंदर्य-नाशक है।

- ◆ उपोषितैर्नरैस्तस्मात् स्नानमथ्यंगपूर्वकम्। वर्जनीयं प्रयत्नेन रूपहनं तत्परं नृप ॥ ( मत्स्यपुराण - 115-14 )

41. गोद में रखकर भोजन नहीं खाना चाहिए।

- ◆ नोत्संगे भक्षयेत्। ( वसिष्ठस्मृति - 12-33 )

- ◆ नोत्संगे भक्षयेद् भक्ष्यम्। ( कूर्मपुराण - उ. 16-63 )

42. दूसरों के घर का अन्न दो कारणों से खाना चाहिए - या तो प्रेमवश या अत्यन्त भूखवश।

- ◆ सम्प्रीतिभोज्यान्तन्नानि आपद्भोज्यानि वा पुनः। ( महाभारत - उद्योग. 91-25 )

43. जिस अन्न को खाकर छोड़ दिया गया हो, उसे फिर मत खाएँ।

- ◆ यस्तवन्नमन्तरा कृत्वा लोभादत्ति नृपोत्तम। विनाशं याति स नर इहलोके परत्र च ॥ ( भविष्यपुराण - ब्रह्म. 3-40 )

44. शिखा खोलकर रास्ते में चलना उचित नहीं है।

- ◆ विसृजेन्न शिखां पथि। ( स्कन्दपुराण - ब्राह्म. धर्मा. 6-67 )

45. अकारण थूकना अच्छा नहीं होता।

- ◆ नाकारणाद् वा निष्ठीवेत्। ( कूर्मपुराण - उ. 16-68 )

46. खड़ाऊँ पहनकर, छाता लेकर और अंतरिक्ष में मल-मूत्र का त्याग करना उचित नहीं है।

- ◆ न सोपानत्पादो वा छत्री वा नान्तरिक्षके ॥ ( कूर्मपुराण - उ. 13-40 )

47. आसन को पैर से खींचकर उसपर नहीं बैठना चाहिए।

- ◆ वर्जयेदासनं चैव पदा नाकर्षयेद्बुधः। ( स्कन्दपुराण - मा. कौ. 41-125 )

- ◆ न पदासनमाकर्षेत्। ( गोतमस्मृति - 9 )

48. दिन में स्त्री-सम्भोग मत करें। यह आयु का नाशक है।

◆ दिवाभिगमनं पुंसामनायुष्यं परं मतम्। ( स्कन्दपुराण - ब्रह्म. धर्मा 6-35 )

49. नग्न होकर स्नान करना उचित नहीं है।

◆ न नग्नः स्नायात्। ( बौधायनस्मृति 2-3-51 )

50. बेकार की, छोटी-छोटी बातों के लिए शपथ मत लो। यह इहलोक और परलोक दोनों का विनाश करने वाला है।

◆ न वृथा शपथं कुर्यात् स्वल्पेप्यर्थे नरोत्तमः। वृथा हि शपथं कुर्वन्प्रेत्य चेह विनश्यति ॥ ( स्कन्दपुराण - काशी. पू. 40-153 )

51. भूमि को नाखुन से मत कुरेदो।

◆ न नखैर्विलिखेद् भूमिम्। ( कूर्मपुराण - उ. 16-56 )

◆ न नखेन लिखेद् भूमिम्। ( पद्मपुराण - स्वर्ग. 55 )

52. थोड़ा भोजन करने से छः गुण आ जाते हैं - आरोग्य, आयु, बल और सुख के साथ-2 सुन्दर संतान भी मिलती है और 'बहुत खानेवाला' कहकर कोई उसे ताना भी नहीं मारता है।

◆ गुणाश्च षण्मिमतभुक्तं भजन्ते आरोग्यमायुश्च बलं सुखं च। अनाविलं चास्य भवत्यपत्यं न चैनमाद्यून इति क्षिपन्ति ॥ ( महाभारत - उद्योग. 37-34 )

53. हो सके तो अतिथि को निराश मत करो। यदि वो निराश लौट जाए तो अपने पाप छोड़कर और पुण्य लेकर ही जाता है।

◆ तिथिर्यस्य भग्नाशो गृहात् प्रतिनिवर्तते। तस्मात् सुकृतमादाय दुष्कृतं तु प्रयच्छति ॥ ( विष्णु स्मृति 67 )

54. मुँह से फूंक मारकर अग्नि को मत बुझाओ।

◆ मुखेन न धमेद् बुदः। ( कूर्मपुराण - उ. 16-77 )

◆ नाग्निं मुखेनोपधमेत्। ( वसिष्ठस्मृति 12-27 )

55. सन्यासी को आठ ग्रास भोजन ही लेना चाहिए। इसी तरह

वानप्रस्थी को सोलह ग्रास और गृहस्थी को बत्तीस ग्रास। ब्रह्मचारी के लिए इसकी संख्या नियत नहीं है।

◆ अष्टो ग्रास मुनेर्भुक्तं वानप्रस्थस्य षोडशः। द्वात्रिंशन्तु गृहस्थस्य अमितं ब्रह्मचारिणः॥ ( वसिष्ठस्मृति 6-18 )

56. गुरु वचनों को तथा श्रेष्ठ-पुरुषों के वचनों का अपने वचन से खण्डन मत करो।

◆ वाक्येन वाक्यस्य प्रतिघातमाचार्यस्य वर्जयेच्छ्रेयसां च। ( आपस्तम्बधर्मसूत्र 2-5-11 )

57. जलाशयों से सोलह हाथ की दूरी पर मूत्र-त्याग और चौसठ हाथ की दूरी पर मल-त्याग करना चाहिए।

◆ हस्तान्द्वादश संत्यज्य मूत्रं कुर्याज्जलाशयात्। अवकाशे षोडश व पुरीषे तु चतुर्गुणम्। ( धर्मसिंधु 3 आह्निक. )

58. यदि मित्र बैरी हो जाए तो भी उसके दोषों एवं गुप्त बातों को प्रकट मत करो।

◆ वैरीभूतोपि पश्चात् प्राक्कथितं वापि सर्वदा। विज्ञातमति यद्दौष्ट्यं दर्शयेन्न कर्हिचित्॥ ( शुक्रनीति 3-314 )

59. जब मल-मूत्र का वेग हो तो उस समय भोजन न करें।

◆ न मूत्रच्चरपीडितः। ( सुश्रुतसंहिता - चिकित्सा. 24-98 )

60. शिष्य को गुरु के आसन पर नहीं बैठना चाहिए।

◆ गुरोरेकासनादनम्। ( पद्यपुराण - सृष्टि. 51-98 )

61. स्नान करते समय पहले सिर पर पानी डालना चाहिए।

◆ स्नायाच्छिरः स्नानतया च नित्यम्। ( वामनपुराण 14-53 )

62. नग्न होकर मत सोएँ।

◆ नग्नशयनं सर्वदा परिवर्जयेत्। ( नारदपुराण - पू. 26-34 )

◆ स्पप्तव्यं नैव नग्नेन। ( महाभारत - अनु. 104-67 )



# साहिब शब्दावली

---

## नाम मग्न होय सो पावै

कोई नाम रसिक रस पीयहुगे, पीयहुगे जुग जीयहुगे ॥  
फल लंकृत बीज नहिं बकला, शुक पंछी तहाँ रस खाई ॥  
चुवै न बूंद अंग नहिं भीजै, दास भँवर सब संग लाई ॥  
निगम रसाल चारि फल लागे, तामें तीनि समाई ॥  
एक दूरि चाहें सब कोई, यत्न यत्न काहु बिरले पाई ॥  
गये बसंत ग्रीष्म ऋतु आई, बहुरि न तरिवर तर आवै ॥  
कहैं कबीर स्वामी सुखसागर, नाम मग्न होय सो पावै ॥

साहिब कह रहे हैं कि कोई बिरला ही नाम रूपी रस को पीकर अमरत्व को प्राप्त करता है। इस नाम रूपी फल में जन्म मरण का बीज नहीं है और माया का आवरण भी इसपर नहीं लगता। इसके रस का आस्वादन कोई बिरले सद्गुरु के प्रेमी ही कर पाते हैं। वेद रूपी आम के पेड़ पर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूपी चार फल लगे हुए हैं। तीन तो सबको मिल जाते हैं, पर चौथा अत्यंत दूर है, जिसको कोई बिरला ही पाता है। जवानी रूपी बसंत के चले जाने पर बुढ़ापा रूपी ग्रीष्म ऋतु आ जाएगी तो बात नहीं बनेगी। पता नहीं फिर यह मानव तन मिले न मिले, इसलिए अमर सुख को देने वाले नाम को पाकर उसी में मग्न हो जाओ।

## ऐसे राम कहे का होई

ऐसे राम कहे का होई, जो मन की दुबिधा नहिं खोई ॥  
राम कहि कहि नरक परत है, पढ़ पढ़ वेद पुराना ॥



राम कहि कहि सबे गये हैं, मिटे न आवा जाना॥  
 राम कहि कहि सती जरत है, साधन में न समाई।  
 डाक परी लिये हाथ सिंधोरा, मिरतक से लौ लाई॥  
 तन मन से जो सुमिरन करि हैं, तिन सो राम उधारा।  
 भक्ति भाव का भेद न जाने, ते डूबे भव धारा॥  
 वेद पढ़े पर भेद न जाने, पढ़ पढ़ लोक रिझावै।  
 काल पुरुष का मर्म न जाने, घर जरे घूर बुझावै॥  
 राम लोग के हँसी खिलौना, सबके प्राण अधारा।  
 कहैं कबीर सुनो भाई साधो, काहु न कीन विचारा॥

साहिब कह रहे हैं कि केवल ऐसे राम राम कहने से कुछ नहीं होता है, आवागमन समाप्त नहीं होता। राम राम कहते हुए सति अपने मृतक पति के साथ जल जाती है, पर साधना में नहीं लगती। जो नाम के सुमिरन में मन को लगाता है, वही पार हो सकता है। दुनिया भक्ति भाव नहीं जानती है। लोग कथाएँ पढ़-पढ़कर दूसरों को सुनाते हैं और उन्हें खुश करने की कोशिश करते हैं। वो काल पुरुष का भेद नहीं जानते हैं। खुद तो काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की आग में जलते हैं और दूसरों को इनसे बचने का उपदेश देकर उनकी इस आग को बुझाने का प्रयास करते हैं। लोगों ने राम को खिलौना समझ रखा है, पर वो उस राम को नहीं जानते हैं, जो सबके प्राणों में रम रहा है। कोई भी उस राम पर विचार नहीं करता है।

## दया बिनु जोग औ जग्य जप तप करे

दया बिनु जोग औ जग्य जप तप करे,  
 दया बिनु पंडित पुस्तक पढ़ावे।  
 दया बिनु धर्म व्यापार कासो लहे, दया बिनु नाम हृदये न आवे॥  
 दया बिनु व्रत एकादसी निर्जला, दया बिनु तीर्थ सब भर्म आवे॥  
 दया बिनु वेद मुख अग्र चारो पढ़े, दया बिनु तीर्थ सुरत श्रोता न पावे।

कहैं कबीर चल दया के महल में, जहाँ के गये फिर नाहि आवे॥

साहिब कह रहे हैं कि दया के बिना योग, जप, तप, भक्ति सब बेकार है।

## माया मोहिनी मन हरन

माया                      मोहिनी                      मन                      हरन।  
 भोगियन सब पीस डारे, जोगिया बस करन॥  
 चंचल चपल विलास लोचन, सबल सायक धरन।  
 काम बान उर तान मारे, तासु कोई न डरन॥  
 नैन खंजन सबल भंजन, जोति जगमग करन।  
 सार सब्द विचारि देखो, मेटु आवा मरन॥  
 सिद्ध सुरपति इंद्र जेते, सोक सागर भरन।  
 माँझ धार झकझोर बोरे, देत काहु न तरन॥  
 सुर असुर नर नाग किन्नर, त्रसित लागे डरन।  
 काल जाल बिकाल में, सब जीव लागे जरन॥  
 कहैं कबीर कोई भागि बाँचे, अभय सतगुरु सरन।  
 जिते आये तिते लूटे, छूटे कोई गुरु चरन॥

साहिब कह रहे हैं कि यह माया मन को मोहित करने वाली है। भोगियों को तो यह अपने जाल में फँसाकर पीस ही डालती है, योगियों को भी अपने वश में ही रखती है। यह अपने चंचल, विशाल नेत्रों के बाण से सबको घायल कर देती है। हे मनुष्य! यदि इससे बचकर जन्म मरण से छूटना चाहते हो तो सार शब्द का विचार करो। यह बड़े-बड़े सिद्ध, साधक, इंद्र आदि सबको संसार-सागर में डुबो देती है और किसी को तरने नहीं देती है। सुर, नर, मुनि आदि सब इससे भयभीत हैं। काल के विकराल जाल में फँसकर सब जीव मोह-माया की आग में जल रहे हैं। साहिब कह रहे हैं कि जो भी यहाँ आता है, माया उसे लूट लेती है। कोई विरला जीव ही सद्गुरु की शरण में पहुँचकर इससे बच सकता है।

## ऐसे हरि नहिं पाइये

ऐसे हरि नहिं पाइये, मन चंचल भाई॥  
 सुगा पढ़ायो रैन दिन, बोलै टकसारा॥  
 गुरु के शब्द चीन्है नहीं, धरि खात बिलाई॥  
 देखन के बक ऊजला, मन मैला भाई।  
 आँख मूँदि मौनी भया, मनसा धरि खाई॥  
 मूड़ मुड़ाये बेष धरि, नाचे अरु गावै।  
 आप तो समुझो नहीं, औरहि समुझावै॥  
 आस करै वैकुण्ठ की, करनी के काँचे।  
 कहैं कबीर हरि तब मिले, हिरदय होय साँचे॥

साहिब कह रहे हैं कि लोग बाहरी वेष बनाकर, बाहरी क्रियाओं से प्रभु को पाने की कोशिश करते हैं, पर वो तो तब मिलता है, जब हृदय में सच्चाई हो।

## अवधू अमल करै सो पावै

अवधू अमल करै सो पावै।  
 जौ लग अमल असर ना होवै, तौ लग प्रेम ना आवै॥  
 बिनु खाये फल स्वाद बखानै, कहत न शोभा पावै।  
 बिनु गुरु ज्ञान गाँठ के हीना, निज की वस्तु भुलावै॥  
 आँधर हाथ लिये वर दीपक, कर परकास दिखावै।  
 औरन आगे करे चांदनी, आप अँधेरे धावै॥  
 आँधर आप आँधर दस गोहने, जप में गुरु कहावै।  
 मूल महल की खबर न जानै, औरन को भरमावै॥  
 लै अमृत मूरख रेंड सीचै, कल्पवृक्ष बिसरावै।  
 ले ले बीज ऊषर में बोवै, पाहन पानी नावै॥  
 लागी आग जरे घर आपन, मूरख घूर बुझावै।  
 पढ़ा गुणा जो पंडित भूला, वाको को समझावै॥

कहैं कबीर सुनो हो गोरख, यह संतन नहिं भावै ।  
है कोई सूर पूर जग माही, जो यह पद अर्थावै ॥

साहिब कह रहे हैं कि जो गुरु के शब्द पर चलता है, वही उस परम तत्व को पाता है। जब तक गुरु शब्द में रम नहीं जाता तब तक उस परमात्मा के प्रति प्रेम उत्पन्न नहीं हो सकता है। बिना फल को खाए लोग उसके स्वाद का बखान करते हैं, पर ऐसे में तो कोई शोभा नहीं पाता है। बिना गुरु के ज्ञान के वो आत्मधन को भूले हुए हैं। उसकी दशा तो अँधे का दूसरों को दीपक का प्रकाश करने जैसी है। स्वयं तो सच्चे घर का पता नहीं है और दूसरों को भ्रमित ही करते हैं। आंगन में लगे कल्पवृक्ष को छोड़कर बाहर लगे एरेंड के पेड़ को सींचने जाते हैं। साहिब कह रहे हैं कि ये अन्यान्य बाहरी चीजें संतों को अच्छी नहीं लगती हैं।

### चाम को महल में भूल मत बांवर

चाम को महल में भूल मत बांवर, स्वप्न का संग है बूझि रहना ।  
साँच को प्रीतिकर स्वप्न धोखा तजो, चाम अरु राम को चीन्ह गहना ॥  
जासु का खोज सब रोज तुम करत हो, मुकुर की छाह में नाहिं लेना ।  
देख ले आपना आपको आपही, कहैं कबीर यों सत्य कहना ॥

साहिब कह रहे हैं कि चमड़े के महल में तू भ्रमित मत हो। यह तो सपने का साथ है, इसलिए इसमें समझबूझ कर ही रहना। इस चमड़े रूपी शरीर के धोखे को छोड़कर आत्मराम को जानना। तुम जिसकी खोज में हर रोज बाहर भटक रहे हो, वो तो तुम्हारे अपने अन्दर ही है। बस, तुम अपने आप को देख लो।

### जो तू भक्ति करन को चाहत हो

जो तू भक्ति करन को चाहत हो, निंदा से नहिं डरिहो जी ॥  
पाँच छड़ी कोई सिर पर मारे, सहत बने तो सहियो जी ॥  
मूरख आगे ज्ञान न कथियो, मौनी होके रहियो जी ॥

परतिरिया से नेह न करिहो, देखत दूरि से डरियो जी॥  
यह संसार विषय के काँटा, निरखि परखि पगु धरिहो जी॥  
कहैं कबीर यह निर्गुण बाणी, महरम होके बुझिहो जी॥

साहिब कह रहे हैं कि यदि तुम भक्ति करना चाहते हो तो निंदा से नहीं घबराना। यदि कोई पाँच सोटियाँ भी तुम्हारे सिर पर मारे तो सह सको तो सह लेना। कोई मूर्ख मिले तो मौन ही रहना। उसे ज्ञान देने का प्रयास न करना। पराई स्त्री से प्रेम नहीं करना। उसे दूर से ही देखकर डरना। इस संसार में विषयों की बेल लगी है। तुम देख सुनकर ही पाँव आगे बढ़ाना। साहिब कह रहे हैं कि यह बड़ी बारीक बात है, तुम मरहमी होकर समझ लेना।

## नाम विश्राम तहाँ काम कहाँ पाइये

काम की कोथली मूल में जलि गई, नाम की कोथली रहे प्यारे।  
नाम विश्राम तहाँ काम कहाँ पाइये, काम विश्राम तहाँ नाम न्यारे॥  
दिवस अरु रैन कहूँ एक ठौर ना रहै, ज्ञान अज्ञान नहिं एक होई।  
कहैं कबीर यह भेद जाने बिना, जीव विश्राम क्यों लहै कोई॥

साहिब कह रहे हैं कि नाम की थैली के रहते काम की कोथली जल गयी। जहाँ नाम है, वहाँ काम नहीं मिल सकता है और जहाँ काम है, वहाँ नाम नहीं हो सकता है। रात और दिन एक साथ नहीं रह सकते हैं, ज्ञान और अज्ञान एक साथ नहीं हो सकते हैं। नाम का यह भेद समझे बिना जीव को शांति नहीं मिल सकती है।

## सुखी अवधूत अरु दुखी सब जगत है

सुखी अवधूत अरु दुखी सब जगत है, रैन दिन पचत नहिं भूख भागी।  
सदा निर्द्वंद्व कोई द्वंद्व व्यापै नहीं, गुरुदेव के सब्द ते सुरति लागी॥  
तत्व सो रत अरु गत सब गुन किया, प्रगटी अग्नि सब भरम भागी।  
कहैं कबीर संसार सब जड़त हैं, नहिं ज्ञान की ओढ़ना सदा नांगी॥

साहिब कह रहे हैं कि संसारी माया के पीछे रात-दिन लगे रहने वाले संसार के सब लोग दुखी हैं। केवल एक साधु सुखी है, जिसकी सुरति गुरु शब्द से लगी है। वो निर्द्वन्द्व है।

## कपट को दूर कर साँच करनी करो

कपट को दूर कर साँच करनी करो, कपट करतूत नहीं पार पावै।  
कपट करतूत सो काज कोई न सारै, साँच करतूत सो काज थावै॥  
साँच करतूत तहाँ आप हाजिर, कपट करतूत तहाँ आप नाहीं।  
कहैं कबीर संत जन कहत हैं, वेद कितेब यह देख माहीं॥

साहिब कह रहे हैं कि कपट को दूर करके सत्य आचरण करो।  
कपट करनी से कोई पार नहीं हो सकता है। जहाँ सत्य आचरण होता है,  
वहीं आत्म रूप के पास होता है। जहाँ कपट का व्यवहार होता है, वहाँ  
आत्म रूप से दूर होता है। चाहे वेद, कितेब में देख लो, चाहे संतों से पूछ  
लो, सबका यही मत है।

## काम की अग्नि में जीव यों जलत है

काम की अग्नि में जीव यों जलत है, ज्ञान विचार कछु नाहिं सूझै।  
खोया परतीत अरु बोल बाजी दर्ई, सब्द मानै नहीं काल बूझै॥  
झूठ को थापि के साँच को ना थापै, झूठ की पक्ष फिर गहै गाढ़ी।  
कहैं कबीर अन्य चेते नहीं, काल की चोट यों खाय ठाढ़ी॥

साहिब कह रहे हैं कि यह जीव काम की अग्नि में ऐसे जल रहा  
है कि उसे कुछ भी विचार नहीं कर पा रहा है। उसका सारा ज्ञान खो गया  
है। नाम को त्यागकर, काल की भक्ति में लगकर उसने धोखे का बीज  
बो दिया है। उसने माया को कसकर पकड़ लिया है, जिसके कारण से  
काल की चोट खा रहा है।

## कहन को सूर और रहन को कूर है

कहन को सूर और रहन को कूर है, रहन बिनु कहन किस काम आवै।  
रहन रजमा बिना कहन झूठी सबै, पाँच फूटा फिर काल खावै॥

पाँच को बस करै नाम हृदय धरै, कहैं कबीर कोई संत सूर।  
कहन अरु रहन तब दोऊ एकै भई, प्रकट तहँ मान सोई ज्ञान पूरा॥

साहिब कह रहे हैं कि यदि कहने में कोई शूरवीर है पर उस पर अमल नहीं कर पाता है तो उसका कथन किसी काम का नहीं है। बिना आचरण के कथनी झूठी है। वो पाँचों इंद्रियों के बस में पड़ा हुआ काल के मुख में ही जाता है। दूसरी ओर जो पाँचों इंद्रियों को बस में करके सार नाम को हृदय में धारण करता है, वो ही पूरा संत है। उसकी कथनी और करनी एक सी होती है। उसका कहा हुआ ज्ञान ही सत्य ज्ञान समझो।

### ऐसा कोई देखा मतवाला

ऐसा            कोई            देखा            मतवाला॥  
छाक चढ़ी बिसरी सुधा, पिये प्रेम पियाला।  
पिवते ही तन बीसरी, सो जग से न्यारा॥  
कान सुना देखा नहीं, बातें मतवाला।  
सो छाका सत्य नाम से, गुरु का प्याला॥  
गोली लागी नाम की, कसनी बहु दीन्हा।  
जीवत मृतक हूँ रहो, जिन गुरु गम चीन्हा॥  
नाम रसायन जो पिये, जग बहुरि न आवै।  
कहैं कबीर सोई छका, जिहि और न भावै॥

साहिब कह रहे हैं कि ऐसा कोई नाम का मतवाला देखा है जो नाम के नशे में डूबकर संसार के मायावी सुखों को भूल गया हो। इस नाम रस को पीते ही शरीर की सुधि भूल जाती है और वो संसार से न्यारा हो जाता है। जो इस नाम रूपी रसायन को पी लेता है, वो संसार सागर में दोबारा नहीं आता और न ही उसे संसार में कुछ और अच्छा ही लगता है।

### जो कछु खोजो सो तुम्हीं महिं

अवधू            जानि            राखि            मन            ठाहरि।  
जो कछु खोजो सो तुम्हीं महिं, काहे को भरमें बाहरि॥

घट ही भीतरि बनखंड गिरिवर, घटि ही सात समुंदा।  
 घट ही भीतरि तारा मंडल, घट भीतरि रवि चंदा॥  
 ममता मेटि साँच करि मुद्रा, आसन सील दिढ़ कीजे।  
 अनहद सबद कींगरी बाजै, ता जोगी चित दीजै॥  
 सत करि खप्पर खिमा करि झोरी, ज्ञान विभूति चढ़ाई।  
 उलटा पवन जटा धरि जोगी, सींगी सुन्नि बजाई॥  
 नाटक चेटक भैरों कलुवा, इनमें जोग न होई।  
 कहैं कबीर रमता सौं मरना, देही बादि न खोई॥

साहिब कह रहे हैं कि जिसकी खोज में तुम बाहर भटक रहे हो, वो तुम्हारे अन्दर में ही है। इसी में सात समुद्र हैं, इसी में पहाड़ आदि हैं, इसी में तारे, सूर्य, चाँद आदि हैं। योगी लोग ध्यान मुद्रा करके अनहद शब्द सुनते हैं। पर वास्तव में यह सब नाटक है। इन चीज़ों से परमात्मा से मिलन नहीं होता। सच्चा योग तो आत्म तत्व में समाकर जीते-जी मरना है। इसलिए इस मानव तन को बेकार न खोकर अपने में आप की खोज करो।

## मेहर बिनु मेहरबां किस तरह पाइये

मेहर बिनु मेहरबां किस तरह पाइये॥  
 मेहर की कफनी कुलह भी मेहर की,  
 मेहर का मुतंगा कमर में लगाइये॥  
 मेहर का आसा तमासा भी मेहर का,  
 मेहर का आब दिल को पिलाइये॥  
 अंदर भी मेहर है बाहर भी मेहर है,  
 मेहर के महल में मेहरबां मनाइये॥  
 कहर की लहर में कोटि जन बहि गये,  
 कबीर मेहर बिनु मेहरबां किस तरह पाइये॥



साहिब कह रहे हैं कि यदि उस दिलबर को, उस दयालु प्रभु को पाना चाहते हो तो सबसे पहले दिल में दया का भाव उत्पन्न करो।

## छाड़ि परपंच निज राम राता

नाम निरपच्छ निरपच्छ ही साधु है, होय निरपच्छ नर पच्छ माहीं।  
साँच का पच्छ अरु झूठ का त्याग करि, साँच के पच्छ को दाग नाहीं॥  
साँच सहजे तैरे झूठ में वह मरै, झूठ परपंच सो जगत माता।  
कहैं कबीर कोई संतजन जौहरी, छाड़ि परपंच निज राम राता॥

साहिब कह रहे हैं कि साधु निष्पक्ष होकर सत्य का पक्ष लेता है। सारा संसार झूठी माया में रमा हुआ है, पर जो पारखी संत होते हैं, वो संसार का माया का त्यागकर आत्मराम में लीन रहते हैं।

## कहन को साहु अरु वृत्ति है चोर की

कहन को साहु अरु वृत्ति है चोर की, साहु जी कहत नहिं सरम आवै।  
झूठ ही कहत अरु झूठ ही रहत है, रैन दिन झूठ में जन्म जावै॥  
मान के आसरे फूलि के बैठिया, इंद्रियां स्वाद मन माहिं भावै।  
कहैं कबीर ते साहु के बोलिये, जम के घेसले खूब खावै॥

साहिब कह रहे हैं कि कुछ कहने को तो अपने को साहुकार (ज्ञानी) कहते हैं, पर उनकी वृत्ति, उनकी करनी चोरों (अज्ञानी) वाली होती है। लोग जब उन्हें शाह जी कहते हैं तो झूठी शान सुनकर उन्हें शर्म भी नहीं आती है। वो रात दिन झूठी शान और झूठे व्यवहार में रहकर अपना जन्म गँवा देते हैं। वो मान-बढ़ाई की आशा में फूलकर बैठते हैं। उन्हें इंद्रियों के स्वाद से ही प्रीत होती है। साहिब कह रहे हैं कि ऐसे लोगों को शाह क्या कहना, वो तो यमराज के थपेड़े खायेंगे।

## सील संतोष में सबद जा मुख बसै

सील संतोष में सबद जा मुख बसै, संत जन जौहरी साँच मानी।  
बदन बिकसित रहै ख्याल आनन्द में, अधर में मधुर मुसकात बानी॥

सांच डोले नहीं, झूठ बोले नहीं, सुरत में सुमति सोइ श्रेष्ठ ज्ञानी ।  
 कहत हों ज्ञान पुकारि कै सभन से, देत उपदेस दिल दर्द जानी ॥  
 ज्ञान को पूर है रहनि को सूर है, दया की भक्ति दिल माहि ठानी ।  
 ओर तें छोर ले एकरस रहत हैं, ऐसे जन भक्त में बिरले प्राणी ॥  
 ठग बटमार संसार में भरि रहे, हंस की चाल कहँ काग जानी ।  
 चपल औ चतुर हैं बने बहु चीकने, बात में दुरुस्त पै कपट ठानी ॥  
 कहा तिन्ह से कहौ दया जिन्ह के नहीं, घात बहुरे करैं बकुल ध्यानी ।  
 दुर्मति जीव की दुबुद्धि छूटे नहीं, जन्म जन्मांतर पड़े नरक खानी ॥  
 काग कुबुद्धि सुबुद्धि पावै कहाँ, कठिन कठोर बिकराल बानी ।  
 अगिन के पुंज हैं सितलता तन नहीं, विष औ अमृत दोउ एक सानी ॥  
 कहा साखी कहे सुमति जागी नहीं, साँच की चाल बिन धूर धानी ।  
 सत सुकिरत की चाल सांची सही, काग बक अधम की कौन खानी ॥  
 कहँ कबीर कोई सुघर जन जौहरी, सदा सावधान छीर नीर छानी ।  
 आप को आप लख आपु तहकीक कर, आदि औ अंत रसएक जानी ॥

साहिब कह रहे हैं कि जिनके भीतर शील और संतोष बसता है, जो हर समय आत्म आनन्द में लीन रहते हैं, जिनके मुख से हर समय मधुर वाणी निकलती है, जो कभी असत्य नहीं बोलते, सत्य से विचलित नहीं होते, वो ही श्रेष्ठ ज्ञानी पुरुष हैं। वो दूसरे के दुख-दर्द समझकर उन्हें ज्ञान का उपदेश देते हैं। जो ज्ञान से भरपूर हैं और जिनकी रहनी भी ज्ञानियों वाली है, जिनके दिल में भक्ति भाव भरा रहता है, जो हर समय एक ही धुन में रहते हैं, ऐसे ज्ञानी जन संसार में बिरले ही होते हैं।

ऐसे तो संसार में ठग ही अधिक हैं। हंस की चाल चलने वाले सच्चे संत को काग वृत्ति वाला यह संसार पहचान नहीं पाता है। बगुले की तरह दिखावे वाले ही संसार में घात लगाए घूमते हैं। दुनिया के जीवों की दुर्बुद्धि नहीं छूटती, इसलिए उनके जाल में फँसकर जन्म जन्मांतर नरक में पड़ते हैं।

साहिब कह रहे हैं कि कोई बिरले जीव होते हैं, जो अपने आत्मरूप को पहचान उस एक परम पुरुष को पहचान लेते हैं और उसी में मग्न रहते हैं।

## अलख के पलक में खलक सब जायेगा

अलख के पलक में खलक सब जायेगा, परख दीदार दिल यार तेरा।  
सुरति में निरत करि भाव गाया करो, यही बंदे बंदगी फलै तेरा॥  
चोट कापै करो उलटि आपै डरो, जहाँ देखो तहां प्रान मेरा।  
अकिल से खोजि ले गाफिली छोड़ि दे, चेति ले समुझि ले यही बेरा॥  
सुन्न का बुदबुदा सुन्न उतपत भया, सुन्निहिं माहिं फिर गुप्त होई।  
जाप अजपा जपो अलख आपै लखौ, बाहरे भीतरे एक होई॥  
बैराट के खेल में सकल ही रमि रहा, भर्म की भीति मति नांघ कोई।  
अडोल अबोल गुरु शब्द लागा रहै, कहै कबीर फकीर सोई॥

साहिब कह रहे हैं कि यह संसार पलक झपकते ही काल के गाल में समा जाएगा, इसलिए हे मनुष्य, तू अपने आत्म रूप को पहचान। सुरति निरति एक करके सद्गुरु का ध्यान किया कर। यही उसकी बंदगी है और यही काम आएगी। किसी को दुख मत दो। किसी को कष्ट देने से डरना। सबमें एक ही प्राण हैं, सबमें एक ही आत्मा है। रज वीर्य से उत्पन्न यह शरीर पहले शून्य था। इसका कोई वजूद नहीं था। आगे भी यह शून्य में समा जाएगा और कोई वजूद नहीं रह जाएगा।

अगर तुम अजपा जाप कर रहे हो, अलख ब्रह्म को देखने का प्रयास कर रहे हो तो भ्रम में हो। बाहर और भीतर सब एक ही है। इस विराट में सब जगह वो ही समाया हुआ है। उसने ही भ्रम की ऐसी विशाल दीवार लगाई है कि जिसे पार करके कोई नहीं जा सकता है। इसलिए साहिब कह रहे हैं कि जो गुरु के शब्द (नाम) में समाया हुआ है, वो ही सच्चा फकीर है।

## बलमा छोड़ दे पराड़ घर आसा

बलमा छोड़ दे पराड़ घर आसा ॥  
 आम लगाये टिकोरा के कारण, बहे पुरवैया झपटि गये लासा ॥  
 गुलाब लगाये मैं फूल के कारण, बह गये पच्छिया छिटिक गये काँटा ॥  
 पुत्र जन्माये मैं स्वार्थ के कारण, ऐलीं पतोहिया छोड़ाइ गै नाता ॥  
 कहहिं कबीर सुनो भाई साधो, गुरु के चरनियां में मेरो मन राता ॥

हे जीव ! तू दूसरे की आशा छोड़ दे। हमने आम के पेड़ लगाए थे कि उसमें फल लगेंगे और हम खायेंगे, पर पूर्वी हवा ऐसी चली कि सारी मंजरियों में लासा हो गया और सब नष्ट हो गया। हमने गुलाब के फूल लगाए थे कि उनकी महक से घर का आंगन महक उठेगा। पर पश्चिम की ऐसी हवा चली कि सारी पंखुड़ियां टूट कर गिर गयीं और कांटे आंगन में बिखर गये। हमने स्वार्थ के कारण पुत्र पैदा किये कि हमें सुख देंगे, सेवा करेंगे, पर जब उनकी पत्नियां आयीं तो हमसे नाता ही तुड़वा दिया। इसलिए गुरु के चरणों में मन लगा दिया है, क्योंकि वहीं सच्ची शांति है, वहीं सच्चा सुख है।

## आरति कीजै आतम पूजा

आरति कीजै आतम पूजा। प्राण पुरुष सो अवर न दूजा ॥  
 ज्ञान प्रकास दीप उजियारा। घट घट देखो प्रान पियारा ॥  
 भाव भक्ति कर और न भेवा। दया स्वरूपी करिले सेवा ॥  
 सत संगति मिलि सब्द बिराजे। धोखा द्वंद्व भर्म सब भाजे ॥  
 काया नगर थिर होय भाई। आनन्द रूप सकल सुखदाई ॥  
 शून्य ध्यान सबके मन माना। तुम बैठो आतम अस्थाना ॥  
 सब्द सुरति ले हृदय बसाओ। कपट क्रोध को दूर बहाओ ॥  
 कहै कबीर जिन रहनि सम्हारी। सदा आनन्द रहते नर नारी ॥

साहिब कह रहे हैं कि आत्म पूजा रूपी आरति करो। प्राणों में

निवास करने वाले पुरुष के समान कोई अन्य देव नहीं है। घट-घट में उसे देख लो। दिल में दया, भक्ति भाव और सेवा भाव को उत्पन्न करो। संतों का संग करो, जिससे सारे धोखे और भ्रम दूर हो जाएँ। इस काया में रहकर अपने मन को एकाग्र करो, तभी सच्चा आनन्द मिलेगा। सब शून्य में ध्यान लगा रहे हैं, पर तुम आत्मा में स्थिर हो जाओ। कपट को हृदय से दूर करके नाम में सुरति को लगाओ। साहिब कह रहे हैं कि जो अपनी रहनी को संभालकर इस तरह कर लेते हैं, वो नर नारी सदा आनन्द में रहते हैं।

## कहैं कबीर यह मन का खेल है

देख बे देख अलेख के खेल को, बना सरबज्ञ नाना अपारा।  
आपही भोग बिलास रस कामिनी, आपही नन्द का कान्ह कुमारा॥  
आपही भक्त प्रह्लाद हिरनाकुस, अपना उदर लै आप फारा।  
कहैं कबीर यह मन का खेल है, चित्र के बान तें कौन मारा॥

साहिब कह रहे हैं कि यह सब मन का खेल है।

## तातैं कहिए लोकाचार

तातैं कहिए लोकाचार, वेद कितेब कथैं व्यौहार॥  
जारि बारि करि आवे देहा, मूवां पीछे प्रीति सनेहा॥  
जीवत पित्रहि मारहि डंडा, मूवां पित्र ले घाले गंगा॥  
जीवत पित्र को अन्न न खिलावै, मूवा पीछे पिंड भरावै॥  
जीवत पित्र कूँ बोले अपराध, मूवा पीछे देहि सराध॥  
कहैं कबीर मोहि अचरज आवे, कउवा खाइ पित्र क्यूं पावे॥

साहिब कह रहे हैं कि कुछ ऐसी व्यवहार की बातें हैं, जिन्हें लोकाचार कहा जाता है। जब कोई मर जाता है तो श्मशान में ले जाकर उसे जलाते हैं। मरने के बाद उसे याद करके बड़ा प्रेम दिखाते हैं। जीवित पिता को तो डंडे मारते हैं, पर जब वो मर जाते हैं तो उनकी अस्थियों को ले जाकर गंगा जी में डालते हैं ताकि भूत प्रेम उन्हें अपने साथ न ले

जाएँ। जब तक पित्र जीवित होते हैं, उन्हें भोजन भी ठीक से नहीं देते, पर जब वे मर जाते हैं तो पिंड भरते हैं, उनके नाम का श्राद्ध करते हैं। साहिब कह रहे हैं कि मुझे आश्चर्य हो रहा है कि वो भोजन तो वो कौवों को खिला देते हैं, फिर पिता को कैसे मिलेगा!

## जीभ का फूहरा पंथ का चूहरा

जीभ का फूहरा पंथ का चूहरा, तेज तमा धरे आप खोवै।  
काम औ क्रोध दुड़ पाप का मूल है, कुबुद्धि का बीज क्या जानि बोवै॥  
शील संतोष ले सब्द उच्चारहु, साध के दरस क्यों जान गोवै।  
साध के दरस में परस पारस मिलै, ज्ञान की दृष्टि में सरस होवै॥  
साध लच्छन गुनवंत गंभीर है, बचन लौलीन भाषा सुनावै।  
पातरी फूहरी अधम का काम है, रांड का रोवना भांड गावै॥  
कहैं कबीर तू पैठ दरियाव में, लाल अमोल तब नजर आवै॥

साहिब कह रहे हैं कि जो मनुष्य कटु और असत्य वचन बोलता है, कुमार्ग पर चलता है, क्रोध में रहता है, वो अपने को खो देता है। काम और क्रोध दोनों पाप के मूल हैं। हे मनुष्य! तू इनमें खोकर कुबुद्धि का बीज क्यों बो रहा है! तू शील और संतोष को हृदय में धारण करके बोल। तू साधु के दर्शन से दूर क्यों रहता है! साधु का दर्शन पारस की तरह है, जिसके संपर्क से तेरा लोह रूपी अज्ञान नष्ट हो जाएगा और तू ज्ञानी हो जाएगा। साधु के लक्षण ये हैं कि वो गंभीर होते हैं, सद्गुणों से सम्पन्न होते हैं। वो आत्मज्ञान की बात बताते हैं। दूसरी ओर जो आत्मज्ञान की बात छोड़कर रोते-गाते हैं, दूसरे की निंदा करते हैं, असभ्य वचन कहते हैं, वो नीच होते हैं। तू आत्म स्वरूप में गोता लगा ले। तभी तुझे अनमोल रत्न मिलेंगे।

## निर्धन को धन नाम

निर्धन को धन नाम, हमारे निर्धन को धन नाम॥  
चोर न लेवे घटहु न जावे, कष्ट में आवे काम॥

सोवत जागत उठत बैठत, जपो निरंतर नाम॥  
 दिन दिन होत सवाई दौलत, खुटत नहीं छदाम॥  
 अंतकाल में छोड़ चलत सब, पास न एक दाम॥  
 कहत कबीर इ धन के आगे, पारस को क्या काम॥

साहिब कह रहे हैं कि निर्धन का धन नाम है। इस धन को कोई चोर चुरा नहीं सकता है। यह धन कभी कम भी नहीं होता है। यह धन कष्ट समय में काम आता है। इसलिए सोते, जागते, उठते, बैठते, हर समय इस नाम का सुमिरन करते रहो। यह धन दिन-दिन बढ़ता ही जाता है, थोड़ा-सा भी कम नहीं होता है। संसार की दौलत तो एक दिन छोड़नी पड़ जाती है और पास में कुछ भी नहीं रह जाता है। लेकिन जिसके पास यह धन है, उसे पारस की भी कोई आवश्यकता नहीं है।

### सोई बैरागी है

अनप्राप्त वस्तु को कहा तजै, प्राप्त तजै सो त्यागी है।  
 असील तुरंग को कहा फेरे, अफतर फेरे सो बागी है॥  
 जग भव का गावना क्या गावै, अनुभव गावै सो रागी है।  
 बन गेह की वासना नास करै, कबीर सोई बैरागी है॥

साहिब कह रहे हैं कि जो वस्तु पास में है ही नहीं, उसका त्याग क्या करना! जो वस्तु पास में है, उसे त्यागना ही सच्चा त्याग है। वो ही त्यागी है। जो बिगड़े हुए घोड़े को वश में कर उसकी घुड़सवारी करे, वो ही सही घुड़सवार है। दूसरों के गीतों को गुनगुनाना कोई बड़ी बात नहीं है। जो अपने अनुभव का गाए, वो ही सच्चा रागी है। साहिब कह रहे हैं कि जो वन और घर दोनों का मोह छोड़ दे, वो ही सच्चा बैरागी है।

### टुक जिंदगी बंदगी कर लेना

टुक जिंदगी बंदगी कर लेना, क्या माया मद मस्ताना॥  
 रथ घोड़े सुखपाल पालकी, हाथी और बाहन नाना।

तेरा ठाठ काठ की टाटी, यह चढ़ चलना समसाना ॥  
 रूम पाट पाटंबर अम्बर, जरी बफत का बाना ॥  
 तेरे काज गजी गज चारिक, भरा रहे तोसखाना ॥  
 खर्चें की तदबीर करो तुम, मंजिल लंबी जाना ॥  
 पहिचंते का गाँव न गम में, चौकी न हाट दुकाना ॥  
 जीते जी ले जीत जन्म को, यही गोय मैदाना ॥  
 कहैं कबीर सुनो भाई साधो, नहीं तरन जतन आना ॥

साहिब कह रहे हैं कि हे मनुष्य, तू क्या माया के घमंड में मस्त होकर घूम रहा है। थोड़े दिन की ज़िंदगी है, कुछ नाम भजन कर ले। ये हाथी-घोड़े, नाना वाहन आदि में मत भूल। तुझे एक दिन काठ की अर्थी पर ले जाकर श्मशान में ले जायेंगे। रेशमी वस्त्र आदि पड़े रहेंगे, पर अंत में तो चार गज का साधारण कपड़ा ही लगेगा। तुम उस खर्चें के लिए विचार करो जो आगे के लंबे रास्ते में लगेगा। वहाँ रास्ते में न कोई गाँव पड़ेगा, न बाज़ार होगा, न दुकान। शरीर में रहते हुए, जीते-जी संसार सागर को जीत लो।

## रे सुख अब मोहि विष भरि लागा

रे सुख अब मोहि विष भर लागा ॥  
 इन सुख डहके मोटे मोटे, केतिक छत्रपति राजा ॥  
 उपजै बिनसै जाइ बिलाई, संपति काहु कै संगि न जाई ॥  
 धन जौबन गरब्यौ संसारा, यहु तन जरि बरि हैं है छारा ॥  
 चरन कँवल मन राखि ले धीरा, नाम रमत सुख कहै कबीरा ॥

हे संसारी सुख, तू मुझे अब विष के समान लगता है। इस झूठे सुख के धोखे में बड़े-बड़े राजा-महाराजा भी ठग लिए गये हैं। ये सुख के पदार्थ उत्पन्न होते और नष्ट हो जाते हैं। यह धन दौलत किसी के साथ नहीं जाती। इस धन और जवानी का घमंड मत करो। एक दिन यह जलकर धूल में मिल जाना है। हे जीव, तू सद्गुरु के चरणों में अपने मन



को लगा। नाम के सुमिरन में ही सच्चा सुख है।

## जात रे दिन हीं दिन देहा

जात रे दिन हीं दिन देहा, करि ले बौरी नाम सनेहा॥  
बालापन गयो जोबन जासी, जरा मरन भौ संकट आसी॥  
पलटे केस नैन जल छाया, मूरख चेति बुढ़ापा आया॥  
नाम कहत लज्जा क्यों कीजै, पल पल आयु घटे तन छीजै॥  
लज्जा कहे हूँ जम की दासी, एकै हाथ मुदिगर दूजै पासी॥  
कहैं कबीर तिनहूँ सब हारा, सार नाम जिन मनहु बिसारा॥

साहिब कह रहे हैं कि एक-एक दिन करके यह शरीर समाप्ति की ओर जा रहा है। इसलिए संभल जा और नाम से प्रीत कर। बचपन तो तेरा बीत गया, अब जवानी भी जा रही है। अब तो बुढ़ापा आने वाला है और फिर तू इस संसार से विदा हो जाएगा। तेरे बाल काले से सफेद हो गये हैं और आँखों में कष्टों के कारण आँसू भर आए हैं। हे मूर्ख! अब तो जाग, बुढ़ापा आ गया। अब नाम का सुमिरन करते हुए तुझे लज्जा क्यों आ रही है! तेरी आयु पल पल क्षीण होती जा रही है। साहिब कह रहे हैं कि जिन्होंने सार नाम को हृदय से बिसार दिया है, वो सब कुछ हार गये हैं।

## देह तो देख मिल जायगी खेह में

देह तो देख मिल जायगी खेह में, देह से काज कुछ कीजिये रे।  
नाम का भजन औ गुरु की बंदगी, देह धरि लाभ यह लीजिये रे॥  
चालती कौड़ियां काज भल कीजिए, कौड़ियां साथ कुछ नाहिं जाई।  
प्राण के छूटते पलक नहिं यार की, कहैं कबीर सुन चेत लाई॥

साहिब कह रहे हैं कि यह शरीर एक दिन मिट्टी में मिल जाएगा, इसलिए हो सके तो इससे कुछ आत्म कल्याण का कार्य कर लो। सद्गुरु की बंदगी और नाम का भजन कर लो, यही देह धारण करने का लाभ ले लो। यदि पास में धन है तो कुछ परमार्थ में लगा लो अन्यथा साथ

में कौड़ी भी नहीं जाएगी। साहिब कह रहे हैं कि तू ध्यान से सुनकर समझ ले कि प्राणों के छूटते ही सारे प्यारे छूट जायेंगे।

## कहा नर गरबस थोरी बात

कहा नर गरबस थोरी बात॥  
मन दस नाज टका चार गाँठी, ऐंड़ो टेढ़ो जात॥  
बहुत प्रताप गाँव से पाये, दुइये टका बरात॥  
दिवस चारि के करी साहिबी, जैसे बन हर पात॥  
ना कोऊ लै आयो यह धन, ना कोऊ लै जात॥  
रावन हूँ से अधिक छत्रपति, छिन में गये बिलात॥  
मैं उन संत सदा थिर पूजों, जो सतनाम जपात॥  
जिन पर कृपा करत हैं सतगुरु, ते सतसंग मिलात॥  
मात पिता बनिता सुत संपति, अंत न चलत संगात॥  
कहत कबीर संग कर सतगुरु, जनम अकारथ जात॥

साहिब कह रहे हैं कि थोड़े दिन की जिंदगानी में क्या घमंड करना है! दस मन अनाज घर में है और चार पैसे गाँठ में हैं पर तू तो इस घमंड में टेढ़े-टेढ़े चलता है। गाँव में तुम्हारी बड़ी प्रतिष्ठा है, लेकिन इसे तू दो टके की पूंजी ही समझ। इसकी कोई कीमत नहीं है। तेरी यह धन-दौलत और मान-बढ़ाई सब वन के हरे पत्तों की तरह थोड़े दिन की है। न कोई इस संसार में अपने साथ धन लाया था, न कोई कुछ ले जाएगा। रावण जैसे बड़े-बड़े राजे पल में काल के मुँह में समा गये। इसलिए सार नाम का सुमिरन करवाने वाले संतों को पूजो। जिनपर सद्गुरु कृपा करते हैं, उन्हें ही सत्संग की प्राप्ति होती है। माता, पिता, सुत, स्त्री आदि अंत में कोई भी साथ नहीं चलने वाला है। साहिब कह रहे हैं कि सद्गुरु का संग कर अन्यथा जन्म बेकार में ही चला जाएगा।

## काहे कूँ माया दुख करि जोरी

काहे कूँ माया दुख करि जोरी। हाथि चूँन गज पाँच पछेवरी॥  
ना को बंधु न भाई साथी, बाँधे रहे तुरंगम हाथी॥  
मैंड़ी महल बावड़ी छाजा। छाड़ि गये सब भूपति राजा॥  
कहैं कबीर नाम लौ लाई। धरी रही माया काहु खाई॥

साहिब कह रहे हैं कि हे मनुष्य! तूने बड़ी मेहनत करके, कष्ट सहकर माया इकट्ठी की, पर अंत समय में तुझे पाँच गज की चादर ही ओढ़ाई जाएगी। तब माता, पिता, भाई, बंधु कोई भी तेरे काम नहीं आएगा। ये महल, ये हाथी, घोड़े सब यहीं धरा का धरा रह जाएगा और दूसरे लोग इसका भोग करेंगे। इसलिए इसे अपनी न जानकर तू नाम में लौ लगा।

## जग में सोई बैराग कहावे

जग में सोई बैराग कहावे॥  
आसन मारि गगन में बैठे, दुर्मति दूर बहावै॥  
भूख प्यास औ निद्रा साथै, जियते तनहिं जरावै॥  
भौसागर के भरम मिटावै, चौरासी जीत आवै॥  
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, भाव भक्ति मन लावै॥

साहिब कह रहे हैं कि संसार में सच्चा वैरागी वही है, जो कुबुद्धि को दूर करे, भूख, प्यास, निद्रा पर काबू करे और शून्य में आसन मारकर बैठे। संसार की माया का भ्रम छोड़कर चौरासी के चक्र को जीत ले।

## चार दिन अपनी नौबति चले बजाई

चार दिन अपनी नौबति चले बजाई।  
उतानैं खटिया गड़िले मटिया, संगि न कछु लै जाई॥  
देहरी बैठी मेहरी रोवै, द्वारै लगि सगी माई।  
मरघट लौं सब लोग कुटुंब मिलि, हंस अकेला जाई॥

वहि सुत वहि बित वहि पुर पाटन, बहुरि न देखै आई।  
कहत कबीर भजन बिन बंदे, जनम अकारथ जाई॥

साहिब कह रहे हैं कि हे मनुष्य! तू चार दिन कितनी ही उछल-कूद मचा ले, कितनी ही माया जोड़ ले, पर एक दिन तुझे खटिया से नीचे उतार दिया जाएगा और तू कुछ भी साथ नहीं ले जाएगा। तुम्हारी पत्नी देहरी में बैठकर रोवेगी, आगे साथ नहीं जाएगी। तेरी माता भी द्वार तक ही तेरे साथ जाएगी। सगे-संबंधि आदि सभी तुम्हें लेकर श्मशान तक तुम्हारे साथ जायेंगे, पर आगे तुम्हें अकेले ही जाना होगा। फिर लौटकर तुम अपने धन, परिवार, पुत्र आदि को नहीं देख सकोगे। यदि तुमने मानव तन पाकर भक्ति नहीं की तो यह जन्म बेकार चला जाएगा।

## जागो रे नर सोवहु कहा

जागो रे नर सोवहु कहा, जम बटपारे रूँधै पहा॥  
जागि चेति कछु करौ उपाई, मोटा बैरी है जमराई॥  
सेत काग आये बन माहीं, अजहूँ रे नर चेते नाहीं॥  
कहैं कबीर तबे नर जागे, जम का डंड मूड़ में लागे॥

साहिब चेताकर कह रहे हैं कि हे मनुष्य, तू अब जाग जा। मन तेरे रास्ते में पहाड़ की तरह खड़ा है। यह मन रूपी यमराज ही तेरा वैरी है। तू इससे बचने का कुछ उपाय कर। तेरे बाल भी काले से सफेद हो गये, अब तो जाग जा। नहीं तो जब यम का डंडा तेरे सिर पर पड़ेगा, तब समझ आयेगी क्या!

## आप बिचारैं ज्ञानी होई

कथता बकता सुरता सोई। आप बिचारैं ज्ञानी होई॥  
जैसे अग्नि पवन का मेला। चंचल चपल बुधि का खेला॥  
नव दरवाजे दसूँ दुवार। बूझि रे ज्ञानी ज्ञान विचार॥  
देही माटी बोलै पवना। बूझि रे ज्ञानी मूवा सो कौना॥

मुई सुरति बाद अहंकार । वह न मुवा जो बोलनहार ॥  
 जिस कारनि तटि तीरथि जाही । रतन पदारथ घटही माहीं ॥  
 पढ़ि पढ़ि पंडित वेद बखानैं । भीतरि हूति बसत न जावैं ॥  
 हूं न मुवा मेरी मुई बलाई । सो न मुवा जो रहा समाई ॥  
 कहैं कबीर गुरु ब्रह्म दिखाया । मरता जाता नजरि न आया ॥

साहिब कह रहे हैं कि जो आत्मतत्त्व पर विचार करता है, वो ही ज्ञानी है। जिस तरह हवा के संपर्क से अग्नि तेज हो जाती है, ऐसे ही चंचल मन के कारण से बुद्धि चपल है। दस द्वार के पिंजरे में चेतन आत्मा निवास करता है। हे मनुष्य! विचार कर कि मिट्टी का यह शरीर जीवित रहेगा या इसमें रहने वाला चेतन आत्मा! सारा अहंकार समाप्त हो जाता है, पर जो इसमें बोलने वाला है, वो नहीं मरता। जिस कारण से मनुष्य तीर्थ आदि स्थानों में जाता है, वो तो भीतर में ही रहता है। पर मनुष्य इस सत्य को समझ नहीं पाता है। जो अपने आप में समाए रहता है, वो नहीं मरता। सद्गुरु ने कृपा करके उसे दिखा दिया, जो दिखाई नहीं पड़ रहा था, जो न कभी मरता है, न कहीं आता जाता है।



यदि आपका गुरु गृहस्थ है तो उससे कभी भी अपनी आत्मा के कल्याण की उम्मीद नहीं रखना। वो नहीं कर पायेगा।

## पुस्तक सूची

1. परा रहस्या
2. मासिक पत्रिका सत्यकेतु
3. पावन प्रार्थनाएँ
4. सद्गुरु चालीसा
5. वार्षिक डायरी
6. सद्गुरु भक्ति
7. कहाँ से तू आया और कहाँ तुझे जाना रे?
8. सत्संग सुधारस
9. नाम अमृत सागर
10. अमृत वाणी
11. सद्गुरु नाम जहाज़ है
12. चल हंसा सतलोक
13. कोटि नाम संसार में तिनते मुक्ति न होय
14. मूल नाम गुप्त है, जाने बिरला कोय
15. गुरु सुमिरै सो पार
16. तीन लोक से न्यारा
17. सेहत के लिए ज़रूरी
18. सहजे सहज पाइये
19. रोगों से छुटकारा
20. सद्गुरु महिमा
21. भक्ति के चोर
22. अनुरागसागर वाणी
23. भक्ति सागर
24. हरि सेवा युग चार है, गुरु सेवा पल एक
25. सत्य नाम के सुमरते उबरे पतित अनेक
26. काग पलट हंसा कर दीना
27. कस्तूरी कुण्डल बसै मृग खोजे बन माहिं
28. गुरु पारस गुरु परस है
29. गुरु अमृत की खान
30. शीश दिये जो गुरु मिले तो भी सस्ता जान
31. मूल सुरति
32. भृंग मता होय जिहि पासा, सोई गुरु सत्य धर्मदासा
33. मैं कहता हूँ आँखिन देखी
34. गुरु संजीवन नाम बतावे
35. नाम बिना नर भटक मरे
36. रोगों की पहचान
37. यह संसार काल को देशा
38. न्यारी भक्ति
39. साहिब तेरी साहिबी सब घट रही समाय
41. आयुर्वेद का कमाल रोगों के निदान में
42. सुरति समानी नाम में
43. सबकी गठरी लाल है, कोई नहीं कंगाल

44. निन्दक जीवे युगन युग  
काम हमारा होय ।
45. निराले सदगुरु
46. कुँजड़ों की हाट में हीरे का  
क्या मोल
47. जीवड़ा तू तो अमर लोक का  
पड़ा काल बस आई हो
48. मुझे है काम 'सदगुरु से  
जगत रूठे तो रूठन दे'
49. जेहि खोजत कल्पो भये  
घटहि माहिं सो मूर
50. आत्म ज्ञान बिना नर भटके
51. बिन सतगुरु बाँचे नहीं  
कोटिन करे उपाय
52. अँधी सुरति नाम बिन जानो
53. सत्यनाम निज औषधि  
सदगुरु दर्ई बताय
54. सेहत संजीवनी
55. भक्ति दान गुरु दीजिए
56. मन पर जो सवार है ऐसा  
ऐसा विरला कोई
57. सत्यनाम है सार बूझौ सन्त  
विवेक करि
58. रोग निवारक
59. मुक्ति भेद मैं कहौं विचारी
60. "तेरा बैरी कोई नहीं  
तेरा बैरी मन"
61. सुरति का खेल सारा है
62. सार शब्द निहअक्षर सारा
63. करूँ जगत से न्यार
64. बिन सत्संग विवेक न होई
65. सत्य नाम को जनि कर दूजा  
देई बहा
66. सुरत कमल सदगुरु स्थाना
67. अब भया रे गुरु का बच्चा
68. मनहिं निरंजन सबै नचाए
69. सत्यपुरुष को जानसी  
तिसका सतगुरु नाम
70. आपा पौ आपहि बँध्यो
71. सत्य भक्ति का भेद न्यारा
72. जपो रे हंसा केवल नाम  
कबीर
73. सत्य भक्ति कोई बिरला जाना
74. जगत है रैन का सपना
75. 70 प्रलय मारग माहीं
76. सार नाम सत्यपुरुष कहाया
77. आवे न जावे मरे न जन्मे  
सोई सत्यपुरुष हमारा है
78. निराकार मन
79. सत्य सार
80. सुरति
81. भक्ति रहस्य
82. आत्म बोध
83. अमर लोक
84. सच्चा शिष्य
85. सदगुरु तत्व
86. कोड़े कोई जीव हमारा है
87. विहंगम मुद्रा
88. शक्ति बिना नहीं पंथ चलई
89. पुरुष शक्ति जब आए समाई  
तब नहीं रोके काल कसाई
90. सदगुरु मोहि दीनी अजब  
जड़ो
91. मेरा करता मेरा साईया
92. कबीर कलयुग आ गया,  
सन्त न पूजै कोय ।।
93. पूर्णिमा महात्म
94. चार पदार्थ इक मग माहीं
95. अध्यात्मिक प्रश्नोत्तर
96. चिन्ता तो सतनाम की और न  
चितवे दास
97. काल खड़ा सर ऊपरे
98. कहत कबीर सुनो भाई साधो

## ਤੁਰਕੀ

01. ਸਦਗੁਰੂ ਭਕਤਿ

## ਮਰਾਠੀ ਭਾਸ਼ਾ

01. ਯਹ ਸੰਸਾਰ ਕਾਲ ਕੋ ਦੇਸ਼ਾ  
02. ਅਨੁਰਾਗਸਾਗਰ ਵਾਧੀ  
03. ਨਾਮਾ ਸ਼ਿਵਾਯ ਮਾਨਵ ਜੀਵਨ  
ਵਧਰਥ  
04. ਕਰੁ ਜਗਤ ਸੇ ਨ੍ਧਾਰ

## ਤਮਿਲ ਭਾਸ਼ਾ

01. ਯਹ ਸੰਸਾਰ ਕਾਲ ਕੋ ਦੇਸ਼ਾ  
02. ਅਨੁਰਾਗਸਾਗਰ ਵਾਧੀ

## ਕਨਨਡ ਭਾਸ਼ਾ

01. ਮਨ ਪਰ ਓ ਅਸਵਾਰ ਹੈ ਏਸਾ  
ਵਿਰਲਾ ਕੋਰ੍ਧੰ  
02. ਕਰੁ ਜਗਤ ਸੇ ਨ੍ਧਾਰ  
03. ਅਨੁਰਾਗਸਾਗਰ ਵਾਧੀ

## ਪੰਜਾਬੀ ਭਾਸ਼ਾ

01. ਸਤਿਗੁਰੂ ਭਗਤੀ  
02. ਨਾਮ ਅਮ੍ਰਿਤ ਸਾਗਰ  
03. ਕਰੁ ਜਗਤ ਸੇ ਨਿਆਰ  
04. ਅਨੁਰਾਗ ਸਾਗਰ ਬਾਣੀ

## ਗੁਜਰਾਤੀ ਭਾਸ਼ਾ

01. ਅਨੁਰਾਗਸਾਗਰ ਵਾਧੀ

02. ਨਾਮ ਬਿਨਾ ਨਰ ਭਟਕ ਮੈਰੈ  
03. ਕਰੁ ਜਗਤ ਸੇ ਨ੍ਧਾਰ

## ਡੋਗਰੀ ਭਾਸ਼ਾ

01. ਨ੍ਧਾਰੀ ਭਕਤਿ  
02. ਸਹਜੇ ਸਹਜ ਪਾਝਯੇ

## ਅੰਗ੍ਰੇਜੀ ਭਾਸ਼ਾ

01. Meditation on a Real  
SATGURU Ensures  
Permanent Salvation  
02. Satguru Bhakti  
(Uniqueness)  
03. The Truth  
04. Without Soul  
Realisation Man Has  
to Wander  
05. The Whole Game is  
That Of  
Concentration  
06. Atma-An Exposition  
(Atam Bhodh)  
07. 70 Dissolution  
08. Anuragsagar vani  
09. Naam World of This  
World  
10. Secret of Salvation  
11. Crossing the Ocean  
of Life  
12. Stealer of Devotion